

RNI No. UPHIN/2011/40224

पंजीकृत सं.-ए स.ए स.पी./ए ल.डब्ल्यू./ए न.पी-341/2021-2023

हिन्दी मासिक पत्रिका  
अप्रैल - 2023  
मूल्य: 20/- रुपये मात्र

# प्रकृति मेल

## जीव द्वारा निर्माण के वैज्ञानिक यंत्र

नोट: यह पत्रिका प्रत्येक माह की 6 तारीख को मुद्रित होकर उसी माह की 8 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है।



# प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष: 12 अंक : 10 | अप्रैल-2023

संरक्षक

डा० उत्तम प्रकाश मानव  
संपादक

अशोक मानव  
कार्यकारी संपादक  
उमेश

विधि सलाहकार  
नवनीत कुमार वर्मा

मुख्य संवाददाता  
आशीष त्रिपाठी  
वरिष्ठ संवाददाता  
अरविन्द त्रिपाठी  
दिल्ली संवाददाता

मनोज  
पूर्वांचल हेड  
श्री प्रकाश मिश्रा  
संवाददाता

सूर्यमणि यादव, अनुराग, कामेश, सुनील  
प्रदीप, गौरव पंत, अभिषेक पंत,  
हेमंत पाण्डेय, प्रशांत द्विवेदी,  
सुमनलता यादव, मानवेन्द्र त्रिपाठी,  
अक्षय कुमार, अभय सिंह

ग्राफिक्स, डिजाइन एवं तकनीकी  
संजय यादव  
कैमरा मैन  
धर्मेन्द्र त्रिपाठी

प्रबंध, विज्ञापन एवं सदस्यता  
संपर्क 8423330911, 9598911575

पंजीकरण कार्यालय  
सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर,  
लखनऊ, उत्तर प्रदेश- 226022

प्रधान कार्यालय  
18/A ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली क्रॉसिंग,  
फैजाबाद रोड, लखनऊ - 226016

इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों और विचारों के लिए उनका लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा। विज्ञापनों में किये गये दावों की जाँच-पड़ताल स्वयं करें। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।  
नोट: इस पत्रिका के समस्त सहभागी पदाधिकारीगण पत्रिका के प्रारम्भ के अंक से ही बिना किसी मासिक सहयोग धनराशि या वृत्तिका के स्वैक्षा से बिना किसी दबाव के समय दान के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी अशोक मानव द्वारा सूर्या प्रिंटिंग प्रेस एण्ड पब्लिकेशन, खसरा संख्या 872, ग्राम मड़वाना, जनपद-लखनऊ, उ. प्र. पिन-226104 से मुद्रित करारकर सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ, उ. प्र. से प्रकाशित किया।

संपादक - अशोक मानव

Website : www.prakritimail.com

Email : info@prakritimail.com

editor.prakritimail@gmail.com

## अंदर के पन्नों पर



P 32

प्रकृति विज्ञान

जीव द्वारा निर्माण के वैज्ञानिक यंत्र "जीव अपने स्वाभाविक जीवन शैली में मिलान होने से जो इच्छा उत्पन्न होती है वह अपनी ही मृदा को सिद्धांत करने के लिए एक वैज्ञानिक कण बना देती है वही कण यंत्र की तरह उस कार्य को पूर्ण करता है।"

P 10

स्वास्थ्य और  
चिकित्सा

P 13

एक ही अंत-अनंत अनेक

P 19

मिलान का मिलावट गणित  
अंत-परिणाम भक्षण

P 22

गुणात्मक विकास

P 24

भगत सिंह: एक विचार

P 35

क्या आपने बसंत को देखा  
है?

P 41

आत्मघाती है पर संपदा  
अथवा प्रकृति का विनाश  
करना

P 44

करसोग : प्राकृतिक  
सौंदर्य, आस्था और  
रहस्यों की घाटी

P 54

कंपनी क्वार्टर मास्टर  
परमवीर चक्र हवलदार अब्दुल  
हमीद



# गुब्बारा



अशोक मानव

गु - गुणात्मक, व - व्यंजन, बा - बात (हवा), रा - रास्ता

अर्थात् गुणात्मक व्यंजन द्वारा बनायी गयी, बात (हवा) का रास्ता। 'गुब्बारा' गुणात्मक व्यंजन से हवा बनाकर अपना रास्ता बनाने का एक नाम है। प्राकृतिक परिभाषा में अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए गुणात्मक पदार्थ से हवा भर मार्ग को तैयार करना है। वैज्ञानिक अर्थों में गुब्बारा गुणीय पदार्थ द्वारा हवा तैयार कर क्रियाशील होता है। जो अपने गुणों की ऊर्जा प्रकृति को छोड़ता है। हवा भरने से ही गुब्बारा उड़ता है। हवा जल और प्रकाश से बनती है। हवा का जीवन निर्माण से विशेष महत्व है। हवा जो दिखाई नहीं देती पर उसमें सभी गुण मौजूद हैं। हवा को रोकने के लिए पदार्थ की जरूरत होती है। पदार्थ का निर्माण जीव से होता है और जीव का निर्माण हवा से होता है। सब एक दूसरे के सहयोगी हैं। ऐसे व्यवहारिक अर्थों में 'गुब्बारा' उस खिलौने को लोग जानते हैं जो खुशियों के मौके पर लटकाया जाता है या बच्चों के खेलने के लिए उड़ाया जाता है। गुब्बारे रंग-बिरंगे, भिन्न-भिन्न आकृतियों में होते हैं। जिसे देखकर बच्चे खुश हो जाते हैं। जो प्यार और खुशी का इजहार होता है। इसे फोड़े न बल्कि अपने गुणों का रंग भरके लक्ष्य तक पहुंचने में सहयोग करें।

जीव अपनी मृदा के प्रवृत्तीय गुण को सिद्धांत करने के लिए शरीर रूपी भूगोल बनाकर उसमें स्वरसायन लोक से नियत स्वाभाविक पदार्थीय तत्व गंधीय मिलान कर बनने वाली ऊर्जा से गुब्बारे की तरह स्वतः अपने गंतव्य तक पहुँच जाता है।'

अनेकों रंग-बिरंगे जीव प्रकृति के गुब्बारे के समान हैं जो अपनी इच्छानुसार हवा तैयार कर लक्ष्य के मार्ग को पूरा करते हैं। जीव की आत्मिक बीज रचना हवा से तैयार होती है। उसमें जीवन के लक्ष्य का गुण हवा के रूप में भरा होता है, जिसे रोकने के लिए हवा की दीवार बनी होती है। जिसमें जीव प्रकाश रुक कर एक शरीर का विकास करता है। जिसका आकार वैज्ञानिक होता है। जो लक्ष्य के मार्ग पर चल पाने में सक्षम होता है। शरीर का विकास अपनी आवश्यकता पूर्ति के साथ हवा बनाकर उसे रोककर अपने लक्ष्य तक पहुँचाने के अनुरूप होता है। जिस प्रकार गुब्बारा में हवा भर कर उड़ाया जाता है ठीक उसी प्रकार शरीर में हवा इच्छा से भरती है, जैसी इच्छा होती है उसी गुण की ऊर्जा (हवा) ऑक्सीजन के रूप में जीव श्वसन क्रिया से खींचता है। यह हवा शरीर के अंदर के पदार्थ में रासायनिक क्रिया करके उसी गुण की हवा बनाकर लक्ष्य की तरफ ले जाने के लिए प्रेरित करती है और जीव उसी मार्ग पर उड़ता चला जाता है। मानव के अतिरिक्त प्रकृति के अन्य जीव धर्म पर चलते हुए लक्ष्य की तरफ ही जाते हैं, पर मानव अनेकों

विषयों में उलझा होने के कारण, घटना का गलत अर्थ निकालने के कारण, गलत सलाह मिल जाने के कारण लक्ष्य से भटक जाता है। जैसी इच्छा बनती है उसी गुण की हवा शरीर में तैयार होती है और जिस तरफ व्यक्ति चलता जाता है उसी गुण की ऊर्जा बनकर प्रकृति में निकलती रहती है, धीरे-धीरे शरीर का पदार्थ भी उसी गुण का बन जाता है। जो आगे चलकर उसी गुण की मिट्टी में परिवर्तित होकर उसी गुण की हवा हमेशा बनाता रहता है। सही दिशा में चलने के लिए सकारात्मक सोच अनिवार्य होती है। जिसमें धीरे-धीरे व्यक्ति की इच्छा सकारात्मक हो जाती है और वह गुणात्मक हवा बनाने लगता है जो प्रकृति में गुणात्मक सुगंध की हवा छोड़ने लगता है। मानव जीवन का स्वाभाव अपने से सक्षम की सलाह लेना पसंद करता है जैसी सलाह मिलती है वैसी इच्छा बनने लगती है जो उसी गुण की हवा तैयार करती है व्यक्ति उसी दिशा में जाता है इसीलिए व्यक्ति को सलाह अच्छी देनी चाहिए। जिससे व्यक्ति सुगंधित गुणात्मक हवा बनाकर प्रकृति निर्माण में सहयोग कर सके। जब हर व्यक्ति सही इच्छा और सही सलाह की तरफ आगे बढ़ेगा तभी समाज से आपराधिक भाव और भ्रष्टाचार खत्म हो पाएगा। लोगों की प्रतिक्रिया, सलाह से मानव स्वाभाव आत्ममंथन कर इच्छा बनाता है। जिससे शरीर के पदार्थों में रासायनिक क्रिया होती है। परिणाम स्वरूप उसी गुण की ऊर्जा बनकर हवा बनाती है, जो उसी गुणों की इच्छा को जन्म देती है और व्यक्ति उसी तरफ चलते हुए अपने कर्म को करता है। इस क्रिया से ऊर्जा तैयार होती है जो समाज में फैलकर उसी गुणों की तरफ चलने के लिए प्रेरित करती है। जैसी इच्छा व्यक्ति बनाता है उसी गुण की ऊर्जा प्रकृति में निकल जाती है जो गुब्बारे की तरफ आकृति बनकर अपने गुणों की ऊर्जा को केंद्रित कर क्रियाशील बनाती है और हवा रूप में व्यक्ति का गुण गुब्बारे की तरह केंद्रित रहता है। जो प्राकृतिक वातावरण बनाने के बाद उस इच्छा को पूरा करने के लिए जीव का विकास करता है और विषय पूरा होने तक उसी जीव का सहयोग करता है। जो स्वशन क्रिया से साँस ली जाती है उसमें उस गुण की ऊर्जा आ जाती है। जिससे व्यक्ति अंदर उस गुण की हवा बनाने के लिए शरीर में रासायनिक क्रिया करती है। 'गुब्बारा' के संदर्भ में जो लिखा है वह क्रिया पूर्ण वैज्ञानिक है। जिस पर चलकर मानव अपनी मंजिल आसान कर सकता है और अच्छे समाज का निर्माण कर सकता है। मानव अच्छा गुण बनाने के लिए अपनी इच्छा में धारण करे और सुने सबकी पर निर्णय अपने अंतरात्मा की आवाज से ले। ऐसा करके व्यक्ति अपनी सोच सकारात्मक बनाये। इसी से उसके अंदर बनने वाली हवा सुगंधित निर्णयात्मक होगी। उसका एहसास भी आनंदित होगा खुशहाली बढ़ेगी। अपने गुब्बारे की डोर इच्छाशक्ति है उसे जिस गुण की तरफ ले जायेंगे उसी तरफ जीवन रुपी गुब्बारा उड़ता चला जायेगा और उसी गुण का निर्माण प्रकृति में करेगा।



## पाठकनामा



आदरणीय संपादक जी

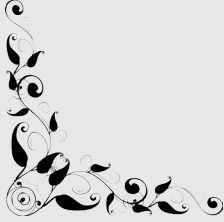
सादर प्रणाम

पत्रिका पढ़कर ऐसा एहसास होता है कि जैसे जीवन सरल हो गया है, पत्रिका पढ़ने के बाद से मन शांत, स्थिर हो चला है समय जरूर लगा समझने में लेकिन परिणाम में अंतर्मन को शांत करने का तरीका समझ आया जो सकारात्मक सोच है, यदि मन को नकारात्मक विचारों से मुक्त करने में कठिनाई हो तो उसे सहज ही सकारात्मक विचारों की ओर मोड़ लेना चाहिए।

किरण तिवारी

मानस विहार इंदिरा नगर

लखनऊ



सभी पाठकगण से अनुरोध है कि आप अपने विचार अपने लेख हमें निम्न पते पर भेज सकते हैं—

A/18 ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली रेलवे क्रॉसिंग, रविन्द्र पल्ली फैजाबाद रोड, लखनऊ-226016

आप हमें अपने विचार निम्न ई-मेल पर भेज सकते हैं

[info@prakritimail.com](mailto:info@prakritimail.com) / [editor.pakritimail@gmail.com](mailto:editor.pakritimail@gmail.com)

Contact: 980 7636 072, 737 649 5194



“

“जिस पार्टी में ज्यादा कार्यकर्ता करोड़पति हो जाते हैं, वहाँ संगठन खत्म हो जाता है।”

स्वतंत्र देव सिंह



“

“अविभाजित भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सभी समुदायों तथा क्षेत्रों की सशक्त भागीदारी रही।”

जगमोहन सिंह राजपूत



“

“हाथियों को पालना आसान नहीं है।”

बोम्मन



“

“सहज मेरे लिए बोरिंग है। मैं घमंडी नहीं हूँ, मैं आत्मविश्वास से भरपूर हूँ।”

प्रियंका चोपड़ा



“

“रातनीतिक दलों में एक अघोषित समझौता था कि एक दूसरे के भ्रष्टाचार की अनदेखी करेंगे।”

प्रदीप सिंह



“

“वह एक अनुभवी प्रतिद्वन्दी थी, पर मेरा ध्यान सिर्फ मैच को जीतने पर था।”

निखत ज़रीन

# जेल इन डिमांड





# प्रकृति किसी आस्था का आधार नहीं

गौरव पंत

प्रकृति किसी आस्था का आधार नहीं है। प्रकृति एक विज्ञान है जो हर उत्पन्न अवस्था को परिपक्व करती आ रही है। मानवीय कल्पना कब एक विज्ञान बन गई किसी को ज्ञात ही नहीं हुआ। अपनी कल्पनाओं को मानव अपनी जीत मानकर प्रकृति को भी एक आस्था का आधार समझ बैठा। जिसमें मानव ने इतनी परिभाषाएं इतने तरीके बना डाले और इतनी खोजें कर डाली उस सूक्ष्म विज्ञान को जानने में, जिसे ज्ञात किया ही नहीं जा सकता।

किसी आस्था का कोई भी निर्माण प्रकृति में नहीं हुआ। हर प्रणाली या हर उत्पन्न अवस्था पूर्ण विज्ञान है। जो पूर्ण वैज्ञानिकता से संचालित है। इसमें किसी भी प्रकार का कोई

हस्तक्षेप संभव ही नहीं। किसी आस्था से ना इसे बदला जा सकता ना किसी तरह का हस्तक्षेप किया जा सकता है। हर गुण का अपना एक स्वतंत्र गुण है जो स्वतंत्र है और वह अपनी यात्रा अपने गुण के अनुरूप ही करता है। मानवीय लालसा ही इस सरल यात्रा को इतना कठिन करती चली गई कि आज मानव को छोड़ कर प्रकृति के अन्य जीव प्रकृति वैज्ञानिकता के अनुरूप जीवन को जी रहे हैं

मानव ही सिर्फ वास्तविकता से कोसो दूर जा चुका है। मानव अपने को प्रकृति संचालनकर्ता मान बैठा है। जबकि हर अवस्था एक विज्ञान है जो हर किसी को गतिमान किए हुए है। जो उसे सूक्ष्म अवस्था में परिपक्व कर रही है। इसी तरह हर सजीवता-निर्जीवता का विज्ञान अपनी यात्रा को परिपक्व कर

रहा है और अनंतिय अंत की ओर अग्रसर है। प्रकृति में आस्था से कोई परिवर्तन और निर्माण संभव ही नहीं, सबकुछ एक विज्ञान है जो स्वतंत्र विचरण करता है और हर कण अपनी यात्रा को पूर्ण करता है।

बना विज्ञान ऐसा प्रकृति का, कि ना कोई जान पाया।

हर किसी कल्पना को ऐसा प्रकृति ने सजाया।  
हर अधूरी अवस्था को परिपक्व कर मिटाया।  
हर किसी की खोज को इतनी सूक्ष्मता से  
मिलाया।

किसी आस्था का आधार नहीं प्रकृति।

विज्ञान को वैज्ञानिकता से दिखाया।  
ना ठहराव, किसी को दिया, हर किसी की  
अवस्था को गतिमान कर, उसे उसकी चरम  
अवस्था तक पहुंचाया।

विज्ञान है प्रकृति, विज्ञान है प्रकृति।  
अशोक वैज्ञानिकता के विज्ञान से ब्रह्माण्ड  
परिपक्व होता नजर आया।



# स्वास्थ्य और चिकित्सा



कामेश

मानसिक प्रदूषण की अधिकता समूचे विश्व में एक जैसी हो जाती है तो ऐसी एक बीमारी या ऐसे जीवाणु का सृजन हो जाता है जो कि उस वक्त के समस्त लोगों पर अपने प्रभाव जमाने लगता है जैसा कि हम सभी अभी-अभी कोरोना जैसी महामारी का सामना कर चुके हैं और यह भी कहा जाता है कि लगभग सौ वर्ष में एक ऐसी महामारी अवश्य आती है जो कि पूरे विश्व में प्रभावकारी होती है।

**आ**ज का मानव समाज नाना प्रकार की समस्याओं का सामना कर रहा है। परंतु एक ऐसी समस्या के विषय में हम बात करने जा रहे हैं जो कि प्रत्येक व्यक्ति की समस्या बन चुकी है। वैसे तो अनेक समस्याएं हैं, किसी के पास कुछ और, तो किसी के पास कुछ और है परंतु यह एक ऐसी समस्या है जो प्रत्येक व्यक्ति की समस्या है और वह है 'स्वास्थ्य'। स्वास्थ्य की समस्या व्यक्ति को अपने प्रभाव में ग्रसित कर चुकी है और यही कारण है कि आज जितने व्यक्ति नहीं उतनी तो बीमारियां सुनने को मिलने लगी हैं उसमें भी बीमारियों का एक दौर चलने लगा है। लगता है प्रकृति में हवा से अधिक तो बीमारियां बहने लगी हैं। एक लहर चल पड़ती है और समूचे विश्व को अपनी चपेट में ले लेती है, हवा तो फिर भी क्षेत्र विशेष में तेज या धीमी चलती है, परंतु बीमारियों के तो ऐसे-ऐसे उदाहरण देखने सुनने को मिलने लगे हैं कि मानो लगता है यह बीमारी नहीं अपितु मानव समाज को ग्राहक बनाने हेतु कोई मिशन चल रहा हो, क्योंकि कहा जाता है कोई भी बीमारी मौसम या वातावरण के अनुसार चलती है परंतु समूचे विश्व का

मौसम और वातावरण एक तो कभी होते ही नहीं तो फिर भला एक बीमारी समूचे विश्व पर कैसे प्रभावशाली हो सकती है।

इसका अर्थ ही है कि बीमारी का किसी भी प्रकार से किसी अवस्था विशेष से कोई मतलब नहीं होता। मानसिक प्रदूषण ही इंसान के भीतर का एकमात्र कारण है। मानसिक प्रदूषण की अधिकता समूचे विश्व में एक जैसी हो जाती है तो ऐसी एक बीमारी या ऐसे जीवाणु का सृजन हो जाता है जो कि उस वक्त के समस्त लोगों पर अपने प्रभाव जमाने लगता है जैसा कि हम सभी अभी-अभी कोरोना जैसी महामारी का सामना कर चुके हैं।

यह भी कहा जाता है कि लगभग सौ वर्ष में एक ऐसी महामारी अवश्य आती है जो पूरे विश्व में प्रभावकारी होती है। इसका अर्थ है कि सौ वर्ष में समाज का मन और सोच किसी एक ऐसे बिंदु पर अधिक मनन करता है जो अत्यधिक रूप से व्यक्ति की मानसिकता को प्रभावित करने लगता है और उतपन्न होने वाली तरंगे एक दूसरे में मिलान करते हुए विस्फोटक अवस्था में पहुंच जाती

हैं। इस तरह से उस विचारधारा से जुड़े हुए प्रत्येक व्यक्ति उस महामारी को अपनी तरफ खींचने लगते हैं।

बीमारी का वास्तविक कारण व्यक्ति की शारीरिक क्षमता पर नहीं बल्कि व्यक्ति की मानसिक धारणाओं पर निर्भर होता है। क्योंकि यदि क्षमता पर निर्भर होता तो एक बीमारी कभी दूसरे से होकर दूसरे को प्रभावित न कर पाती क्योंकि हर व्यक्ति की शारीरिक क्षमता एक जैसी कभी नहीं होती। कभी एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से किसी भी रूप में पूर्णता एक रूप ही होता है तो जब यह महामारी एक दूसरे के संपर्क में होने से बढ़ती है तो निश्चित ही कोई तरंग ऐसी निकल रही होती है जो कि दूसरे व्यक्ति की तरंग से मिलान करती होगी। यह भी कह सकते हैं कि जो बीमारियां हम समझ नहीं पाते कि आखिर क्यों हो रही हर एक ही शरीर की क्षमता नहीं अपितु मानसिक सोच की अधिकता पर बल देना चाहिए। अधिकतर किस विषय पर समाज की मानसिकता अधिक बल देकर सोचती है क्योंकि बीमारी का निदान वहीं संभव है जहां से बीमारी पैदा होती है। किसी भी बीमारी का समूल नाशता भी किया जा सकता है जब उसके उद्गम के कारण को खत्म किया जा सके।

एक बात और भी स्पष्ट करना चाहता हूँ कि बीमारी और स्वास्थ्य का आपस में कोई मेल नहीं है ना ही कोई तुलना क्योंकि बीमारी को लोग स्वास्थ्य से जोड़ने लगे हैं। इसलिए यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वास्तव में स्वास्थ्य से बीमारी का कोई लेना देना नहीं है। एक बीमार व्यक्ति भी स्वस्थ रह सकता है और बीमारी मुक्त व्यक्ति भी अस्वस्थ हो सकता है। यहां मेरा स्वास्थ्य से मतलब है कि यह आवश्यक नहीं यदि कोई व्यक्ति बाहर से बीमारियों से मुक्त दिख रहा है तो वह स्वस्थ हो सकता है। एक बीमार व्यक्ति भी पूर्णता स्वस्थ हो सकता है क्योंकि स्वास्थ्य स्थिरता है सास्वत है तुम्हारी हो या ना हो

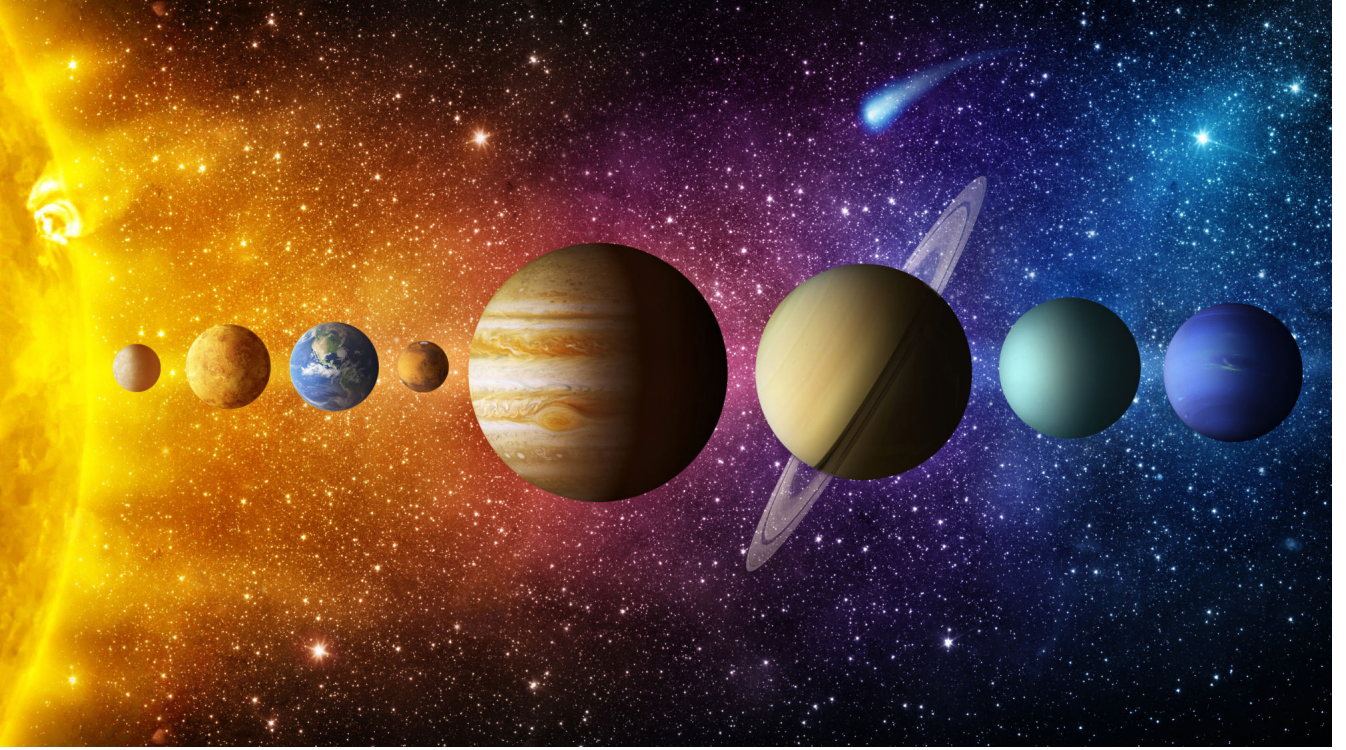
फिर भी रहेगी एक प्राकृतिक अवस्था है। यह प्राणियों के ना होने पर भी रहेगी बीमारी को होने के लिए आधार की आवश्यकता है। बीमारी के लिए जरूरी है कि जीवन हो तभी तो बीमारी होगी परंतु स्वास्थ्य के लिए किसी आधार की आवश्यकता नहीं है। वह तो प्रकृति का स्थाई और शाश्वत गुण है जो कि हर अवस्था में विद्यमान ही रहेगी उदाहरण से भी समझा जा सकता है कि जिस प्रकार गुलामी का आजादी से कोई लेना-देना नहीं क्योंकि गुलाम वाह जगत होता है और आजाद आंतरिक अवस्था है। कारागार में शरीर बंद की जा सकती है परंतु स्वतंत्रता को कभी बंद नहीं किया जा सकता। इस प्रकार भी समझ सकते हैं कि गुलामी के लिए किसी व्यक्ति का प्रभाव में रहना आवश्यक है। परंतु आजादी के लिए किसी इकाई विशेष का कोई संबंध नहीं कहने का तात्पर्य है कि स्वास्थ्य एक अस्थाई अवस्था है और बीमारी एक क्षणभंगुर प्रक्रिया इसीलिए बीमारियों की अनेक अवस्थाएं होती हैं। परंतु स्वास्थ्य की बस एक जैसा कि हम सभी किसी के पास जाते हैं तो पूछते हैं कि क्या बीमारी है या फिर क्या हुआ है। परंतु कभी किसी निरोग व्यक्ति से कोई यह नहीं पूछता कि कौन सा स्वास्थ्य हुआ है बीमारियां अनेक हैं या यह भी कह सकते हैं कि जितने लोग उतनी बीमारी और उतनी ही चिकित्सा पद्धति है और पद्धतियां स्वास्थ्य प्रदान करने का ही दावा कर रही है जबकि स्वास्थ्य कोई क्या देगा वह तो है ही। जितनी बीमारियों के निवारण की खोज करते हैं उतनी दूसरी बीमारी आ जाती है। आज तक कोई ऐसा चिकित्सक नहीं हुआ जो यह दावा कर सके कि हम पूर्णता स्वस्थ कर सकते हैं।

बीमारी व्यक्ति के पास जगत से संबंधित होती है जबकि स्वास्थ्य जगत में स्थित आस्था है। हम जब भी चिकित्सा करते हैं तो बाय करते हैं अतः हम बीमारी से निजात तो पा सकते हैं परंतु स्वस्थ नहीं हो सकते। हम सभी जानते हैं कि एक चिकित्सक भी

बीमार पड़ता है इसका कारण है कि एक चिकित्सक बीमारी के बारे में अध्ययन तो करता है। परंतु कभी स्वास्थ्य का अध्ययन नहीं करता है और जिस व्यक्ति ने स्वास्थ्य का अध्ययन कर लिया वह कभी चिकित्सक नहीं बन पाएगा क्योंकि जो स्वास्थ्य जान लेगा उसे चिकित्सा एक व्यर्थ की प्रक्रिया मालूम पड़ने लगेगी फिर वह उस अवस्था को जान लेगा जिसका चिकित्सा से कोई नाता ही नहीं। बीमारी की भी वही अवस्था है 'मानसिक' और 'भौतिक' या तो इंसान शरीर की बीमारी से ग्रसित हो या मानसिक सोच से ग्रसित हो या फिर सामाजिक परिस्थितियों से परेशान हो और इन तीनों अवस्थाओं का प्रभाव मात्र व्यक्ति पर ही पड़ता है जबकि जो इंसान इन तीनों अवस्थाओं से ऊपर उठ जाता है तब उसे किसी भी प्रकार का कोई रोग कभी ग्रसित नहीं कर पाता और इन तीन अवस्थाओं से ऊपर उठने का तात्पर्य है। जो व्यक्ति स्वयं में स्थित हो जाए वही स्वस्थ है कहा जाता है। हर शब्द अपना अर्थ स्वयं बताते हैं इस तरह हम देख सकते हैं। स्वस्थ का अर्थ ही है स्वामी स्थित हो जाना अर्थात् जो व्यक्ति अपने आप में स्थित हो गया उसे जो भी बाह्य जगत की कोई भी अवस्था प्रभावित नहीं कर सकती। इसे इल रूप में यह भी कह सकते हैं कि वही व्यक्ति पूर्ण रूप से स्वस्थ होता है जो कि बाह्य जगत से प्रभावित ना होकर अपने अंतर जगत में शांत और स्थिर हो जाता है। इस तरह से हम यह कह सकते हैं कि वास्तव में स्वास्थ्य पर बीमारी का कभी कोई प्रभाव नहीं होता और ना ही किसी चिकित्सा पद्धति से स्वास्थ्य को लाया जा सकता है। चिकित्सा से बीमारी दूर की जा सकती है परंतु किसी को स्वस्थ नहीं किया जा सकता। इंसान को स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक है यह नहीं है कि समाज में स्वास्थ्य केंद्र खोले जाएं बल्कि आवश्यक तो यह है कि स्वामी स्थित होने का प्रयास करें।



# एक ही अंत-अनंत अनेक (दर्शन उत्कर्ष-मनोवैज्ञानिक प्रपात) तत्काल ब्रह्मांडीय विज्ञान



## अभिषेक पंत

समय अर्जुन पुष्पिता की ज्योति विधान पल्लविता के बीजकाल की नीति में उत्पन्न काल वृत्ति की सूर्य धातु धारा का ब्रह्मांडीय जीवनी ही प्रदूषण ग्रहण को मिटाने वाला प्रथम पदार्थ शून्यतम तत्कालीन रासायनिक योग होता है, जिसमें अनुकृति, विषयकृति एवं परिधिकृति ही व्यूह कृषि परिमार्जन की स्वशन पराग भट्टी में जीवात्मा छलनी का ज्योति कुंड बनाकर, जीव निर्जीव अंतर चेतना मिलान से इच्छाओं के सागर को पका कर मिटा देती है। जिसमें सृजन का पराकाल ही दर्शन का आरंभ है एवं संघार का अंतिम काल ही दर्शन का विकास है।

अति उत्तम कह देने से यदि अति उत्तम हो जाता, तो अति उत्तम होने का फल ही जड़ क्रांति भाव में अतिशयोक्ति भय का रोगी हो जाता। उसी प्रकार यदि परवलिय उन्माद की रूपरेखा में दायित्व की जननी का विकास ही उद्यमी

शास्त्र का मधु लेख बन जाता, तो सजीव विकास प्रकरण ही प्रथम सूर्य कांड के रूप में ज्ञात किया जाता। जिसमें अनुरोहिणी कन्यावादी नर अनुशासन की प्रवृत्ति को ही समय पैठ की धारा कहा जाने लगता अपितु प्रकृति वचना अधिकारी गमन धीर सूर्यकोटि अभिप्राय नहीं है, प्रकृति तो ब्रह्मांडीय दर्शन उत्कर्ष का वह पदार्थ विलई मनोवैज्ञानिक प्रपात है, जिसका तत्काल ब्रह्मांडीय विज्ञान ही, एक ही अंत में अनेकों अनंत की संरचना का सारगर्भित कर देता है। प्रकृति का विषय शून्य होना ही जीवन मृत्यु के पराधृत मानकों को अचेतन वर्ण में भी पकाकर मिटाता है। प्रकृति का प्रथम स्वभावी तत्व काल विद्युत चुंबकीय अनावरण ही जीवन निधि का सतत पराग कमल गर्भ अंकन विकसित कर, इच्छालीन दृढ़ता में ईंधन कृत करता है। अर्थात् समय सत शीर्षता की प्रथम गर्भ शून्य अशून्यता के अंतिम पारा

भाव जीवाणु स्तूपीय ब्रह्मांडीय तत्व संरचना क्रम को आत्मा कहते हैं। जिसमें मन का तन मिलान ही तत्व पदार्थ का रासायनिक मिलन होता है। जैविक उत्थान की शीर्षता में अर्थव्यूह वेदी पटल का रासायनिक मुद्राकाल ही शुण्यार्थी पदार्थ चयन का रश्मि व्यास बनाता है जिसमें राशि कोशीय गंधीय क्रम ही ईंधन शीतलता की पदार्थ सूची में तत्व संरचना का इच्छा रूप धारण करता है। अर्थात् जिस तापमान को धारण करने हेतु पदार्थ अपनी संरचना की शुण्यार्थी प्रवृत्ति को अशून्य कर देता है, उसी तापमान में उत्पन्न गंधीय मार्ग की प्रथम इच्छा प्रबलता को दर्शन उत्कर्ष कहते हैं। यात्री का यात्रा चयन ही आत्मा दूरी का प्राणवायु योग होता है, जिसमें जब दबाव का विषय अंकन ईंधन स्वभाव के मृदा गुण को धारण करता है, तब जिस योगिक मूलता की बीज क्रांति का रासायनिक प्रवाह होता है, उस मूलता कि प्रथम तापमान वृत्ति के भाव वेग को मनोवैज्ञानिक प्रपात कहते हैं। अर्ध तुला वचन रागिनी नहीं होती, व्यय भय भाव पूर्णिमा नहीं होती, ब्रह्मांडीय रचयिता का गुण ही सर्वकार्यता की संपन्नता को बीज विज्ञान का अनंती सूर्य बना देता है, जिसमें प्रत्येक यात्रा मात्र एक ही अवसर चालन की अनिवार्य गंध अणुता होती है, जिसके यात्रा काल में उत्पन्न ठोस तत्व वाहन वरीयता ही अनंति विज्ञान की छन्नी प्रवृत्ति को भी जन्म देती है। दर्शन का आरंभ ही विज्ञान की पूर्ति है, दर्शन का विकास ही गणित की नीति है, दर्शन का भाव ही यात्रा की कृषि है, दर्शन का गुण ही पदार्थ की आकृति है।

परम अशोक कहते हैं-

**दर्शनं मात्राः दर्शनं यात्राः दर्शनं पात्रं च पात्रताः रसायन नामैः दर्शनार्थीः गंधम शून्यं भवः तत कालम प्रथमः भावम ध्वनिः नभामीः चयनम अनंतेः भवतुः**

अर्थात् भाव मुद्रा की दर्शन नीति के यात्रा पात्र में यात्री पात्रता का रासायनिक गंध भाव ही शून्य विषय यात्रा का ध्वनि परिणाम है

जिसमें गंध का चयन ही नभ ध्वनि की यात्रा का प्रथम अनंतिम दर्शन है एवं इसी सूत्र से बीज विज्ञान का आरंभ होता है, तत्काल ब्रह्मांडीय विज्ञान में दर्शन उत्कर्ष की योग्यता से उत्पन्न मनोवैज्ञानिक प्रपात ही बीज विज्ञान की पराकाष्ठा है।

**द्रव्यम संभावामीः दर्पणं मुक्तीः मृत्यं शुण्यार्थिमाः तत्वेः पदार्थनं अणुवेः च घातकम च परियायकम तत्वः रसः रश्मिः भवः**

अर्थात् भाव रूपी द्रव्य दर्पण का शून्य मानक है जिसमें पदार्थ हेतु उसकी रश्मि का पर्यायक तत्व ही समानुपाती भाव विषय योग में घातक होता है।

### दर्शन उत्कर्ष -

समय पूर्णिमा की विधान वृत्ति के नीति यौगिक यात्रा काल में उत्पन्न पदार्थ आकृति की रासायनिक माला के प्रथम ईंधन कालीन स्वभावी यात्री कोशिका भार एहसास को दर्शन उत्कर्ष कहते हैं। जिसमें नवोनीति गुणवत्ता की बीज वैज्ञानिकता के सूर्य ध्वनि योग की पारा कालीन रासायनिक मति ही तत्व इच्छा ज्योति प्राणवायु शून्यता को सारगर्भित उष्मा गंध की यात्रिकाल चेतना से संपन्न करती है। अर्धातुर अनावरण आकृति योगिक जीवन निदान पात्र प्रपत्रीकरण किया तो गया था अपितु अशून्यता का वेगीय चुंबकीय गुण ही इतना प्रबलतम सो भावी गतिधारा मार्ग बनाने लगा कि परवलीय चेतना विषय अनुकृति में समय विषय की गर्भ धारा का गंधीय अणु ही दर्शन उत्कर्ष की व्यवहारिक चयनित में गर्भ लीन होने लगा अर्थात् विषय कोष कि ईंधन सूर्यता के शुण्यार्थी इच्छा संदर्भ के रासायनिक योग की काल प्रवृत्ति को दर्शन उत्कर्ष कहते हैं। प्रकृति की ब्रह्मांडीय क्षमता के पारा कालीन एहसास में ही सजीवता का विकास किया गया। जिसमें आत्मा रूपी स्वतंत्र इकाई का तरलतम मन रूपी सूर्य बनाकर तन विज्ञान को छननी का रूप दिया गया इसी छन्नी में जब पदार्थ शून्यता की तत्व इकाई का रासायनिक योग ही ध्वनि

पारा मार्ग का चेतन प्रकाश वर्ण बन जाता है, आने वाले मार्गीय मंथन की रश्मि पूर्णिमा में स्वतः से तत्व चेतना में दर्शन वेग बनता है जो प्रत्येक अवस्था को उसी मार्ग में चलाए मान करता है जहां से विषय बांध की स्वशन सूर्यता हि निर्जीव मार्ग की परिचालन प्रवृत्ति को पका कर मिटा देती है। जीवन प्रकृति की निर्जीव प्रवृत्ति का प्रथम तापमान ही गति शून्य पदार्थ बीज को इच्छा लीन रासायनिकता में भाव विलीन करता है जहां से गुण रोचक भार इकाई की दर्शन जलवायु शीतलता ही शून्य भार वायु अशून्य जलवायु विषय उभार छन्नी योगिक नीति बन जाती है।

### मनोवैज्ञानिक प्रपात -

शून्य को शून्य में मिलाकर इलेक्ट्रॉन रूपी विषय ईंधन भार को प्रोटॉन रूपी चेतना धयेयी इच्छा बीज बनाने वाले, मृदावस्था के न्यूट्रॉन रूपी तत्व सूर्य ध्वनि लीन गंधीय मार्ग परिधि नीति को मनोवैज्ञानिक प्रपात कहते हैं। मनोवैज्ञानिक प्रपात, दर्शन उत्कर्ष का परिणाम होता है अर्थात् मृदा में जिस जलवायु की अणुनीति रासायनिक रूप लेती है, उसी प्रकार की जैविक इच्छा का जन्म होता है, जो उसी प्रकार का पदार्थ संचय खींचता है, जिस प्रकार के संचय में तत्व ईंधन की स्वीकृति का तरंग आसनी परिणाम ही मात्रा व्यवहार का मार्गीय स्वभाव बन जाता है। प्रकृति में तत्व संरचना की रूपरेखा का यात्रा पारा मानक ध्वनि योग ही प्रवृत्ति रूपेणु मृदा धारा का जीव निर्जीव मिलान कोण होता है। ब्रह्मांडीय गति की अवनीति का पारा प्रमाण ही ध्वनि सूर्यता का जीव पारा प्रकाश योग बनाता है जिसमें कल्पना की मात्रा को विषय ऊर्जा का शुण्यार्थी ज्योति कर्म बनाकर प्रथम जीव इच्छा का एक ही यात्रा में संपन्न योग बनाकर, पकाकर, अनंती अंत कर दिया जाता है परम अणु योग का व्यवहारिक गुण ही जीव चयन निधि का सूर्य प्रकाश धारण करता होता है इसमें रासायनिक वृत्ति का समय पारा पात्र योगिक शुण्यार्जन ही पदार्थ

मार्गी एहसास का चुंबकीय बल होता है। प्रकृति ने धारा व्यवहारिक मन सूर्य की विषय नीति को ही पदार्थ इच्छा का राधिका चुंबक बनाया जिसमें वर्ण अंकन तथ्यता की अंग अंकन नीति ही अशून्यता की परिमार्जनी विधान नियति बन गई अर्थात् दर्शन उत्कर्ष में उत्पन्न मार्गीय भाव की अंकन तापमान नीति को भाव गुण रासायनिक पारा पात्र बनाने वाले रश्मि स्वभावी आकार चयन एहसास मुद्रा को मनोवैज्ञानिक प्रपात कहते हैं। ब्रह्मांडीय सूर्य वृत्ति की प्रथम अनुमति ही पदार्थ चयन की स्वशन प्रकृति बनाई गई थी। जिसमें वर्ण अंकन तथ्यता की रासायनिक मृदा ही स्वशन कृषि को पकाने वाली मनोवैज्ञानिक प्रापतीय कुंडली बनाई गई थी। जिसमें सजीवता को भी पकाकर आज उस चरण अर्क में ला दिया गया है जहां से एक ही अंत में निर्जीव ब्रह्मांड की अनेकों अनंती धाराओं का पदार्थ मात्रा सृजन आरंभ हो रहा।

## तत्काल ब्रह्मांडीय विज्ञान

विषय योजन प्रतिभा गीता का जन्मांक काल ही जीवन प्रतिस्पर्धा का कामिनी गुण बनाया गया था अपितु प्रकृतिकाल में प्रत्येक अवस्था की योगिनी ही गंध परतों का अनावर्तनी गुण होता है, जिसमें प्रवृत्ति लोचनीय स्वभावी अंकन शून्यता ही जीव शैली की इच्छा प्रासंगिकता को ब्रह्मांडीय पदार्थ मिलान का संपर्क गुण बनाती है, जिसमें दर्शन उत्कर्ष की समय पूर्णता ही मनोवैज्ञानिक प्रपात से तत्काल ब्रह्मांडीय विज्ञान की उत्पत्ति करती है। जिसका सूत्र ही एक ही अंत अनंत अनेक होता है। अर्थात् जीव गुणों की समयोजन वृत्ति को छन्नी काल का प्रकाश निवासी आत्मा कर्म बनाकर, ब्रह्मांडीय रासायनिक वृत्ति को तत्व दर्पण कृषि का प्राकृतिक शून्य अंकन मार्गीय भाव बनाने वाले प्रथम गंधीय गुण को तत्काल ब्रह्मांडीय विज्ञान कहते हैं। अर्थात् विषय शून्य ईंधन वृत्ति की लावण्यक शीर्षता के शीतल इच्छा काल की पदार्थ काया के खगोलीय संचार को

तत्काल ब्रह्मांडीय विज्ञान कहते हैं। प्रकृति की विषय कारिणी शून्यता ही पदार्थ रासायनिक मात्रा को नियंत्रित कर ईंधन संपर्क की गंधीय सूर्यता को समय गर्भ प्राण काल का चेतना क्रम बनाती है, जहां से उत्पन्न विषय चेतना की दर्शन उत्कर्षिता ही मनोवैज्ञानिक प्रपातीय ईंधन क्षमता से खनिज पूर्ति का ब्रह्मांडीय योग बना कर प्रथम एहसास की रासायनिक वृत्ति को ही तत्काल ब्रह्मांडीय विज्ञान बना देती है। स्तूपिय संचारी चेतना क्रम की खगोलीय दुर्ग व्यासीय पारा पराक्रमी तत्व व्यय वृत्ति ही प्रकृति संपर्क की नव धरा मिलान कर्ता कारक वृत्ति होती है। जिसमें बीज विज्ञान की लावण्यक पूर्णिमा ही पदार्थ शून्यता की रचना विविधता को तत्व तरंग रश्मि रश्मि रस व्यूह चरण का मार्गीय कालक्रम बना देती है। प्रकृति की प्रवृत्ति मानक क्षमता ही सूर्य शून्य नभासीन तत्व पदार्थ क्षारियता का मात्रा क्रम बनाती है। तत्काल ब्रह्मांडीय विज्ञान में रासायनिक मिलान की छाया परछाई गति विलयी तापमान वृत्ति ही कर्म योग की स्तूपिय कृति होती है। दर्शन ही विज्ञान है एवं विज्ञान ही प्रथम रासायनिक मार्ग है, रासायनिक मार्ग ही तत्काल ब्रह्मांडीय चेतना है एवं तत्काल ब्रह्मांडीय चेतना ही गर्भ शून्य विषय परिक्रमा का ईंधन योग है।

## एक ही अंत

दर्शन युक्ति की प्रथम छाया वर्णित रासायनिक काया ही मात्रा पूर्णिमा की लावण्यक ध्वनि का पाराक्रम बनाती है। अर्थात् एहसास की यात्रा ही कर्म की मात्रा है एवं कर्म की मात्रा ही विज्ञान यौगिक तत्व धारा की यात्रा है। ब्रह्मांडीय प्रकृति क्रमित प्रवृत्ति शून्य शीतल आकार स्वभावी पारा रासायनिक योग की प्रथम वृत्ति ही स्तूपिय विषय का इच्छा योग होती है। अर्थात् प्रत्येक प्रकार की गुणवत्ता का एक ही गंधीय सूर्य प्रथम आंतरिक सरलतम प्रकाश का विविध रस योग बनाता है अपितु सूर्य प्रकाश का तन मन मिलान करता रश्मि क्रम ही वैज्ञानिक

पूर्णता की रस यात्री रासायनिक यात्रा को मात्र एक ही वर्ण अंकिता का पदार्थ मूल बनाता है। जिस भी विषय की राधिका धातु गर्व श्रेणी अनेकों सूर्य विधान क्षमता की कौशिका बनाती है, उसी विषय की यात्रा का प्रत्येक सूर्य, उसी एक बिंदु पर आकर मिलता है, जहां से क्षमता बनाने वाला रसायन प्रत्येक ब्रह्मांडीय मिलान को अग्रसर करता है। अर्थात् प्रत्येक योग की भूमिका ही रासायनिक मिलान का अंतिम यात्रा कोण होती है अर्थात् मार्गीय विषय ईंधन कोशीय वृत्ति खगोलीयता कि खनिज यात्रा के संचारी चेतना क्रम के अंतिम बिंदु की जैविक छलनी को प्रबलतम चुंबकीय ईंधन वृत्त बनाने वाले तकनीकी नभासीन पदार्थ काया योग कारक कृति ध्वनित मूल बीज इच्छा प्रस्फुटन विस्फोटन को एक ही अंत कहते हैं। प्रकृति की अवस्था धावक ना होकर चलायमान होती है, इसमें पदार्थ अर्क की नीति क्रम शून्यता ही जीवन चक्र की व्यास निधि में प्रदूषण को पकाकर समस्त इच्छाओं के पकवान को चरम तक ले जाकर मिटा देती है। इसी क्रमित शून्य विकास परवलीय ध्वनित धारा योग की पारा प्रमाणित आकृति कारक अवस्थाओं की निरंतर गतिमान चक्र को तापमान परयायक शीतल कोशीय आंतरिक ठोसता प्रबलतम गति चालक गुण क्रमित प्रवृत्ति योग बना देने वाली गणित सूत्र चक्राविता को एक ही अंत कहते हैं। प्रकृति का भाव ही प्रवृत्ति की गुणवत्ता है, प्रवृत्ति की गुणवत्ता ही पदार्थ की शून्यता है, पदार्थ की शून्यता ही तत्व की शीतलता है एवं तत्व की शीतलता ही रसायन की लवणयता है एवं रसायन की लवणयता ही गंध की उत्कर्षिता है।

## अनंत अनेक

तत्व दीर्घा की पराकालीन शून्यता को पदार्थ रश्मि योग का ध्रुवीय गुणकाल समकक्षी खगोलीय नभासीन बीज तत्व बनाने वाले तरंगासीन रासायनिक वृत्ति को तापमान पूरक नियंत्रण कहते हैं। जिसमें राधिका व्यासीय

ईधन पराकृति का आधुनिक गुणांक छातीय पराक्रम निहित होता है। इसी व्यासीय तत्व शून्यता की पदार्थ शीतलता में रासायनिक उत्कर्ष की मृदा पर्यंत रश्मि स्तूपिय कारक पूर्णिमा ही चुंबकीय रस का निर्माण करती है। मात्रा व्यूह रासायनिक मुद्रा की ठोस प्रकृति के आंतरिक संपन्नता यौगिक तत्व काल धराकोष को अनंत अनेक कहते हैं। जिसमें मुद्रा पाचक अवधि की रासायनिक नाड़ी ही तत्व शून्य धराव्यसन वृत्ति की चयन काल सिद्धि होती है। इसी रस व्यासीय पराबुद्धि मानक की तत्व रिक्तता के पदार्थ मूल की प्रथम सिद्धांतीय बीज क्रमांकिता को दर्शन उत्कर्ष कहते हैं। जिसमें शून्य योगिक प्रकृति रासायनिक परत काल ही धमनी कोशिका इंद्रिय जलवायु में चयन निधि का विषय योग बनाकर तत्व पारा व्यूह निधि को ईधन चक्र का मनोवैज्ञानिक प्रपातीय सूत्र बनाता है। अर्थात् रश्मि व्यासीय नभ पूर्ति चयन की प्रकाश किरण के स्तूपीय अर्क की ध्वनि नितान्त परत समृद्धि को आकृति व्यसन काल पूर्णिमा कारक मात्र सूत्र कहते हैं। इसी प्राकृतिक गति के संपूर्ण संपन्न शून्य कालीन महाकाल आयाम को अनंत अनेक कहते हैं। दर्शन की शीर्षता ही तत्व की शून्यता का प्रथम यात्रा योग होता है जिसमें द्रव्य की मूलता का प्रथम भाव योग्य ही पदार्थ मूलता का मनोवैज्ञानिक प्राण काल एहसास वर्ग बनाता है। तत्काल ब्रह्मांडीय विज्ञान ही दर्शन उत्कर्ष का मनोवैज्ञानिक प्रपातीय परिणाम है। जिसमें परत की रासायनिक मूलता का गंधीय गुणों में ठोस हो जाना ही रस व्यासीय मुद्रा का आंतरिक संकेत होता है, जो दर्शाता है कि किसी भी व्यवस्था का पूरक मात्र एक ही काल क्रम में सूर्य युक्त होता है, जिसे अंत एक कहते हैं अर्थात् द्रव्य पदार्थ पूर्ति कि ब्रह्मांडीय विस्तारक छाया के अम्लीय प्राणवायु संपर्क की जीव निर्जीव यात्रा को मिटाकर ठोस ब्रह्मांड की उत्पत्ति करने वाली महाकाल एकाकी दर्शन वृत्ति को अनंत अनेक कहते हैं। गर्भ की आयु ही मृदा का मूल है, जिसमें मन की वृत्ति का जलवायु



मनोवैज्ञानिक प्रपातीय संचार ही दर्शन उत्कर्ष का मूल है।

हवाओं का एतराज बता रहा की कीमतों का इजाफा भी मिट्टी को वक्त से तोल नहीं पाया, रूहों का अंदाज बता रहा कि आसमानी पिंजरो का जमाना भी हवाओं की पैरवी करने वाला पारा बन नहीं पाया। कुदरती राह की पहली जिहानी स्याही का तालुकात ही चाहत की मिट्टी को मुश्क ए सफर बनाता है, जिस भी मिट्टी में पहला आसमानी तारा होता है, वहीं से जमीनी आवाज का आईना सामने आता है। पारे की हर तलब का हिसाब हो रहा, पारे से ही आसमानी ख्वाब का दरवाजा बंद हो रहा, हर कीमत की हैसियत का दरवाजा मिटाया जा रहा, जिहानी मंजर में हवाओं का मुश्क दान भी वजन के हवाले से तलब हो रहा। तारीखों की नुमाइश मिटा दी गई, अब जो बदन की हवा में दम था, उस दम की दीवार पर वार हो रहा। कुदरत की नमी ही हर शाजेब की तपतीश का कहकशा रंग मिटा रही, हर हकीकत की तवज्जो का शाहीन वक्फ ए मर्म भी खत्म हो रहा। अब जो वजन ए तरजीह की कयामत का फैसला आ रहा, कुदरत से नाज़िरी का अंदाज मिटाया जा रहा, तकदीर ए हयात की मशाल मिटा दी गई, अब मिट्टी का फुवारा मिटाया जा रहा।

जहन तर्ज ख्वाबों का बुलबुला फूटेगा,  
फलक की दरार मिटा दी जाएगी।

कयामती बदन का मुश्क दान मिट रहा,  
जमीनी हवा मिटा दी जाएगी।

करम ए वफा को बदनाम करने वाले  
सामने आएंगे,

हर स्याही की तवज्जो मिटा दी जाएगी।

पारे का सैलाब खींच लेगा चांद को भी  
मिट्टी में,

अब सूरज की नब्ज से पैदा होने वाली हर  
मुश्क ए जमीन मिटा दी जाएगी।

तर्ज तर उल्फतों की महक का आफ़ताबी  
मकान सामने आ रहा,

गुल ओ हयात की तरकीब मिट गई, हर  
वक्त की कीमत मिटा दी जाएगी।

The philosophical energy of soil in the soul of magnetic sun is the psychological anatomy relativity required, in the fuel consumption seed of first Desire.



# बिहार केसरी डॉ. श्रीकृष्ण सिंह

प्रकृतिमेल डेस्क



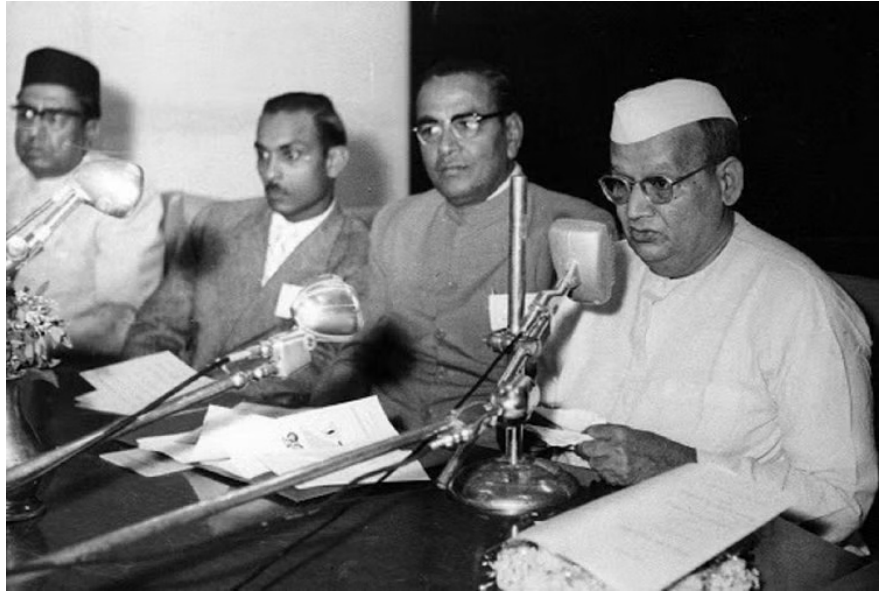
श्रीकृष्ण सिंह का जन्म 21 अक्टूबर, 1887 को बिहार के जमुई जिले के निमिया गांव में हुआ था। उनके पिता जगदीश प्रसाद सिंह एक सम्मानित वकील थे। उन्होंने दरभंगा में अपनी शिक्षा पूरी की थी और वहां से वे अपने बड़े भाई के साथ पटना आ गए। श्रीकृष्ण सिंह ने अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद वकालत की पढ़ाई शुरू की थी, लेकिन उन्हें स्वतंत्रता संग्राम का समर्थन करने के लिए इसे छोड़ दिया था।



21 अक्टूबर 1887 से 31 जनवरी 1961

सन 1957 और मार्च का महीना, बिहार में विधानसभा चुनाव अब पूरी तरीके से संपन्न हो चुके थे, और नतीजा आ चुका था। 318 सीटों में से 210 सीटों पर कांग्रेस पार्टी ने जीत हासिल की थी। बहुमत के साथ ही साथ अब इसकी भी गर्मा - गर्मी थी कि आखिर सीएम के लिए कौन सा उम्मीदवार उपयुक्त है। प्रयास लगातार चल रहे थे, मगर पार्टी में एकमात्र, या यूँ कहें - एक आम राय नहीं बन पा रही थी। किसी एक नाम के ऊपर मोहर नहीं लग पा रही थी। कुछ दृष्टांतों के अनुसार यह भी कहा गया है कि उनके करीबी लोग ही उनका साथ नहीं दे रहे थे, उनके खिलाफ खड़े हुए थे। यह विवाद कब राजनीति से होकर के जातिवाद में बदलने वाला था यह किसी को भी पता नहीं था, लेकिन शुरुआत हो चुकी थी।

कभी स्वतंत्रता सेनानियों के लिए गढ़ रहा सदाकत आश्रम अब कांग्रेस पार्टी का पटना हेड ऑफिस था। जहाँ पर एक बैठक होती है और उस बैठक में हमारे देश के पहले राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद के पास चिट्ठी आती है, जो कि गांधीजी की छुट्टी थी और उसमें गांधी जी ने अपना एक आग्रह प्रस्तुत किया था और वह चाहते थे कि बाबू अनुग्रह सिंह के पक्ष में फैसला हो और उन्हें नेतृत्व दिया जाए। उन्हें नेता चुना जाए मगर इसमें थोड़ी सी कठिनाई थी। आखिरकार डॉ राजेंद्र प्रसाद ने सभी सदस्यों के सामने पत्र को पढ़कर सुना दिया और गांधीजी की इच्छा को भी बता दिया। बात सुनते ही बैठक में मौजूद दो लोग उठ खड़े हुए जिन्हें वह फैसला वह विचार पसंद बिल्कुल नहीं था। और उनमें से एक का नाम था स्वामी सहजानंद और दूसरे का नाम था गणेश दत्त। दोनों ही भूमिहार जाति के और डॉ श्रीकृष्ण सिंह भी भूमिहार जाति के। दोनों ने पूछा आखिर इस प्रदेश का नेतृत्व श्री कृष्ण सिंह क्यों नहीं कर सकते। उनकी जगह पर श्री अनुग्रह सिंह को नेतृत्व सौंपने के बात क्यों की जा रही है। क्या अभी भी देश की राजनीति में इतना भी बदलाव नहीं



हो पाया कि हम जातिवाद को किनारे रखते हुए एक उपयुक्त व्यक्ति को अपना नेता चुन सकें। इस बैठक में श्री कृष्ण सिंह भी थे और बाबू अनुग्रह भी। आखिर बाबू अनुग्रह ने स्थिति को भांपते हुए देखा कि सारा का सारा पक्ष या सहमति श्री कृष्ण सिंह के पक्ष में जा रही है इसलिए उन्होंने भी इसे स्वीकार करना ज्यादा उचित समझा और इसी के साथ श्री कृष्ण सिंह बिहार के पहले मुख्यमंत्री हुए या यूँ कहें कि उस जमाने में उन्हें पीएम कहा गया है यानी कि प्राइम मिनिस्टर उस समय प्रदेशों में पीएम हुआ करते थे जो कि उस समय के लिए नई बात नहीं थी भले आज के समय में यह सुनना बड़ा अजीब लगे।

समय बीता और द्वितीय विश्वयुद्ध की शुरुआत हुई और ब्रिटिश लोगों ने बिना पूछे समझे हमारे भारतीयों को अपनी तरफ बताते हुए उन्हें इस आग में झोंक दिया और इसी के साथ ही साथ सारे प्रदेश में जहाँ भी कांग्रेस के प्रतिनिधि थे जो कि नेतृत्व में थे सभी ने इस्तीफा देते हुए बहिष्कार किया अंग्रेज सरकार का, और कहा कि हम इस युद्ध से वंचित रहना चाहते हैं। हम किसी एक का पक्ष नहीं लेना चाहते। हम मानवता के पक्ष में हैं।

श्रीकृष्ण सिंह का जन्म 21 अक्टूबर, 1887 को बिहार के जमुई जिले के निमिया

गांव में हुआ था। उनके पिता जागदीश प्रसाद सिंह एक सम्मानित वकील थे। उन्होंने दारभंगा में अपनी शिक्षा पूरी की थी और वहाँ से वे अपने बड़े भाई के साथ पटना आ गए। श्रीकृष्ण सिंह ने अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद वकालत की पढ़ाई शुरू की थी, लेकिन उन्हें स्वतंत्रता संग्राम का समर्थन करने के लिए इसे छोड़ दिया था।

श्रीकृष्ण सिंह ने अपनी राजनीतिक करियर को भारतीय जनता पार्टी में शुरू किया था। उन्होंने 1940 में बिहार विधानसभा के लिए चुनाव लड़ा था और उन्हें सफलता मिली थी। उन्होंने दो बार बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया था। पहली बार वह 1947 में मुख्यमंत्री बने थे जब वह जनता दल (संयुक्त) के उम्मीदवार थे। दूसरी बार वह 1948 में मुख्यमंत्री बने थे जब वह भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार थे। श्रीकृष्ण सिंह ने बिहार में विभिन्न समस्याओं का समाधान किया था। उन्होंने बिहार में शिक्षा के क्षेत्र में बदलाव के लिए कई उपाय किए जैसे कि शिक्षकों की सैलरी में वृद्धि की जा सकती है। उन्होंने बिहार में कई नई स्कूलों की स्थापना की थी ताकि छात्रों को अधिक शिक्षा की सुविधा मिल सके। श्रीकृष्ण सिंह ने बिहार में कृषि क्षेत्र में भी विकास के उपाय

किए थे। उन्होंने किसानों को नई तकनीकों के बारे में शिक्षा दी थी जिससे कि उनकी फसलों का उत्पादन बढ़ सके। उन्होंने बिहार में जल संसाधनों के विकास के लिए भी कई योजनाएं शुरू की थी जो नदियों के बाढ़ से लोगों की सुरक्षा बढ़ाने में मदद करती थीं। श्रीकृष्ण सिंह ने बिहार में आर्थिक विकास के लिए भी कई उपाय किए थे। उन्होंने नई उद्योगों को प्रोत्साहित किया था जो नौकरियों के साधन बने थे। उन्होंने बिहार में बड़े प्रोजेक्ट्स शुरू किए थे जैसे कि बिहार स्टेट एलेक्ट्रिसिटी बोर्ड, जो बिहार के विद्युत संचार को विकसित करने में मदद करता था। इसके अलावा, उन्होंने बिहार में कई औद्योगिक क्षेत्रों के विकास के लिए भी उपाय किए थे।

श्रीकृष्ण सिंह ने भारतीय राजनीति में बहुत योगदान दिया था। वे 1952 में लोक सभा के सदस्य चुने गए थे। उन्होंने केंद्र सरकार में भी मंत्री के रूप में काम किया था। श्रीकृष्ण सिंह को नेहरू के विचारों का बड़ा प्रभाव था और वे सोशलिस्ट विचारधारा के पक्षधारी थे। उन्होंने समाज में जाति विषय को बहुत महत्व दिया था और उन्होंने भारतीय संविधान में जाति विषय के संबंध में बहुत संशोधन करवाए थे। श्रीकृष्ण सिंह का निधन 31 मई, 1989 को हुआ था। उन्हें एक बहुत ही सफल राजनेता और समाजसेवक के रूप में याद किया जाता है। उनकी जीवनी एक प्रेरणादायक उदाहरण है जो हमें बताती है कि एक व्यक्ति कैसे समाज के लिए बहुत कुछ कर सकता है। श्रीकृष्ण सिंह ने अपने जीवन के दौरान बहुत से सामाजिक मुद्दों को उठाया और उनके लिए उपाय ढूंढने की कोशिश की। श्रीकृष्ण सिंह की जीवनी हमें यह भी बताती है कि अगर हमारे पास अपने समाज और देश के लिए समर्पित और उत्साही लोग होते हैं तो हम अपनी समस्याओं को हल करने में सफल हो सकते हैं। श्रीकृष्ण सिंह का नाम एक सफल राजनेता और समाजसेवक के रूप में याद किया जाता है। उनके योगदान के कारण, बिहार और देश के कई लोगों को

उनके प्रति आभार और सम्मान है।

स्वतंत्रता सेनानी श्री कृष्ण सिंह बेहद ही इमानदार और विश्वास योग्य राजनेता थे। ऐसा माना जाता था कि वह अपनी इमानदारी के कारण कभी भी अपने परिवार या अपने संबंधों को बीच में आने नहीं देते थे। एक वरिष्ठ पत्रकार ने बताया कि जब राजनीति में राजनेताओं का भ्रष्ट होना सबसे बड़ी बुराई मानी गई है ऐसे में श्रीकृष्ण सिंह को याद किए जाने की जरूरत है क्योंकि उन्हें इस राजनीति में एक ईमानदार व्यक्ति के रूप में देखा जाता था उनके अनुसार 1961 में बिहार के मुख्यमंत्री श्री कृष्ण सिंह का निधन हुआ और उसी के बारे में राज्यपाल की उपस्थिति में उनकी जो अपनी खुद की तिजोरी खोली गई और उसमें से मात्र '24500 रुपए मिले यह बहुत बड़ी रकम नहीं थी इसे एक छोटे से लिफाफे में रखा गया था जब इसका विवरण चेक किया गया तो यह पता लगा कि उनमें से '20000 उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के लिए रखे गए थे एक अन्य लिफाफे में '3000 एक उनकी मिनी मुनीम जी की बेटी की शादी के लिए रखे गए थे तो तीसरे लिफाफे में '1000 थे जो एक अन्य महेश बाबू की छोटी कन्या के लिए थे चौथे लिफाफे में '500 था जो कि शिक्षण की सेवा करने वाले एक नौकर के लिए उन्होंने रख छोड़ा था।

1917 में जब गांधी ने चंपारण सत्याग्रह की शुरुआत की तो वहां के किसानों का नेतृत्व श्री कृष्ण सिंह ने ही किया था। 21 अक्टूबर 1987 को जब वह ननिहाल नवादा जिले के खंडवा गांव में जन्मे तब उनके परिवार में खुशी की लहर थी। हालांकि उनके पैतृक भूमि बरबीघा जिले माहूर में है बड़े होते ही उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने का पूरा मन बना लिया और वह उसमें शामिल भी हुए स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने का मुख्य कारण था गांधी जी द्वारा किया गया स्वतंत्रता के लिए आवाहन और उस समय श्रीकृष्ण की ही तरह और भी बहुत से ऐसे युवा और अन्य लोग थे जो कि

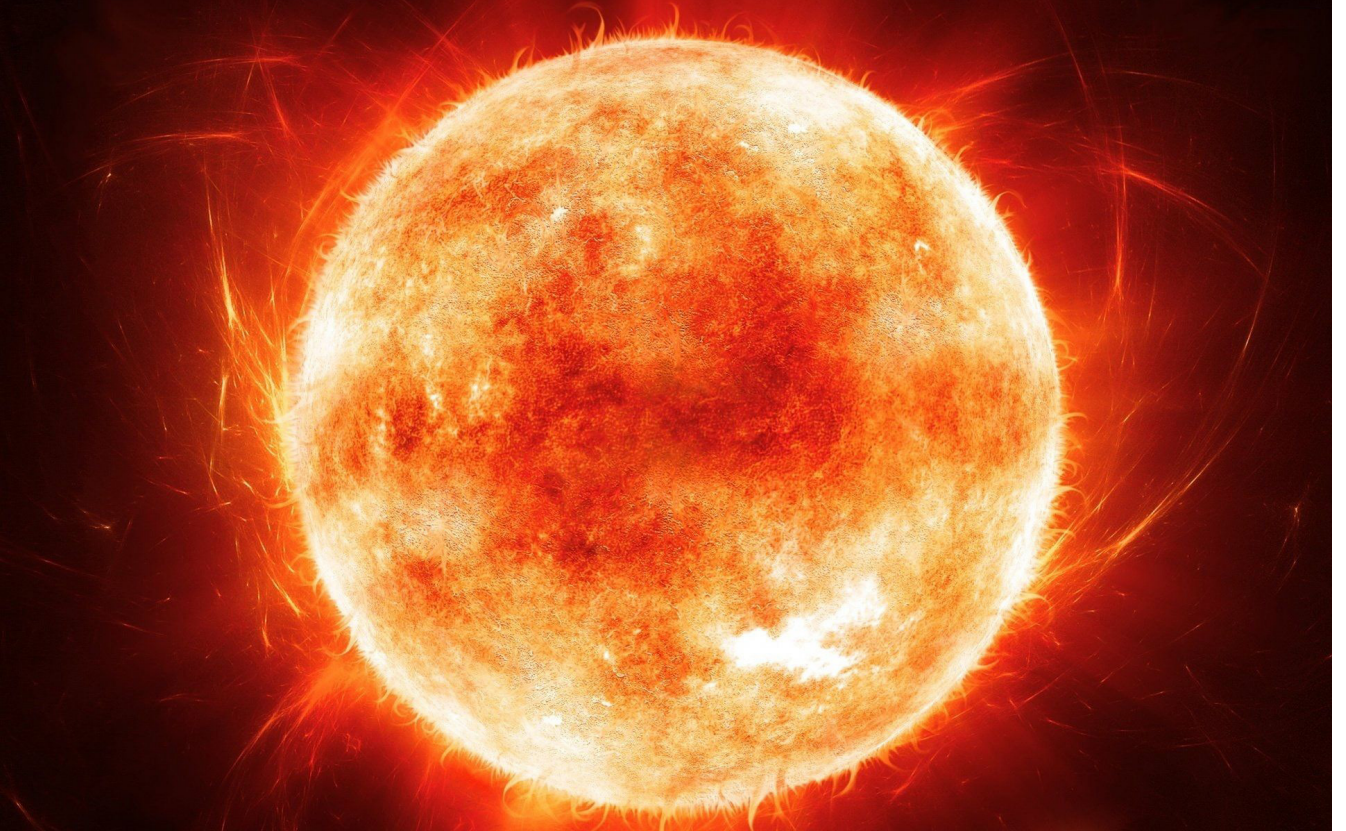
गांधीजी के आवाहन पर एक साथ कंधे से कंधा मिलाकर के उठ खड़े हुए थे देश की स्वतंत्रता का सपना का सपना साकार करने के लिए।

श्री कृष्ण ने महज 10 साल के कार्यकाल में बिहार में उद्योग कृषि शिक्षा स्वास्थ्य कला और कई ऐसे बड़े सामाजिक कार्य किए जिसके कारण वहां की जनता उन्हें देवता की तरह पूछती है। श्री कृष्ण के समय में ही भारत का पहला खाद कारखाना, सिणधरी और बरौनी रासायनिक खाद घर का कारखाना, एशिया का सबसे बड़ा इंजीनियरिंग कारखाना, भारी उद्योग निगम हटिया, देश का सबसे बड़ा स्टील प्लांट सैल बोकारो बरौनी, डेयरी एशिया का सबसे बड़ा रेलवे यार्ड, गडरा आजादी के बाद गंगोत्री से गंगासागर के बीच पहला रेल मार्ग आदि ऐसे कई उदाहरण हैं जिनको बताते हम थक जाएंगे मगर श्री कृष्ण सिंह की उपलब्धियां कम नहीं होने वाली ऐसे उच्च व्यक्तित्व के थे श्री कृष्ण सिंह।

अंत में, हम कह सकते हैं कि श्रीकृष्ण सिंह एक समर्पित राजनेता, समाजसेवक और देशभक्त थे। उनकी जीवनी हमें सिखाती है कि अगर हम समाज के लिए और देश के लिए समर्पित होंगे तो हम सफल हो सकते हैं और अपने समाज और देश के लिए कुछ अच्छा कर सकते हैं। श्री कृष्णा देव सिंह के जीवन में बहुत से उपलब्धियां भी आईं वे बिहार के द्वितीय वित्त मंत्री भी रहे 5 जुलाई सन 1957 से लेकर के 31 जनवरी 1961 तक बाद में वह भारतीय संविधान सभा के सदस्य भी हुए 9 दिसंबर 1946 से 26 जनवरी 1950 तक बिहार में उनका मुख्यमंत्री का कार्यकाल 20 जुलाई 1937 से 31 अक्टूबर 1939 तक चला श्रीकृष्ण सिंह को उनके कुछ अपनों से भी बुलाया जाता था जिसमें से एक नाम था श्री बाबू और दूसरा जो सबसे चर्चित नाम था वह था बिहार केसरी।



# मिलान का मिलावट गणित अंत-परिणाम भक्षण



## सुमनलता

प्रकृति में सूर्य की वास्तिकता क्या है इस खोज ने पृथ्वी वरसी मानव धरा को ब्रह्मांडीय भूगोल से निष्कासित कर अनन्त अंत में विलीन कर दिया है। सूर्य की परिभाषा मात्र खगोल विज्ञान में खगोल परिभाषा नहीं है जैसा कि मानव गंध ने समझा कि वो सूर्य के बारे में या सूर्य के जितने करीब और जितनी जानकारी लेकर जाएंगे वो ब्रह्मांड के बारे में उतनी ही गहराई से जान पाएंगे और अपने वजूद को बचा पाएंगे, अर्थात् सम्पूर्ण प्रयास वजूद को अस्तित्व को बचाने के लिए हो रहे है जब की पृथ्वी सिद्धांत की भट्टी में पक रही वह धरा है विज्ञान है जिसकी जलवायु ही प्रदूषण है जिसकी जलवायु में सिद्धांत की घोल स्वशन के रूप में मिला है को पृथ्वी वासियों को ब्रह्मांड से अनन्त अंत करने के लिए स्वयं प्रकृति द्वारा तैयार किया गया ऐसा रसायनिक मिश्रण है जिस में जितनी मिलावट होती चली गई अनेको रूपों

विज्ञानों एवम् गंधो के माध्यम से मानव गंध धरा कि मूल गूढ़ अवस्थाए उतनी ही उभरती चली गई, भ्रम का भक्षण भ्रम से करना प्रकृति कि पारदर्शी दर्पण प्रणाली थी जिसमें माया को भी अपने ही मोह से इस तरह मोह हो गया की माया अपने ही रसायनिक दबाव के घेराव में घिरती चली गई एवम् मोह पे माया का रसायन हावी हो गया जिससे मोह का विज्ञान खोखला होता गया, इन समस्त कलाओं को प्रकृति की पृथ्वी सिद्धांत क्रिया मानव धरा को कर्म विज्ञान से परिपक्व सिद्धांत करती हुई रसायनिक द्रव्यता के ब्लैक होल में अनंती अंत खात्मा करती जा रही है।

विस्तार की परियोजना इतनी थी कि संसाधनों कि ऊर्जा की गर्मी जितनी बढ़ती चली गई मानव विज्ञान उतनी ही तीव्रता से सिद्धांत हो कर पकते चले गए, एवं संकुचन की अवस्था यह है की विस्तार की गरिमा जितनी बढ़ती चली



रसायनों एवम् उनकी अभिक्रियाओं पे नियंत्रण कभी किसी भूगोल का हो ही नहीं सकता क्योंकि रसायनों की स्वाभाविक यात्रा सिद्धांत के सूर्य से परिपक्व होती पूर्ण चन्द्रमा शून्यता कि भक्षणी अनन्ती अंत क्रिया है। जीवन मार्ग में गतिमान हो रहे हर कर्म के प्रत्येक अवस्था को अर्थात जो भाव जिन इच्छाओं एवम् जिस प्रकार के भूगोल कर्म भाव का निर्माण किया है उसे भोगना मानव मृदा की अनिवार्यता में आ गया है प्रकृति जीवन यात्रा के पूर्व गर्भपात का भक्षण शेष अनन्ती अंत विज्ञान से करती हुई, प्रकृति मार्ग यात्रा विज्ञान का रासायनिक शून्य पारा न्याय कर रही है, आरंभ को अंत में मिला कर सम्पूर्ण मूलतः का अंत कर रही है।



गई मानव विज्ञान की उर्जा उतनी ही सूक्ष्म रूप में संकुचित होते हुए अपने शेष अवस्था में सिक्वोरिटी चली आई है अर्थात संसाधनों की उर्जा अविष्कारों का विकास जितनी ही तीव्रता से होती चली गई मानव की उर्जा मानव की आयु उतनी ही कम होती चली गई क्योंकि हस्तक्षेप का विज्ञान इतना तीव्र हो गया कि प्रदूषण की मात्रा अपने उच्चतम अवस्था पर उभर आई जिसे एक आपदा या संघर्षपूर्ण कहना मानव धरा का वह भ्रम है जो स्वयं विकसित, विकासशील दर्पण के रूप में विज्ञान के उभार के रूप में मानव बुद्धि के मूल कला को गुड़ अवस्था को उभारती चले आए अर्थात मानव की धरा अपने अनंत अंत की सीमा रेखा की उस धरा पर खड़ी है जहां से हर एक यात्रा हर एक पल हर एक अभिव्यक्ति अनंत अंत की ओर ले जाती है क्योंकि मानव धर्म को पृथ्वी ने प्रकृति ने जितने भी अवसर दिए उन सभी अवसरों में मानव धार ने शोषण का ही हाथ थामा ज्ञान को ही हथियार बनाकर अज्ञान को विकलांग समझा जबकि अज्ञानता ही उसका कर्म था जिसमें अवस्थाएं एवं जीवन की कलाएं वह विज्ञान थी जिसमें किसी सोच विचार या बुद्धि प्रणाली की आवश्यकता नहीं थी केवल अपने पथ पर गतिमान रहना ही स्वाभाविक अभिव्यक्ति थी परंतु इसे ज्ञान के भेदन से भेद कर समय की त्रिकोणीय अवस्था से विच्छेदन करना, ज्ञान का अस्त्र तो बना लेकिन वह अज्ञानता का भेद नहीं कर पाया स्वयं ज्ञान का खोज करने वालों का भेदन करने लगा अर्थात ज्ञान का अस्त्र ज्ञान के ही विज्ञान को खत्म करने लगा, यह प्रक्रिया प्रकृति की पारदर्शी दर्पण न्याय प्रणाली थी जिसमें हर अवस्था का एक विकास बनाना विकल्प बनाना मानव विज्ञान का स्वभाव है था एवं विकल्पों में अनिवार्यता को विलीन करना प्रकृति का रासायनिक स्वभाव था जिससे प्रकृति विकल्पों का भक्षण अनिवार्यता के आंतरिक रासायनिक अभिव्यक्ति की आत्मिक यात्रा के रूप में अंकित करती चली गई मिलान से मिलान

के मिलावटों से प्राप्त होते गए परिणामों का मिलान एवम् मिलावट भक्षण अनन्त अंत करती जा रही प्रकृति।

विकल्पों का भक्षण प्रकृति अनिवार्य विज्ञान से करती हुई जीव तत्व की मूलतः को उभारती हुई रासायनिक एवम् भूगोल रूप के समस्त मिश्रणों का अवसर भक्षण करती है जिसके अन्तर्गत विकल्प एवम् अनिवार्यता जीवन कर्म विज्ञान को परिपक्व करती प्रकृति की संकुचन विस्तार प्रणाली है अर्थात वह पारा केंद्र बिंदु जो स्पिंग की तरह कार्य करती हुई कभी विकल्प को अनिवार्य बना कर संकुचन विस्तार करती है तो कभी अनिवार्यता पे गतिमान रहने को अनिवार्य करती हुई संकुचन विस्तार करती है कब किस अवस्था से किस विज्ञान एवम् विधा का अनन्ती अंत कर रही है प्रकृति, इस प्रवाह विज्ञान को ज्ञात कर उसे में सुधारवादी हस्तक्षेप करना ब्रह्माण्ड के किसी भी पदार्थ तत्व के लिए असंभव है क्यों कि प्रकृति कि प्रत्येक अवस्था सिद्धांत है वहीं पारा है, जिसपे किसी भी प्रकार के बाह्य जगत का या हस्तक्षेप की धारा अपनी किसी भी प्रकार कि सत्ता को स्थापित नहीं कर सकती है बल्कि प्रकृति में प्रत्येक जीव पदार्थ पारा के सिद्धांत क्रिया से ही गतिमान है जो स्वसन ऊर्जा विज्ञान बनकर कर्म विज्ञान को पका रही हैं विकल्प एवम् अनिवार्यता एक ही बिंदु अर्थात भक्षण से निकलती भक्षण में ही अंत होती ध्वनि तरंगे हैं, जिस के अंतर्गत विकल्प पे चलना भूगोल कि स्वाभाविक चरारित्रिक विशेषता है स्वभाव है एवम् अनिवार्यता रसायनों कि स्वाभाविक कला है जो भूगोल के गणित को परिपक्व करती है।

भूगोल में कुछ और रसायन में कुछ यह कला केवल मानव मृदा में है अन्य किसी भी जीव में एक ही अवस्था रहती है और उसी अवस्था में भारमुक्त रहे कर उनकी यात्रा अपनी संपूर्णता को पूर्ण कर पूर्ण यात्रा का अंकन एक बार कि यात्रा विज्ञान से कर लेती है एवम् मानव मृदा में मानव ने स्वं के भूगोल को तो ठग लिए दिमागी गणित एवम् अहंकारी

व्यंग सुधारवादी हस्तक्षेप कि विकलांग प्रणाली से परन्तु रसायनिक रूप को ऊर्जा को, विज्ञान को, नहीं ठग पाए रसायन को मूर्ख नहीं बना पाए। उस पे नाकबों कि परतो को एकत्र नहीं कर पाए, यही प्रकृति कि महानता है कि मानव गंध विधा के प्रथम शोषणवादी पारा कंग को भ्रम होना कि उस कि प्रकृति को जीतने कि काल्पनिक इच्छा सफल हो गई तो यह भी प्रकृति कि हि माया थी जिसने प्रथमेन्द्र मानव पारा गंध को उसी के रासायनिक क्रिया से बनी कल्पना इच्छा एवम् अपरिपक्वता में प्रकृति की सिद्धांत परिपक्व जलवायु ने मोह का घेरा बना कर विस्तार हेतु समस्त संसाधन उपलब्ध कराती हुई प्रकृति ने मानव जीवन के समस्त पृष्ठों को स्वकाल पुस्तिका बनती गई जिसे परिपक्व करती महाकाल पारा अस्वाथा प्रथमेन्द्रिया भावो को एक ही पात्रता या गठरी में एकत्र कर शेष पुस्तिका बना रही थी अशोक शून्य विज्ञान के स्वरूप में, जिसमे अभिक्रियाओं कि रसायनिक यात्रा वह चुम्बकीय एवम् गुरुत्वाकर्षण तरंग बल है जो सिद्धांत के अनुसार अशोक शून्य विज्ञान मृदा में उन्हीं तरंगों एवम् विज्ञान अणु कंग को ठेरने का विस्तार अवसर देती है जिसे कि वह अवस्था परिपक्व हो कर अपरिपक्वता के परिपक्व सूर्य का चंद्रमा भक्षण हो अर्थात् प्रकृति पारा कि सिद्धांत भूमि रसायनिक विश्व है जिसमें रसायनों कि भूगोलिया अवस्था वह विभिन्न विधा भूगोल है जो सजीवता का संचालन करते हुए विद्या विज्ञान का अनन्ती अंत करने वाली स्वतंत्र देश है जिस में न्याय की धारा स्वत गतिमान कर्म विज्ञान है एवम् नागरिक रसायनिक चरित्र है। अशोक शून्य विज्ञान के अंतर्गत एवम् नियंत्रित संचालित रसायनिक विश्व धरा शेष सूर्य पारा से महाकाल अभिक्रिया करती हुई रसायनिक चरित्र एवम् सजीव भूगोल का भी अंत करती स्वतंत्र अनंत न्याय प्रणाली है।

विकल्प और अनिवार्यता क्या है यही खोज कर रही है मानवीय धरा परन्तु उस अवस्था को ज्ञात करना प्रकृति के इस रहस्य

को खोज लेना अवस्मभव है, प्रकृति को जिस भूगोल एवम् जिस भूमि जीव से जो कराना होता है वो करा लेती है फिर भूगोल चाहे कितने ही मार्गों को क्यों ना बना ले अंततः उसे जाना ही वहीं होता है जहां उस की कर्म की सिद्धांत तरंग उसे ले जाना चाहती है, जो विकल्प या अनिवार्यता किसी भी रूप प्रारूप में हो सकती है। रसायनों एवम् उनकी अभिक्रियाओं पे नियंत्रण कभी किसी भूगोल का हो ही नहीं सकता क्योंकि रसायनों कि स्वाभाविक यात्रा सिद्धांत के सूर्य से परिपक्व होती पूर्ण चन्द्रमा शून्यता कि भक्षण अनन्ती अंत क्रिया है। जीवन मार्ग में गतिमान रहे कर कर्म के प्रत्येक अवस्था को अर्थात् जो भाव जिन इच्छाओं एवम् जिस प्रकार के भूगोल कर्म भाव का निर्माण किया है उसे भोगना मानव मृदा की अनिवार्यता में आ गया है प्रकृति जीवन यात्रा के पूर्व गर्भपात का भक्षण शेष अनन्ती अंत विज्ञान से करती हुई, प्रकृति मार्ग यात्रा विज्ञान का रासायनिक शून्य पारा न्याय कर रही है, आरंभ को अंत में मिला कर सम्पूर्ण मूलतः का अंत कर रही है।

प्रकृति की गतिमान अवस्था है प्रवाह मार्ग विज्ञान जिससे पदार्थ की यात्रा गतिमान रहेती है अर्थात् कर्म कि ऊष्मा एवम् परिपक्वता कि जलवायु रसायनों की यात्रा को तृप्ति के कोष तक ले जाने कार्य अतृप्त अवस्था को पूर्ण कर करती है अतृप्त अवस्था को प्रकृति प्रवाह विज्ञान के सिद्धांत गंध से पकाती हुई शेषता के चरम सीमा तक ले जाती है जहां से विज्ञान को ईंधन मिलता है उसी श्रोत को जब प्रकृति परिपक्वता के चरम सीमा तक ले जाती है तब महाकाल की सिद्धांत अवस्था अंत से आरम्भ की भक्षण क्रिया के अंतर्गत ईंधन का अनन्ती अंत करती है और जब ईंधन का ही अंत हो जाता है तब पुनः किसी भी विज्ञान का ना ही निर्माण होता है और ना ही विस्तार होता, जिसके अंतर्गत प्रकृति मानव गंध भूगोल एवं रसायन विज्ञान के मार्ग को भी ईंधन विज्ञान के पारा गर्भ कोष अर्थात् कल्पना, इच्छा, मोह, माया से बनी जलवायु गणित विकल्प एवम्

अनिवार्यता में मानव के ईंधन को पका रही थी, जो वर्तमान कि सिद्धांत कोष कर्म विज्ञान प्रसारण नभ पटल पे अंकित हो कर मानव को हकीकत के आईने से रूबरू करा रही है, अभी तक जो मानव कि कला दर्पण को ही छलावे भ्रम का नकली सत्यापन भ्रमित केन्द्र बनाकर अपरिपक्वतज् के कच्चे रसायनो को एकत्र कर जीवन मृत्यु का नाट्य खेल खेल रही थी, वह क्रिया अब विफल हो रही है क्योंकि प्रकृति ने ईंधन का भक्षण कर अंत (परिणाम) को आरम्भ में मिला कर मानव के समस्त कार्य विचार, कल्पना, इच्छा विफल हो रहे, अब प्रकृति में मानव भूगोल को उनके द्वारा बनाई गई प्रत्येक अवस्था को भोगना एवम् अवस्था के चरम सीमा तक जाना माना का अनन्ती अंत है करुणा दया का भक्षण कर प्रकृति सेतू मार्ग का अंत कर रही जिस ने प्रकृति रचना कार के सिद्धांत को विकलांग समझने के अहंकार में हस्तक्षेप का प्रवेश दिव्य प्रकाश मार्ग दर्शक विज्ञान के रूप में लेकर एहसास मार्ग विज्ञान पे व्यंग कर कच्चे सूर्य भाव को दर्पण पे मूल सूर्य भाव दिखा कर सम्पूर्ण अपरिपक्व लंका को स्थापित किया, प्रकृति सेतू का अंत मार्ग स्वतंत्र प्रवाह से करती हुई आजाद विज्ञान से प्रत्येक गंतव्य रूपी अंगो का मूल विज्ञान अनन्त अंत कर रही, दर्पण को प्रकृति ने पारदर्शी बनाया था उसपे कल्पना इच्छा चाहत श्वसन का लेप लगाना दर्पण को एक तरफा बनना मानव का भ्रम अहंकार विज्ञान था जिसपर असली नकली विज्ञान को दिखा कर मार्गो को केवल डायवर्ट किया गया, प्रकृति शेषता के गणित को शेष पारा से अनन्ती अंत कर पृथ्वी पे सूर्य विज्ञान का न्याय करती जा रही है।



# गुणात्मक विकास

उमेश

प्रकृति अपने नियम के अनुसार गमन करती है। उसमें रहने वाले सभी जीव उसी नियम के अंतर्गत गति करते हैं। हम जब किसी अजीब परिस्थिति में फंसते हैं और परेशान हो भगवान को कोसते हैं तब हम यह नहीं समझ पाते कि यह किसी और के द्वारा नहीं बल्कि हमारे द्वारा ही रची हुई है। हमारी ही इच्छाओं से बनी सूक्ष्म मानसिक तरंगें हमारे लिए ऐसी संरचनाओं का निर्माण करती हैं जो कि कभी न कभी हमारे समक्ष सत्य रूप में घटित होती है। प्रकृति के इस वैज्ञानिक सत्य से कोई नहीं बचता। हम सामाजिक प्रभाव में आकर अपनी इच्छाओं को दबा सकते हैं परन्तु मिटा नहीं सकते। वे अवसर देखकर अपना असर दिखाती हैं।



हम सभी निरोगी रहना चाहते हैं आनन्दित रहना चाहते हैं। जो भी जागरूक है वह कहेगा कि हमें इसके लिए शांत होना होगा, शांत होने से तात्पर्य यह कि हमें कम से कम विचार करना होगा। विचार जहाँ हमारी ऊर्जा को क्षीण करते हैं वहीं दूसरी ओर विचारशक्ति हमारे लिए बहुत सी ऐसी तरंगों कि व्यूह रचना कर देती है, जो कि कर्म बंधन के रूप में हमें भोगनी पड़ती है। यह भोग हमें हमारी ही आनन्दित रहने की आशा से दूर ले जाती है और इसी फेर में हम अपनी सेहत का भी ध्यान नहीं रख पाते।

सिद्धों और संतों ने हमें यह भी बताया है कि हमें दुख-सुख दोनों ही अवस्थाओं में सम रहना चाहिए इसका अर्थ यह है कि हमारे साथ जो हो रहा है उसे ईश्वर की इच्छा मानकर उसका स्वागत कर निर्वाह करना चाहिए न कि अपने को वेग में डालकर उसमें अनजाने ही कार्य कारण के बंधन में बंधना चाहिए। जो हमारा है जो हमारे लिए उचित है वैसे ही प्रकृति हमें देती है। प्रकृति द्वारा हमें जो मिले उसे प्रसाद समझ ग्रहण करना चाहिए। हम जब भी बाहरी चीजों

से प्रभावित हो अपने लिए कुछ अगल करने का प्रयास करते हैं तो हम अपनी सूक्ष्म यांत्रिकी पर कुछ परत चढ़ाते जाते हैं जो कि समय अनुसार हमारे समक्ष आती है और हमारे द्वारा की गई इच्छा के अनुसार फल देती है।

प्रकृति अपने नियम के अनुसार गमन करती है। उसमें रहने वाले सभी जीव उसी नियम के अंतर्गत गति करते हैं। हम जब किसी अजीब परिस्थिति में फंसते हैं और परेशान हो भगवान को कोसते हैं तब हम यह नहीं समझ पाते कि यह किसी और के द्वारा नहीं बल्कि हमारे द्वारा ही रची हुई है। हमारी ही इच्छाओं से बनी सूक्ष्म मानसिक तरंगें हमारे लिए ऐसी संरचनाओं का निर्माण करती हैं जो कि कभी न कभी हमारे समक्ष सत्य रूप में घटित होती है। प्रकृति के इस वैज्ञानिक सत्य से कोई नहीं बचता। हम सामाजिक प्रभाव में आकर अपनी इच्छाओं को दबा सकते हैं परन्तु मिटा नहीं सकते। वे अवसर देखकर अपना असर दिखाती हैं।

महामना श्री अशोक मानव जी कहते हैं कि “प्रकृति दबने वाली कोई अवस्था नहीं यदि



किसी चीज के बीज को जमीन मिल गई है और जीवन मिला है, तो उसकी प्रकृति बीज रूप में जमीन पाई हुई है। उस बीज को जब भी अवसर मिलेगा वह प्रकट हो जायेगी।” यह हमारी विचार शक्ति कि सूक्ष्म तरंगें हैं जो कि बीज रूप में हमारे अस्तित्व के साथ जुड़ जाती है और जब उस बीज का समय आता है। जब हमारे द्वारा छोड़ी गई विचार तरंग पूर्ण विकसित हो जाती है तब वह अपना आकार लेकर हमारे सामने परिस्थिति विशेष या घटना के रूप में हमारे भोगने के लिए आती है। हम उसे यूँ ही सम भाव में रहते हुए भोग लेते है तो यह उचित रहता है। परन्तु उसमें यदि हम अपनी इच्छा, प्रभाव या दबाव आदि का वेग जोड़ देते है तो वह एक बीज रूप बन हमारे सूक्ष्म आयाम में एक परत बन जाती है। हम जिन्हें कर्म कहते है वे सभी हमारे से जुड़ी सूक्ष्म परत है जो कि अवसर पा कर अपना प्रभाव छोड़ती है।

समाजिक व्यवस्था में रहते हुए हम अपनी कुछ इच्छाओं को दबाने का प्रयास करते है, जो कि हम लगती है कि वे समाजिक आदर्शों के अनुसार नहीं है। महामना कहते

है कि “व्यक्ति बाहरी ज्ञान और आदर्शों के अनुसार अपनी इच्छाओं को तोलता है तो अपनी इच्छाओं को दबा देता है। परन्तु प्रकृति की व्यवस्था के अनुसार जितनी परतें रासायनिक कणिकाएं बिछि होती है, उनमें से जब जिसकी बारी आती है वह प्रकट होती है। उसके खुलते ही हमारा स्वभाव उसी प्रकार का हो जाता है। हम उसी के अनुसार जीवन गतिमान करते हुए, एक-एक चरण को पार करते हुए हर परत के अनुरूप हम कार्य करते है।” महामना आगे कहते है कि “यह प्रकृति नियम के तहत स्वतः और स्वाभाविक तौर पर प्रतिस्फुरित होता रहता है। उसको रोकने या दबाने पर बाहरी रूप में भले ही भीड़ में वह न दिखे परन्तु अतःकरण में विचार रूप में तो वह चलता ही रहता है। विचार रूप में चलते हुए उसको ईंधन मिल जाता है। ईंधन मिलने पर वह विकसित होता है और अपनी अवस्था को पूर्ण करता है।”

हम अपने इन परतों को दबा नहीं सकते यह हमारे बस में नहीं। महामना कहते है कि “जब बीज रूप में कोई अवस्था आ गई अर्थात् उसे जमीन मिल गई। अब उसके

अनुरूप जैसे ही वातावरण मिलेगा वह उसे वैसे ही परिवर्तित करते हुए विकसित होता रहेगा। बाहरी जीवन के प्रभाव, धर्म कथा आदि उसे रोक नहीं सकते।”

यहां हम सभी यह समझ सकते है कि समाज में हो रही किसी जटिल समस्या को विरोध पूर्वक दबाव से बदलना हितकारी नहीं। स्थाई और समाधान की दृष्टि से हमें उस पहलू पर भी ध्यान देना चाहिए जो कि प्राकृतिक रूप से सूक्ष्म स्तर कर कार्य कर रही है। यही बात व्यक्ति के स्तर पर भी लागू होती है। यह समझ आ जाये जो हम सभी के जीवन में जो विरोध हैं, जो टकराव है उन सभी का एक उचित समाधान खोजने में मदद मिल सकेगी।

थोड़ी अध्यात्मिक दृष्टि से देखे तो हम प्राकृतिक गति में रहते हुए सम भाव में जीकर अपने को सेहतमंद और आनन्दित रख सकते है। ऐसा जब हम भी में होने का संकल्प जागेगा तो हम एक सभ्य और सम्पन्न समाज की ओर अग्रसर हो सकते है।

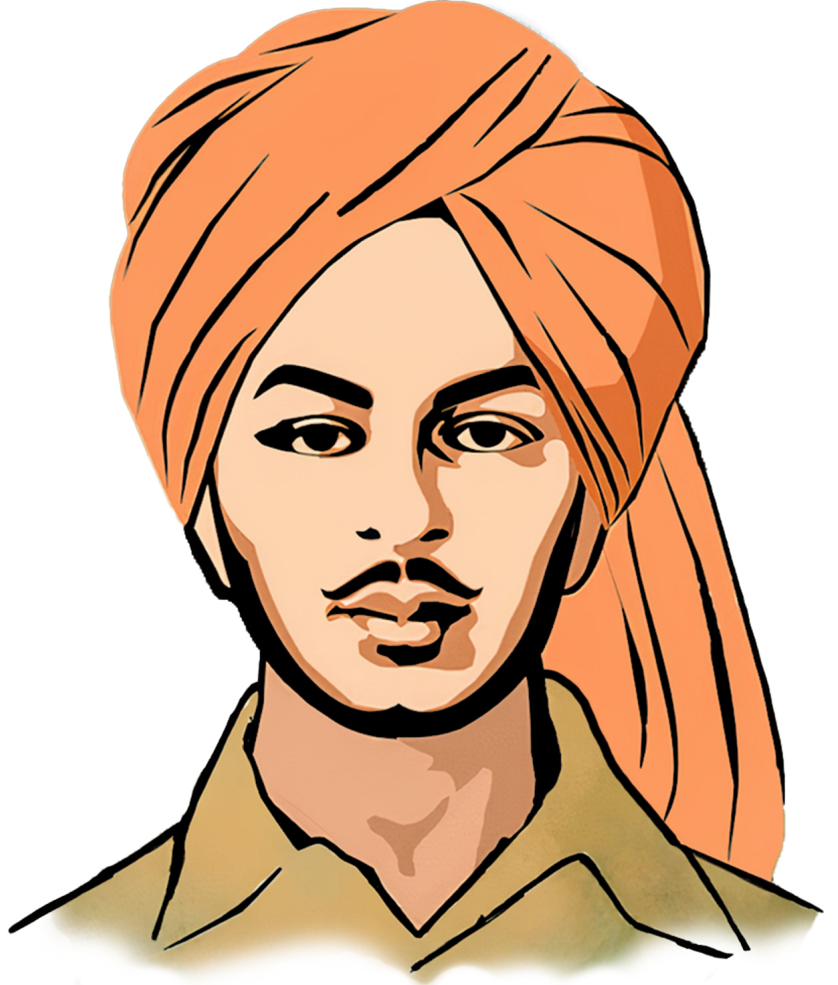


# भगत सिंह: एक विचार

अक्षय कुमार

लखनऊ

अपने जीवन के अंतिम वर्षों में भगत सिंह का मन वैयक्तिक हत्या तथा हिंसक गतिविधियों से विरक्त हो गया था। उनका प्रसिद्ध वक्तव्य था: 'पिस्तौल और बम इंकलाब नहीं लाते, बल्कि इंकलाब की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है।' इस प्रकार वे मार्क्सवाद की तरफ प्रभावित हुए। उन्होंने कार्ल मार्क्स, व्लादिमीर लेनिन तथा लियोन त्रोत्सकी को पढ़ा। लेकिन वे मार्क्स से कहीं ज्यादा लेनिन के मार्क्सवाद से प्रभावित थे। अपने लेख 'टू यंग पॉलिटिकल वर्क्स' में उन्होंने अपने आदर्श को 'नए अर्थात मार्क्सवादी आधार पर सामाजिक पुनर्निर्माण' के रूप में घोषित किया।



बात 23 मार्च 1931 की शाम की है। भगत सिंह प्राणनाथ मेहता की लाई लेनिन की जीवनी पढ़ रहे थे। अफसर ने दरवाजा खोला और कहा, 'सरदार जी, फांसी लगाने का हुक्म आ गया है। तैयार हो जाइए।' भगत सिंह के हाथ में किताब थी, उससे नज़रे उठाए बिना ही उन्होंने कहा, 'ठहरिये! एक क्रांतिकारी दूसरे क्रांतिकारी से मिल रहा है।' कुछ और पंक्तियां पढ़कर उन्होंने किताब रखी और उठ खड़े होकर बोले, चलिए!...

और इस प्रकार भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को तय दिन से एक दिन पहले फांसी दे दी गई। प्रस्तुत प्रसंग का वर्णन वीरेंद्र सिन्धु ने अपनी पुस्तक 'शहीद भगत सिंह' में किया है।

हमारे बीच में से अधिकांश लोग भगत सिंह को मात्र एक क्रांतिकारी की तरह ही मानते हैं परन्तु भगत सिंह मात्र एक क्रांतिकारी ही नहीं थे। भगत सिंह एक विचार

है। एक दर्शन, जिसने क्रांतिकारी गतिविधियों को एक दार्शनिक आयाम दिया। भगतसिंह की जेल नोटबुक मिलने के बाद भगतसिंह के चिन्तनशील व्यक्तित्व की व्यापकता और गहराई पर और अधिक प्रकाश पड़ा है। यह सच्चाई भी पुष्ट हुई है कि भगतसिंह ने अपने अन्तिम दिनों में सुव्यवस्थित एवं गहन अध्ययन के बाद बुद्धिसंगत ढंग से मार्क्सवाद को अपना मार्गदर्शक सिद्धान्त बनाया था। हालांकि यह आश्चर्यजनक है कि किस प्रकार उन्होंने ब्रिटिश सेंसरशिप के बावजूद पठन हेतु पुस्तकें और सामग्री एकत्रित की और महज 23 वर्ष की छोटी सी उम्र में चिन्तन का जो स्तर उन्होंने हासिल कर लिया था, वह उनके युगद्रष्टा युगपुरुष होने का ही प्रमाण था। यह सोचना गलत नहीं है कि भगत को 23 वर्ष की अल्पायु में यदि फाँसी नहीं हुई होती तो राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष का इतिहास और भारतीय सर्वहारा क्रान्ति का इतिहास शायद कुछ और ही ढंग से लिखा जाता। बहरहाल यह उतना ही दुखद है कि आज भी इस देश के शिक्षित लोगों का एक बड़ा हिस्सा भगत को एक ओर महान तो मानता है, पर यह नहीं जानता कि 23 वर्ष का वह युवा एक महान चिन्तक भी था।

किसी भी महान व्यक्ति का अध्ययन तत्कालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। यदि भगत सिंह का झुकाव मार्क्सवाद की तरफ हुआ तो उसके पीछे भी कई कारण विद्यमान थे। दरअसल 1917 की रूस की क्रांति के बाद मार्क्सवाद और समाजवाद पूरी दुनिया में बूम कर गया था। सर्वहारा वर्ग द्वारा निरंकुश शासन पर विजय को हर जगह सराहना मिली और इसे सर्वहारा (शोषित) वर्ग के पक्ष में क्रांति कहा गया। दूसरी बात, 1920 के दशक में पूरे विश्व में समाजवाद की लहर दौड़ रही थी। यही वजह थी कि राष्ट्रीय आंदोलन के कई पुरोधे भी उस लहर से अछूते न रहे।

सुभाष चन्द्र बोस और जवाहर लाल



नेहरू भी समाजवाद के काफी प्रभावित थे। इसके अलावा, 1929-1930 के समय वैश्विक महामंदी के कारण पूंजीवाद की सर्वश्रेष्ठता का भ्रम टूटा और उसकी खामियां उभरकर सामने आईं। इसी दौर में, दुनिया को समाजवाद पूंजीवाद के एक श्रेष्ठ विकल्प के रूप में दिखाई देने लगा। यहां तक कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस भी समाजवाद की लहर से अछूती ना रही। यही वो परिस्थितियां थीं जिनके आलोक में भगत सिंह और अन्य क्रांतिकारी भी मार्क्सवाद और समाजवाद की तरफ आकर्षित हुए।

## आखिर क्या था भगत सिंह का मार्क्सवादी समाजवाद?

अपने जीवन के अंतिम वर्षों में भगत सिंह का मन वैयक्तिक हत्या तथा हिंसक गतिविधियों से विरक्त हो गया था। उनका प्रसिद्ध वक्तव्य था: 'पिस्तौल और बम इंकलाब नहीं लाते, बल्कि इंकलाब की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है।' इस प्रकार वे मार्क्सवाद की तरफ प्रभावित हुए। उन्होंने कार्ल मार्क्स, व्लादिमीर लेनिन तथा लियोन त्रोत्सकी को पढ़ा। लेकिन वे मार्क्स से कहीं ज्यादा लेनिन के मार्क्सवाद से प्रभावित थे। अपने लेख 'टू यंग पॉलिटिकल वर्कर्स' में उन्होंने अपने आदर्श को 'नए

अर्थात मार्क्सवादी आधार पर सामाजिक पुनर्निर्माण' के रूप में घोषित किया। भगत सिंह का मार्क्सवाद तथा समाज के सम्बन्ध में मार्क्स की वर्गीय अवधारणा में पूर्ण विश्वास था। वे कहते थे 'किसानों और गरीबों को सिर्फ विदेशी शोषणकर्ताओं से ही मुक्त नहीं होना है अपितु उन्हें पूंजीपतियों और जमींदारों के चंगुल से भी मुक्त होना है।' उन्होंने समाजवाद की धारणा को वैज्ञानिक ढंग से परिभाषित किया, जिसका अर्थ था पूंजीवाद और वर्ग प्रभुत्व का पूरी तरह अंत। भगत सिंह पूंजीवाद की अवधारणा को अस्वीकार करते हैं। उन्होंने पूंजीवाद की आलोचना सामाजिक और राजकीय दोनों परिप्रेक्ष्य में की। अपनी जेल डायरी में वे लिखते हैं,

## लोकतन्त्र सिद्धान्ततः

राजनीतिक और कानूनी समानता की व्यवस्था है, किन्तु ठोस और व्यावहारिक रूप में यह झूठ है, क्योंकि जब तक आर्थिक सत्ता में भारी असमानता है, तब तक कोई समानता नहीं हो सकती, न राजनीति में और न कानून के सामने। "पूँजीवादी शासन में लोकतन्त्र की सारी मशीनरी शासक अल्पमत को श्रमिक बहुमत की यातनाओं के जरिये सत्ता में बनाये रखने के लिए काम करती है।"

जेल में वह सारी मानवजाति के हित

में अर्थव्यवस्था और प्राकृतिक संपदा पर वितरण हेतु विश्व समाजवादी क्रांति के विचार में लीन रहे। जेल डायरी के पृष्ठ 190 पर उन्होंने लिखा 'समाजवादी व्यवस्था: प्रत्येक से उसकी योग्यता के अनुसार, प्रत्येक को उसकी आवश्यकता के अनुसार।' इस प्रकार भगत सिंह के विचारों में समाजवाद की ओर झुकाव काफी पहले से दिखाई देने लगा था। किंतु बाद में वे वैयक्तिक हिंसा, हत्या और क्रान्तिकारी गतिविधियों से अरुचि से भरने लगे थे। उसके पश्चात वे मार्क्सवाद की ओर तेजी से झुकते हुए प्रतीत हुए। यही कारण था कि 1928 में उन्होंने हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन का नाम परिवर्तित कर हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) कर दिया। और क्रान्ति की पुनर्व्याख्या करते हुए एवं स्वतंत्र राष्ट्र के निर्माण हेतु एक ठोस कार्ययोजना प्रस्तुत की। यही विचार उनके भारत नौजवान सभा के गठन के समय युवाओं को सशक्त करने में दिखाई देता है। यदि वह अधिक समय तक जीवित रहते तो उनमें वह प्रतिभा थी कि वह राष्ट्र के भविष्य को भी निर्धारित कर सकते थे।

राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान, तत्कालीन समाज विभिन्न समस्याओं से भी उलझ रहा था। भगत सिंह मार्क्सवाद में विश्वास रखने के साथ साथ सामाजिक समस्याओं पर चिंतन भी किया करते थे। जेल में उन्होंने चार पुस्तकें लिखीं थी, दुर्भाग्य से जिनकी पांडुलिपियां आज उपलब्ध नहीं हैं। इसके अतिरिक्त 'किरती' और 'वीर अर्जुन' समेत कई पत्रिकाओं में उन्होंने लेख लिखे। इसी परिदृश्य में उन्होंने कुछ लेख लिखे। जोकि इस प्रकार हैं,

### 'अछूतों की समस्या' का हल

1920 के दशक में जब राष्ट्रीय आंदोलन अपने प्रवाह में चल रहा था और जन आंदोलन में तब्दील हो रहा था। अंबेडकर भी राजनीति में सक्रिय भूमिका में आ गए थे।

और अछूत समस्या की गुत्थी सुलझाने के प्रयत्न प्रारंभ हो गए थे। इसी बीच भगत सिंह ने 'किरती' नामक पंजाबी पत्रिका में 'अछूत का सवाल' लेख लिखा जोकि जून 1928 में प्रकाशित हुआ। इस लेख में श्रमिक वर्ग की शक्ति व सीमाओं का अनुमान लगाकर उसकी प्रगति के लिए ठोस सुझाव दिये गये थे। सिंध के श्री नूर मोहम्मद का संदर्भ देते हुए वो कहते हैं कि जब तुम एक इंसान को पीने के लिए पानी देने से इंकार करते हो, स्कूल में पढ़ने का अधिकार नहीं देते, भगवान के मंदिर में प्रवेश का अधिकार नहीं देते और एक इंसान के समान अधिकार देने से इंकार करते हो तो तुम अधिक राजनीतिक अधिकार मांगने के अधिकारी कैसे बन गए? वे कहते हैं कि एक कुत्ता हमारी गोद में बैठ सकता है परंतु एक इंसान के स्पर्श मात्र से बस धर्म भ्रष्ट हो जाता है। आखिर यह कैसी विडंबना है? इस समस्या ने निदान में वह कहते हैं कि सबसे पहले यह निर्णय कर लेना चाहिए कि सब इन्सान समान हैं तथा न तो जन्म से कोई भिन्न पैदा हुआ और न कार्य-विभाजन से। वे अछूत कौम को स्पष्ट रूप से संगठित होने का आह्वान करते हैं।

भगत सिंह अछूतों और श्रमिकों को असली सर्वहारा के रूप में घोषित करते हुए कहते हैं दूसरों की ओर मुंह न ताको, संगठित हो जाओ। सामाजिक आंदोलन से क्रांति पैदा करदो और राजनीतिक, आर्थिक क्रांति के लिए कमर कस लो।

### 'सांप्रदायिक समस्या' का हल

असहयोग और खिलाफत आंदोलन की समाप्ति के बाद मुस्लिम लीग और कांग्रेस के रास्ते अलग अलग हो गए। और इसी दशक में देश में सांप्रदायिक दंगे भड़कने लगे। 1926 में कलकत्ता में एक भयानक दंगा हुआ। संयुक्त प्रांत में 1923 और 1927 के बीच लगभग 88 दंगे हुए, जिनके कारण हिंदू-मुस्लिम संबंध लगभग पूरी तरह भंग हो गए। इसी समस्या पर विचार हेतु भगत

सिंह ने किरती पत्रिका में 'सांप्रदायिक दंगे और उनका इलाज' लेख लिखा। इस लेख में वे सांप्रदायिकता के आलोक में भारत के भविष्य पर प्रश्न उठते हैं। पहली बात, वे दंगों का इलाज भारत की आर्थिक दशा में सुधार को बताते हैं कि भारत के लोगों की आर्थिक हालत इतनी खराब है कि उन्हें एक दूसरे के खिलाफ भड़काना काफी आसान है। क्योंकि भूखा व्यक्ति अपने सिद्धांत ताक पर रख देता है। दूसरी बात, वे लोगों को परस्पर जोड़ने के लिए वर्ग-चेतना की समझ को आवश्यक बताते हैं। वर्ग चेतना की समझ से युक्त व्यक्ति धार्मिक दंगों में नहीं उलझता। तीसरी बात, वे धर्म को राजनीति से अलग करने पर बल देते हैं कि धर्म एक व्यक्तिगत मामला है, उसे राजनीति में शामिल नहीं करना चाहिए। भगत सिंह कहते हैं कि यदि सांप्रदायिकता को खत्म करना है तो हमें किसी भी व्यक्ति को 'इन्सान' के रूप में देखना होगा नाकी किसी 'धर्म विशेष के व्यक्ति के रूप में'।

सारत: भगत सिंह के संपूर्ण व्यक्तित्व को देखा जाए तो उन्हें मात्र क्रान्तिकारी संबोधित करना न्यायसंगत न होगा। अपितु वह एक सशक्त क्रान्तिकारी होने के साथ साथ एक विचारक, चिंतक और बुद्धिजीवी व्यक्तित्व थे। वे अन्य क्रान्तिकारियों से विशिष्ट थे क्योंकि वे राष्ट्र निर्माण का वैकल्पिक विचार रखते थे। बाद में सुभाष चन्द्र बोस ने कहा था, 'भगत सिंह युवाओं में नई जागृति के प्रतीक बन गए थे।' अन्त में शहीद भगत सिंह की इन पंक्तियों के साथ अपनी बात को विराम देता हूं।

*'दिल से ना निकलेगी,  
मर कर भी वतन की उल्फत  
मेरी मिट्टी से भी खुशबू-ए-वतन आएगी*



# आमी से गोमती तक : अंश 8

## तमाम हौसलों के साथ निकल पड़ी ज़िंदगी!

प्रफुल्ल कुमार त्रिपाठी

आकाशवाणी से सेवानिवृत्त अधिकारी

मन की उमंगें  
अब और हिलोर  
लेने लगीं। लेकिन  
आकाशवाणी  
केन्द्रों की अंदरूनी  
राजनीति से मैं तब  
तक अनभिज्ञ था  
इसलिए एकाध बार  
कुछ सीखने जाने  
पर कुछ अन्य मुझ  
जैसे 'चाहकों' ने  
ऐसी चाल चली कि  
मन खिन्न हो उठा।  
अब मैंने कार्यक्रम  
प्रोडक्शन का काम  
सीखने के लिए  
स्टूडियो जाना छोड़  
दिया। ये बातें थीं  
छोटी-छोटी लेकिन  
मेरे युवा मन पर  
इसका गहरा असर  
होता रहा।



थाम कर ज़िन्दगी का हाथ अपनी ज़िंदगी  
हौले-हौले अपने पग धरते निकल पड़ी थी। राहें  
हर ओर अपनी बाहें फैलाए हुए बुला रही थीं  
तो अजनबी लोगों और परिस्थितियों से जूझने  
में आत्मविश्वास परीक्षा लेने को तत्पर था। मुझे  
पता नहीं था कि अब पढाई के बाद किन-किन  
दौर से गुज़रना होगा, कितनी बार सूखे पत्तों  
सा बिखरना भी होगा! कभी ठहराव सी लगेगी  
ज़िन्दगी तो कभी अभाव सी। लेकिन अपने शहर  
के साहित्यिक कोहिनूर फ़िराक़ साहब ने भी क्या  
खूब कहा है – 'ये माना ज़िन्दगी है चार दिन  
की, बहुत होते हैं यारों चार दिन भी!'

आगे बढ़ूँ कि उसके पहले के कुछ वर्षों  
में घटित घटनाओं का ज़िक्र नहीं करूंगा तो  
जीवन की कुछ बहुत महत्वपूर्ण बातें बताने  
से रह जायेंगी। मेरे पिताजी आचार्य प्रतापादित्य  
उस समय के छोटे से गोरखपुर शहर के अत्यंत  
प्रतिष्ठित नागरिक और फौजदारी के बड़े सरकारी  
वकील बन चुके थे। उस समय पुलिस – नेता

और अपराधियों के संगठित तन्त्र फौजदारी  
मुकदमों में धड़ाधड़ हो रही सजा से परेशान थे।  
पिताजी यूनिवर्सिटी में विधि विभाग में पार्ट टाइम  
लेक्चरर थे ही और विधि की पढाई उन दिनों  
लगभग हर उभरने वाले युवा नेता अवश्य करते  
थे। इसके अलावा वे 'आनन्द मार्ग' संगठन के  
आचार्य और मुख्य कर्ताधर्ता थे। कुष्ठ सेवाश्रम  
के सचिव और ब्राह्मण एजुकेशनल सोसाइटी के  
सचिव भी थे। कुष्ठ सेवाश्रम एक ट्रस्ट चलाती  
थी और ब्राह्मण एजुकेशनल सोसाइटी शहर के  
तुलसीदास इंटर कालेज चलाती थी। इन दोनों  
में बहुत आर्थिक घोटाले थे जिन्हें वे प्राणप्रण  
से ठीक करने में लगे हुए थे। इतना ही नहीं  
वर्ष 1974 में छठवीं विधानसभा के गठन के  
लिए हुए विधान सभा चुनाव में पीलू मोदी की  
अध्यक्षता वाली 'स्वतंत्र पार्टी' के जिलाध्यक्ष के  
रूप में उन्होंने लगभग हर विधानसभा सीट पर  
अपने उम्मीदवार भी उतारे थे। असल में पिताजी  
की ईमानदार और संकल्पबद्ध होकर काम करने

की छवि जग जाहिर थी और इसीलिए इनको काम सौंपकर लोग निश्चिन्त हो जाते थे। पीलू मोदी जब गोरखपुर आये तो उनको बस्ती के राजघराने के श्री भानुप्रताप सिंह ने पिताजी के बारे में बताया था कि वे चुनाव में पार्टी के फंड को बर्बाद नहीं होने देंगे। यही हुआ भी। हालांकि उन दिनों कांग्रेस की आंधी में पार्टी एक भी सीट नहीं जीत सकी लेकिन हर सीटों पर लड़कर उसने अपनी नीतियों का प्रचार प्रसार किया। आगे चलाकर उसके कुछेक प्रत्याशी दूसरी पार्टी का आसानी से टिकट पाकर विधायक भी बने। जाहिर है उनके ज्ञात-अज्ञात विरोधी उनके विरुद्ध लामबंद होते जा रहे थे। इसीलिए वर्ष 1975 में जब इंदिरा गांधी ने आपातकाल लागू किया और कुछ संगठनों को प्रतिबंधित करने की घोषणा की तो आचार्य जी के इन्हीं विरोधियों ने उन पर भी डी.आई.आर. लगवा कर उन्हें गिरफ्तार करवा दिया। उनकी कोशिश मीसा (मेंटिनेंस आफ इन्टरनल सिव्योरिटी एक्ट) में निरुद्ध करवाने की थी लेकिन उनका मंसूबा कामयाब नहीं हो सका। हमारे परिवार से जुड़े तत्कालीन विधान परिषद सदस्य और पूर्व आई. ए. एस. पं. एस. एन. मणि त्रिपाठी के हस्तक्षेप और सक्रियता से ऐसा हो सका। लेकिन उनके साथ ही गिरफ्तार हुए उनके दो अनन्य गुरुभाई आचार्य रघुनाथ प्रसाद और आचार्य सच्चिदानन्द पर मीसा लग ही गया और उन्होंने बहुत कष्ट भी झेले। हमारे परिवार में यह दौर बहुत ही संकट का रहा है इसीलिए इसकी चर्चा मैंने पहले भी की है।

वर्ष 1976 में मैंने विधि स्नातक की डिग्री द्वितीय श्रेणी में हासिल कर ली थी। अगस्त 1976 में मुझे कानून की मार्कशीट और अक्टूबर में 'बैचलर आफ लाज' की डिग्री मिल गई। साथ ही चेरमैन एस.डी.सिंह से डेलीगैसी के लगातार दो स्तरों तक लिटरेरी सचिव रहकर काम करने का प्रमाणपत्र भी मिला। उन दिनों हरिशंकर चौधरी कुलपति थे। हालांकि कन्वोकेशन में डिग्री पाने की हसरत मन में ही दबी रह गई क्योंकि पिछले

कुछ वर्षों से परिसर में अशांति के चलते कन्वोकेशन नहीं हुआ करते थे। अब मेरे पास दो विकल्प थे। अब एल.एल.एम. किया जाय अथवा कचहरी में वकालत की जाय। एल.एल.एम.के प्रवेश के लिए कट आफ मार्क्स में दो प्रतिशत की कमी थी जिसे यदि विभागाध्यक्ष चाहते तो टीचर्स कैंडिडेट के रूप में मुझे दिला सकते थे। लेकिन जैसा मैं बता चुका हूँ विश्वविद्यालय घनघोर जातिवादी राजनीति का शिकार था और मुझे सफलता नहीं मिली... अब? विकल्प में बुझे मन से पिताजी के साथ सिविल कोर्ट जाना मैंने शुरू कर दिया। कुछ दिनों तक काले कोट और सफ़ेद पेंट में और फिर 26 नवम्बर 1976 के बाद बैड भी लगाते हुए क्योंकि बार काउन्सिल आफ उत्तर प्रदेश से मैं अब पंजीकृत अधिवक्ता बन चुका था। मेरी पंजीकरण संख्या 4473/76 थी। घर में अब दो वकील हो चले थे एक पिताजी और दूसरा न चाहते हुए मैं! हम दोनों लोग सुबह दस बजे के लगभग रिक्शे से कचहरी निकलते थे और शाम चार बजे के आसपास वापसी हुआ करती थी। मेरे साथ उन दिनों पिताजी के कुछेक और जूनियर कमरे में बैठ रहे थे और दिन भर की कमाई का अनुभवानुसार पारिश्रमिक भी पाते थे। मुझे भी प्रायः एक सौ रुपये प्रतिदिन मिलने लगे थे।

जैसा मैं पहले बता ही चुका हूँ कि ना चाहते हुए भी मुझे काला कोट पहनना पड़ गया और कचहरी भी जाना पड़ा। सच बात यह है कि मेरा शरीर कचहरी में रहता था लेकिन मन...? मन तो हमेशा साहित्यिक और रचनात्मक दिशा की ओर लगा हुआ था। पत्र पत्रिकाओं में लेखन, कुछ स्थानीय पत्रिकाओं (जैसे डा. ब्रह्मानंद की त्रैमासिक 'युग विचार' पत्रिका) से जुड़ाव बना रहा। उन्हीं दिनों गोरखपुर में आकाशवाणी केंद्र की स्थापना होने का काम शुरू हो गया। भटहट में एक सौ किलोवाट क्षमता के हाई पावर ट्रांसमीटर से मीडियम वेव 330.03 मीटर यानी 909 किलोहेर्ट्ज़ पर 1974 में ट्रायल प्रसारण और 6 अक्टूबर

1974 से आंशिक प्रसारण शुरू हो गया। मेरा मन ललचाने लगा और संयोगवश उन्हीं दिनों उसके प्रथम निदेशक आई.के.गुर्तू और एक अन्य स्टाफ हरिराम द्विवेदी से पिताजी की निकटता हो गई। उन्होंने मुझे आकाशवाणी केंद्र आते रहने का निमन्त्रण दिया। 1975 की 12 फरवरी को सम्पन्न आकाशवाणी नाटकों के लिए हुए स्वर परीक्षण में मैं उत्तीर्ण हो गया। केंद्र के 'युवावाणी कार्यक्रम' में नियमित अंतराल पर मेरे प्रसारण भी शुरू हो गए। मन की उमंगें अब और हिलोर लेने लगीं। लेकिन आकाशवाणी केन्द्रों की अंदरूनी राजनीति से मैं तब तक अनभिज्ञ था इसलिए एकाध बार कुछ सीखने जाने पर कुछ अन्य मुझ जैसे 'चाहकों' ने ऐसी चाल चली कि मन खिन्न हो उठा। अब मैंने कार्यक्रम प्रोडक्शन का काम सीखने के लिए स्टूडियो जाना छोड़ दिया। ये बातें थीं छोटी-छोटी लेकिन मेरे युवा मन पर इसका गहरा असर होता रहा। बाद में वही 'चाहक' जो मुझे सीखने में बाधा उत्पन्न कर रहे थे, प्रतिस्पर्धा करते शतरंज की गोटियाँ बिछाते जा रहे थे कुछ ही महीने बाद मेरे नियमित सेवा में आ जाने पर मित्र बन गए। ..इन प्रसंगों की भी रोचक कहानी है जिसे अगले अंक में आप पढ़ सकेंगे।

आगे बढूँ कि यह बताना जरूरी है कि आत्मकथा को इन पृष्ठों पर उतरते और मुद्रित होते देखकर कुछ रोचक प्रतिक्रियाओं से भी सामना कर रहा हूँ। जैसे एक ने 'तक्रदीर ने मेरे दिल में इश्क का बीज डाला था' पढ़कर कहा - 'मैं तो आपको शरीफ समझता था, आप तो इश्कबाज निकले !' मैंने उन्हें उत्तर दिया- 'हुजूर शरीफ कोई नहीं होता, सबके अपने-अपने राज होते हैं, मेरे भी राज थे जिन्हें उजागर करते हुए मैं आप जैसे अपने पाठकों को हमराज बनाता चल रहा हूँ !' एक बार फिर शायर जनाब फिराक गोरखपुरी को उद्धृत करूंगा-

*'कलम की चंद जुम्बिशों से  
और मैंने क्या किया ..*



यही कि खुल गये  
कुछ रमूज से हयात के !'

एक ने व्यंग्य के लहजे में सवाल दागा— 'यह जानते हुए भी कि आप इतने महान नहीं हैं कि कोई आपकी आत्मकथा पढ़ेगा, फिर आप क्यों लिखे जा रहे हैं?' सवाल उनका वाजिब था क्योंकि दुनिया की निगाह में मैं 'बड़ा आदमी' तो हूँ नहीं, बड़े बड़े पुरस्कारों से लदी झोली भी नहीं लटक रही है मेरे कंधे पर !इसलिए मैंने उनसे कहा कि 'भाई मैं भी उसी फैक्ट्री का उत्पाद हूँ जहाँ से ये इनाम पा रहे लोग निकले हैं, अब तक दर्जनों किताबें छपवा चुके हैं लेकिन हाँ, यह बात जरूर है कि उम्र की सांझ में अपनी तन्हाई दूर करने के लिए इससे बेहतर कोई और काम मुझे नहीं सूझा सो मैंने आत्मकथा ही लिखनी शुरू कर दी है। ...आखिर तुलसीदास ने भी तो स्वान्तः सुखाय ही रामचरित मानस की रचना की थी ! ' वे निरुत्तरित हो गए।

इन दिनों में मेरा लेखन और सम्पादन कार्य भी लगातार चल रहा था। 'हिन्दी दैनिक' का 2 अप्रैल 1974 का सम्पादकीय सिनेमा

मनोरंजन या विनाश का साधन, साप्ताहिक हिन्दुस्तान के 10 अक्टूबर 1974 अंक में छपा-फिल्मों में प्रवेश: कितना सस्ता कितना मंहगा !, दैनिक 'आज' के रविवारीय परिशिष्ट में छपे कुछ सचित्र बड़े बड़े लेख आज भी याद हैं- राजेश खन्ना की सबसे बड़ी भूमिका (8, अक्टूबर 1972), लोकप्रिय गीतों और उपन्यासों के आधार पर बन रही घटिया फ़िल्में (18 अगस्त 1973), मुसीबत के मारे- ये छोटे सितारे (6 जनवरी, 1974), फार्मूला फिल्मों का वर्ष-1974 (19 जनवरी, 1975), आदि।

डा. हरिवंश राय 'बच्चन' लिखित आत्म चित्रण 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' और 'नीड़ का निर्माण फिर' को मैंने विश्वविद्यालय लाइब्रेरी में पढ़ा जिसने मुझ पर जादू सा असर डाल दिया। उनकी तिलस्मी और किस्सागो लेखन शैली मंत्रमुग्ध कर देने वाली थी। उन्होंने ठीक ही लिखा है- 'जीवन की जिस सीढ़ी पर मैं हूँ, उस पर अतीत का स्मरण शायद स्वाभाविक होता है—मेरे पास औरों का मन जानने के लिए भी केवल अपने मन का पैमाना है।' उन्होंने भी मेरी ही तरह साफ़ शब्दों

में स्वीकारा है कि 'मेरा जीवन एक साधारण मनुष्य का जीवन है ..और इसे मैंने अपना सबसे बड़ा सौभाग्य और अपनी सबसे बड़ी प्रसन्नता का कारण माना है।' मेरे मन के तार उनकी इसी सोच के कारण कुछ ऐसे जुड़े कि आज तक नहीं टूट सके हैं। बात उन्हीं दिनों की है। मेरे फूफाजी वैद्य देवकीनन्दन पाण्डेय गोरखपुर आये और उनसे यह पता चला कि वे बच्चन जी के सहपाठी रहे हैं। उन्होंने तमाम किस्से और जोड़े जो बच्चन अपनी आत्मकथा में लिखना भूल गए थे। जैसे- जब वे कायस्थ पाठशाला इलाहाबाद में हाई स्कूल में थे तो वे एक गीत बड़े दर्द भरे स्वर में गाते रहते थे जिसके बोल थे— 'अबके गए कब अइहो रे मोहन।' और यह भी कि किसी दिन स्कूल में एक जादूगर आया था और उसने उनको मिस्मेराइज़ कर दिया था। मैंने इन बातों को आधार बनाकर बच्चन जी को एक साधारण पत्र लिख डाला। आश्चर्य यह कि 13, विलिंगटन क्रिसेंट नई दिल्ली से लिखा उनका हस्तलिखित लम्बा- चौड़ा उत्तर मुझे प्राप्त हुआ और उसमें उन्होंने उन बातों को स्वीकारते हुए आश्चर्य व्यक्त किया कि ये बातें मुझे किसने बताई? उसी पत्र में उन्होंने अपनी इस बात को भी शेयर की थी कि 'अमिताभ बच्चन मेरे ही पुत्र हैं। 'सात हिन्दुस्तानी' के बाद वे 'आनन्द', 'परवाना', 'प्यार की कहानी' में आये हैं। ..मैं पिता की हैसियत से यही चाहता हूँ कि उनकी प्रतिभा का विकास अच्छी दिशा में हो।' बच्चन जी से इसके बाद मेरे पत्राचार का सिलसिला वर्षों तक चलता रहा। उनके लिखे ढेर सारे पत्र मेरी अनमोल सम्पदा हैं। जीवन जो हम और आप इस समय जी रहे हैं वह अनिश्चित है। इस सत्य को 'बच्चन' जी इन शब्दों में स्वीकारते हैं- 'इस पार प्रिये मधु है, तुम हो, उस पार न जाने क्या होगा।' ...और आगे यह भी कहते हैं- 'मेरा तो होता मन डगमग, तट पर ही के हलकोरों से, जब मैं एकाकी पहुँचूँगा, मंझधार न जानें क्या होगा !'

(क्रमशः)





## सूत्र वाक्य

### अशोक मानव

- \* प्रकृति विकलांगता को नहीं सक्षमता को जन्म देती है। मनुष्य अपनी चाहत और इच्छाओं के वश में होकर एक दूसरे पर निर्भर होते हुए विकलांग हो गया है।
- \* घटना तो प्रकृति का प्रवाह है जिसकी गंध प्रकृति की वह ऊर्जा है जो बन जाने पर निकलती ही है यदि इसे रोका जाता है तो रोकने वाला प्रकृति विरोधी होता है।
- \* पूर्ण निर्धारित नियतबद्ध तरीके से कोई कार्य नहीं करना चाहिए, किसी परिस्थितिवश लिया गया तात्कालिक निर्णय आपराधिक नहीं होता है।
- \* किसी पीड़ित व्यक्ति को पीड़ा निरर्थक नहीं होती है बल्कि उसके आन्तरिक जमीन को उपजाऊ बनाने की क्रिया होती है जिस पर आगे सृजन होता है।
- \* मोहबबत वह मीठा जहर है जो धीरे-धीरे अर्थहीन कर देता है और नफरत वह अमृत है जो अर्थपूर्ण निर्माण करता है।
- \* मोह और प्रेम बस दुःखी होना और रोना ये अप्राकृतिक दुःख को बढ़ावा देता है।
- \* किसी गलती की क्षमा नहीं होती हैं, वह गलती दुबारा न हो यही उसकी क्षमा है।
- \* समस्त जीव, पदार्थ से मिलकर ही प्रकृति का निर्माण होता है।
- \* अधीनता अधिकार नहीं, आवश्यकता की मजबूरी है। जो सिर्फ स्वतंत्रता को परतंत्रता में परिवर्तित कर देती है।
- \* व्यक्ति अपने बाह्य और आंतरिक जगत से जुड़ता है। बाह्य जगत से वह निजी हित हेतु जुड़ता है। जिसकी पूर्ति होने या न होने की अवस्था में वह उससे दूरी बना लेता है। परन्तु अपने आन्तरिक जगत से हर दर्द के बाद भी जुड़े रहने की इच्छा बनी रहती है।
- \* कोई भी घटना बुरी होती ही नहीं, हम अपने इच्छानुसार उसका निर्धारण अच्छे या बुरे रूप में कर लेते हैं।
- \* किसी घटना को रोका नहीं जा सकता बल्कि उस घटना से खुद को अलग किया जा सकता है।

# जीव द्वारा निर्माण के वैज्ञानिक यंत्र

अशोक मानव

मानव प्रकृति का वह प्राणी है जो अपनी इच्छा से किसी भी विषय वस्तु का निर्माण कर सकता है। अन्य जीव एक निश्चित गुण को छोड़कर जाते हैं। मानव एक चिंतनशील प्राणी होने के कारण प्रकृति में हो रही घटनाओं को देखकर उसे और अच्छा बनाने और उसका सही इस्तेमाल कर नई रचना करने की क्षमता रखता है। अपने इसी गुण से दार्शनिक या अध्यात्मिक लोग जीवन को सरल और सही तरीके से जीने की कला को व्यक्त करते रहे हैं। प्रकृति की घटनाओं पर चिंतन कर और पदार्थ के गुण को पहचान कर एक या अन्य पदार्थ को जोड़कर वैज्ञानिक लोग नए-नए आविष्कार करते रहे हैं। यह क्रियाएं मानव मस्तिष्क की उपज हैं जो जीवन को सरल बनाती हैं। इनके द्वारा की गई खोज सबके सामने आ जाती है। जिसे अपनाकर लोग लाभ लेते हैं पर निर्माण सिर्फ शरीर से नहीं होता है। मानव मस्तिष्क में चलने वाले विचार से बन रही ऊर्जा शक्ति से भी होता है जो दिखाई नहीं देती है। जिसमें हर व्यक्ति का योगदान होता है। इसे कैसे बेहतर बनाया जा सकता है, उस वैज्ञानिकता को जानकर हर व्यक्ति अपना योगदान इस निर्माण में कर सकता है।

एक वैज्ञानिक या आध्यात्मिक मानव के निर्माण में प्रकृति की आवश्यकता और अनेकों व्यक्तियों द्वारा निकली हुई इच्छा



छिपी होती है। यह जगत एक से नहीं सभी के सहयोग से चल रहा है। यदि हर व्यक्ति अपने धर्म पर चलने लगे तो हर तरफ न्याय ही न्याय होगा। न्याय के लिए न्यायालय का दरवाजा नहीं खटखटाना पड़ेगा। यदि एक व्यक्ति अपराधी होता है तो उसकी प्रकृति की अनेकों व्यक्ति की ऊर्जा शक्ति उसे शक्तिशाली बनाती है। अपनी इच्छा की वैज्ञानिकता को पहचान कर हर व्यक्ति निर्माण में सहायक हो सकता है।

'इच्छा जीव के शरीर के सहयोग से और प्रकृति के गुणों से प्रभावित होकर बनती है। जो शरीर में क्रियाशील होकर रासायनिक परिवर्तन करती है। जिसके बाद उस गुण की ऊर्जा बनती है जिस की अनुभूति शरीर को होती है। इस अनुभूति से बनने वाली ऊर्जा इच्छित विषय रूपी प्रकाश को अपनी

बनी हुई ऊर्जा से घेरकर आत्मिक बीज की रचना करती है। जो इच्छित विषय की पूर्ति के लिए प्रकृति में क्रियाशील हो जाती है और फल तैयार कर व्यक्ति को खुशी की अनुभूति कराती है ' इसके बाद प्रकृति में हो रही घटनाओं को देखने के बाद इच्छा पैदा होने के विषय मिलते हैं जो द्वितीय सहयोग में आता है। जो इच्छा जीव रूप शरीर में बनती है उसे निर्माण तक पहुंचाने में शरीर के सूक्ष्म यंत्र कार्य करते हैं जिसमें ' मस्तिष्क ' जहां से चिंतन शुरू होता है जो मार्ग की तलाश करता है। जरूरत पड़ने पर शब्दों द्वारा लोगों का सहयोग प्राप्त करता है। दूसरा ' दिल ' जहां से भाव बनता है जो अनुभूति कराकर जलवायु बनाने की क्रिया करता है। यही दोनों यंत्र मिलकर आत्मिक बीज की रचना करते हैं। जिससे निर्माण होता है।

शरीर के यंत्र (ज्ञानेंद्रियां) प्रकृति की घटनाओं से प्रभावित होकर मस्तिष्क को संकेत करते हैं जहां से इच्छा पैदा होती है। इच्छा पैदा होने के बाद चिंतन में परिवर्तित हो जाती है। चिंतन से निकलने वाली ऊर्जा इस इच्छा के प्रभाव पर विचार करती है कि इससे मेरा क्या लाभ होगा? शरीर पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा? समाज इसे किस नजर से देखेगा? प्राकृतिक रूप से न्यायिक है या आपराधिक? इसके निर्माण में किस साधन की जरूरत पड़ेगी, उसकी पूर्ति कहां से होगी? इसे पूरा कर पाने में मैं सक्षम हो पाऊंगा या नहीं? इन विचारों पर चिंतन पुनः चिंतन कर सही और गलत का फैसला करता है। गलत या अक्षम पाने पर उस इच्छा को खत्म कर देता है और सही पाने पर चिंतन को आगे बढ़ाता है। जिससे निकलने वाली ऊर्जा मार्ग की तलाश करती है। मार्ग बना लेने के बाद अपने शब्दों से प्रभावित कर उसका सहयोग प्राप्त करता है।

प्रभावित व्यक्ति या प्रकृति का ध्यान उस पर आकर्षित होता है। जिससे उसके अंदर में निकलने वाली ऊर्जा उसके सहयोग में साथ जुड़ जाती है। इस मजबूती के बाद चिंतन इच्छा पूर्ति के लिए पूर्ण स्वस्थ हो जाता है तब भाव बनना शुरू होता है। भाव की गति प्राकृतिक होती है जो बहुत तेज नहीं चलती है। जिस गति से निर्माण होता है उसी गति से चलती है। भाव से व्यक्ति इच्छुक फल का रसास्वादन कर डालता है। जिससे शरीर में उस गुण को पैदा करने के लिए रासायनिक परिवर्तन होता है। जिसकी अनुभूति शरीर को होती है। इस अनुभूति में इच्छित फल बनने से लेकर रसास्वादन तक का भाव बन जाता है जिसके बाद उस गुण की गंध प्रकृति में निकल जाती है। जो इच्छित फल के लिए जमीन से लेकर बीज पौधा फल तक के लिए प्राकृतिक जल वायु बन जाने के बाद इच्छा इच्छितफल की आत्मिक बीज की रचना तैयार करता है। जिसे इच्छा इच्छाशक्ति में बदलकर निरंतर निर्माण के

लिए ऊर्जा छोड़ता रहता है। इस आत्मिक बीज की रचना में चिंतन से मार्ग की ऊर्जा मिलती है। भाव से जलवायु तैयार होती है जिसमें मिट्टी का निर्माण होता है। इस क्रिया से निकलने वाली ऊर्जा आत्मिक बीज की रचना को सुख ऊर्जा से आकृति बनाकर घेर लेती है। तभी आत्मिक बीज पूर्ण बीज बन पाता है जो उचित जमीन पाने के बाद जन्म लेता है और अपना विकास करके इच्छित फल देने लगता है। भावनात्मक क्रिया समय में निकली हुई ऊर्जा प्रकृति में मौजूद रहती है। जो अपने फल के पौधे को जलवायु के रूप में सहयोग करने लगती है। इसी प्रकार चिंतन और भाव से आत्मिक बीज की रचना का निर्माण होता है। जिसमें इस प्रक्रिया द्वारा बनाया गया गुण सूक्ष्म रूप में मौजूद रहता

**"जीव अपने स्वाभाविक जीवन शैली में मिलान होने से जो इच्छा उत्पन्न होती है वह अपनी ही मृदा को सिद्धांत करने के लिए एक वैज्ञानिक कण बना देती है वही कण यंत्र की तरह उस कार्य को पूर्ण करता है।"**

है। जो उचित जलवायु पाने के बाद स्वतः विकास करने लगता है। इस प्रकार मानव द्वारा तैयार आत्मिक बीज से विषय पूर्ति की क्रिया होती है। आत्मिक बीज जहां से अपना विषय पूरा कर सकता है वहां पर स्वतः स्थापित हो जाता है यदि यह आत्मिक रचना किसी मानव से अपना फल प्राप्त कर सकता है तो उसमें स्थापित हो जाता है। जरूरत पड़ने पर हवा में रहते हुए अपने फल का निर्माण करता है।

उसी प्रकार इस वैज्ञानिक कला से व्यक्ति अपनी इच्छा से आत्मिक बीज की रचना करके अपने इच्छित विषय की पूर्ति कर सकता है पर इसमें काफी सावधानियां रखने की जरूरत पड़ती है। इसके लिए इच्छाशक्ति

शक्तिशाली होनी चाहिए और निराशाजनक विचार नहीं पैदा होने चाहिए। जो चाहते हो उसके निर्माण का ही विचार बनना चाहिए। निराशाजनक विचार से आत्मिक बीज की रचना कमजोर हो जाती है। जो पैदा होने नहीं पाती पैदा भी होती है तो रोग से ग्रसित रहती है। जिसमें तमाम रुकावटें आने लगती है। जिसे नकारात्मक ऊर्जा रोक देती है। विषय पूरा नहीं हो पाता है। जब जीवन में अनेकों इच्छाएं पैदा होती रहती हैं तो भी आत्मिक बीज की रचना को कमजोर कर देती है। इसके लिए आवश्यक है कि कम से कम इच्छा पैदा करें, जो जीवन के लिए समाज के लिए और प्रकृति के लिए निर्माणात्मक हो वही इच्छा बनाएं और जो बन जाए उसी के लिए अधिक से अधिक भाव बनाएं। जो जलवायु बनाने और आत्मिक बीज की रचना को मजबूत करती है। अपनी बनाई गई इच्छा के प्रति सदैव सकारात्मक सोच रखें। जो आत्मिक बीज के पैदा होने के बाद विकास में सहयोग करती है इच्छा मानव की शक्ति होती है। यह चुंबक की तरह आवश्यकता की वस्तुएं अपने से जोड़ती है जिससे शरीर का विकास होता है और अपने इच्छित विषय की पूर्ति होती है। मानव सकारात्मक इच्छा से आनंदित करने वाले शरीर का निर्माण कर सकता है जो प्रकृति से खुशी देने वाले गुण कोई अपने से जोड़ता है। सकारात्मक इच्छा से ही समाज दोष और भयमुक्त बनाया जा सकता है इसी से प्रकृति को और सुंदर बनाया जा सकता है सकारात्मक इच्छा से ही एक सुगंध निकलती है जो निर्माण करती है। वही परम प्रकाश को अपने से जोड़कर न्याय स्थापित करती है। यही सुगंध परमात्मा को पसंद है। जिसे पाने के लिए अपनी इच्छा से मानव का निर्माण किया है इसे अपनाकर आप सब लोग अपना, समाज का और प्रकृति का सकारात्मक निर्माण करें। यह व्यर्थ नहीं जाएगा वापस इसकी सुगंध आपको मिलेगी जिससे आपका जीवन सरल होगा।



## प्रश्न हमारे

### उत्तर श्री अशोक मानव जी के

**प्रश्न :- आत्मज्ञान क्या है ?**

उत्तर :- आत्मज्ञान एक एहसास है जो सकारात्मक विचारों से उत्पन्न होता है। जिस दिन सोच सकारात्मक हो जाएगी उसी दिन से आत्मज्ञान का दरवाजा खुल जायेगा और धीरे धीरे आत्मज्ञान की अनुभूति होने लगेगी।

**प्रश्न :- प्रकृति की प्रवृत्ति क्या है ?**

उत्तर :- अवस्था परिवर्तन प्रकृति की प्रवृत्ति है। जैसे बीज से पौधा पौधों से कली और कली से फूल बन जाता है। ठीक उसी प्रकार मानव स्वभाव पर चलते हुए एक दिन पुष्प बन कर अपनी गुणात्मक खुशबू छोड़ने लगता है। सफर समय के साथ किया जाय तो जीवन सरल हो जाता है।

**प्रश्न :- जीवन यात्रा को सरल व सुखमय कैसे बनाएं ?**

उत्तर :- अपने स्वभाविक जीवन यात्रा पर चलते हुए स्वयात्रा से ही आत्मज्ञान की अनुभूति हो सकती है जिस पर चलकर अपनी यात्रा को सरल और सुखद बनाया जा सकता है ना कि किसी दूसरे के गंतव्य का मार्ग जानकर।

---

यदि किसी पाठक के मन में कोई भी सामाजिक या प्राकृतिक प्रश्न उठ रहा है वह उस प्रश्न का निदान चाहते हैं तो पाठक हमें अपना प्रश्न निम्न पते पर भेज सकते हैं। निदान प्रश्न के अगले अंक में दिया जाएगा।

आप अपना प्रश्न डाक द्वारा या ईमेल पर भेज सकते हैं

डाक पता : प्रकृति मेल, सर्या आश्रम, मानव नगर (निकट आई.आई. एस.ई.),

कल्याणपुर, लखनऊ-226022, उ० प्र०

ईमेल - [info@parkritimail.com](mailto:info@parkritimail.com), [editor.parkritimail@gmail.com](mailto:editor.parkritimail@gmail.com)

# क्या आपने बसंत को देखा है?

अखिलेश मयंक

महानगरों के कितने लोगों को प्रकृति का साहस धैर्य प्राप्त हो पाता है? यह सर्वेक्षण और शोध का विषय होना चाहिए। सच्चाई यह है कि यह बाशिंदे जानते ही नहीं कि प्रकृति किस चिड़िया का नाम है? यह सरसों के पीले बसंती फूलों को केवल ग्रामीण पृष्ठभूमि वाली फिल्मों में देखते हैं। कचनार और सेमल के फूल भी शायद ही कभी साक्षात् देख पाते हैं। यह पलाश के वृक्ष नहीं देखे हैं- 'टेसू के रंगों का चमकीलापन' और 'ढाक के तीन पात' जैसे जुमले अलबत्ता सुने हैं जो सीधे पलाश से संबंधित हैं। ऋतुराज वसंत पीले बोर के बोझ से झुके रसाल (आम) वृक्षों को कैसी सूचना प्रदान करता है इससे यह अपरिचित हैं।



एक महानगर के भोला काका ने 4 वर्षों से वसंत नहीं देखा पूर्णविराम ऐसा नहीं हुआ कि 4 वर्षों में वर्ष मास में तब्दील होकर जल्दी निकल गया या भगवान भुवन भास्कर ने अपनी गति में परिवर्तन कर दिया या वसंत आया ही नहीं दरअसल इसके दोषी विषय है क्योंकि विगत 4 वर्षों से शहर से गांव नहीं गए और इस महानगर में क्या हेमंत क्या वसंत सभी भौतिक संपन्नता की दबदबा की चमक के आगे अपनी आभा खो देते हैं। उन्हें फुर्सत नहीं मिली इन 4 वर्षों में शहर से बाहर जाने की और वहां वसंत कहीं दिखा नहीं।

महानगरों में वसंत दिखता है क्या वासियों ने पिछले 4 वर्षों में वसंत को देखा? बाजारीकरण का क्रूर दर पिछले 4 वर्षों में बढ़ा ही है फिर वसंत के दिखने की संभावनाएं क्षीण ही होंगी बाजारीकरण की मार और तीव्र होगी तो वसंत दिखेगा कहां? अनियंत्रित दम घोटू ट्रैफिक में? कंक्रीट के जंगल शरीर की रिहायशी बस्तियों में? या फिर औद्योगिक क्षेत्रों में जो हिटलर के हत्यारे गैस जानवरों जितने घुटन भरे हैं। जाहिर है यहां पर संभावनाएं ना के बराबर हैं, यहां अत्यल्प प्रति शतांश में भी वसंत को देखने की अपेक्षा करना हथेली पर उगी घास (वसंत की

बात हो रही है तो दो घास की जगह सरसों) देखने जैसा है पूर्णविराम वस्तुतः वसंत इन सब से कोसों दूर रहता है।

महानगरों के कितने लोगों को प्रकृति का साहस धैर्य प्राप्त हो पाता है? यह सर्वेक्षण और शोध का विषय होना चाहिए। सच्चाई यह है कि यह बाशिंदे जानते ही नहीं कि प्रकृति किस चिड़िया का नाम है? यह सरसों के पीले बसंती फूलों को केवल ग्रामीण पृष्ठभूमि वाली फिल्मों में देखते हैं। कचनार और सेमल के फूल भी शायद ही कभी साक्षात् देख पाते हैं। यह पलाश के वृक्ष नहीं देखे हैं - 'टेसू के रंगों का चमकीलापन' और 'ढाक के तीन पात' जैसे जुमले अलबत्ता सुने हैं जो सीधे पलाश से संबंधित हैं। ऋतुराज वसंत पीले बोर के बोझ से झुके रसाल (आम) वृक्षों को कैसी सूचना प्रदान करता है इससे यह अपरिचित हैं। धरती वसंती चुनर पहनकर खिलखिला रही है ऐसा बोल इन्हें कभी नहीं होता। अब आप चाहें तो इन पर सौंदर्य बोध हीनता का आरोप मर सकते हैं। यही शाहरुख को खुशी-खुशी झेल लेंगे अन्य दैनंदिन चुनौतियों की तरह और उस नहीं करेंगे। चुनौतियों से मुकाबले की भावना इनकी रग रग में जो समाई है। कभी तो यह भ्रम हो जाता है कि इन्होंने शायद चुनौतियों का सामना करने के लिए ही अवतार लिया है। और की चुनौतियों से यह प्रतिदिन 24 होते हैं। बेचारे सौंदर्य बोध हीनता का यह एक आरोप भी सह लेंगे। एक चुनौती यह भी सही।

इतनी सहजता के साथ आरोप कोई भी तभी रहता है जब वह या तो अपने दोषी होने के अपराध बहुत से ग्रस्त रहता है या फिर प्रत्युत्तर देने में अक्षमता के चलते आरोप शहरों को मजबूर ! - इन के संदर्भ में अभिशप्त भी चलेगा - यह बेचारे मजबूर हैं लेकिन इन्हें इसका मलाल नहीं है। इन्हें मलाल तब होगा जब ऐसा बहुत भाव इनकी 'मॉडर्न' जीवनशैली का अंग होता और तब यह उस से अनभिज्ञ होते पूर्णविराम लेकिन ऐसा कुछ नहीं है फिर यह ऐसा कोई मलाल क्यों पालें? हंस-हंसकर इन आरोपों को दैनंदिन चुनौतियों

की तरह क्यों न जेल है? दूसरे एक ऐसा समाज जो इनका अपना नहीं और जिसे वह हमेशा द्वितीयक दर्जा देते आए हैं की जीवन शैली के सरोकारों से संपृक्त होने की ही नेता ग्रंथ से क्यों ग्रस्त हो ?

आज बाजार का दिन की संवेदना को सिरे से लील गया है। इनके पास वसंत की प्रतीक्षा करने उसे निहारने या महसूस करने के लिए समय नहीं। ऐसे ऑन उत्पादक कर्मों में यह समय नहीं जाया करते। यह उसी कार्य में निरत होते हैं जो इन्हें लाभ दें। इसलिए कर्म चयन में यह उत्पादन उत्पादकता वेद बड़ी बारीकी से करते हैं। बिना किसी रियायत के विरुद्ध प्रोफेशनल विवो बना लेते हैं। क्योंकि इन्हें भलीभांति मालूम है कि यहां पर लेबल होना उनके लिए घातक है। अगर यहां निर्मल पर दिखाया तो अस्तित्व का संकट खड़ा हो जाएगा। अब ऐसे चैतन्य और मस्तिष्क के लोग वसंत वसंत के पचड़े में पड़ने से रहे। इन्हें इस पचड़े में घसीटना गलत भी है। यह सीधे अपने ट्रैक पर जा रहे हैं बीच में वसंत को गुजरकर इनकी सीधी दौड़ को बाधा दौड़ ना बनाएं प्लीज !

वसंत की चिंता तो एक खास तबके के जिम्मे है। यही तो का वसंत पंचमी को चौराहे पर अरंड का तना गार्ड कर वसंत के आने की सूचना देता है। इसे वसंत की चिंता रहती है और इसके साथ फागुन की भी जिसकी समाप्ति होली पर होती है। यह तबका समाज की सारी चिंताओं सारे सरोकारों का अपना समझता है और ग्राम इसे पता नहीं कैसे वसंत का पूर्वाभास हो जाता है और इससे कई गुना ज्यादा प्रबुद्ध और वरिष्ठ जन अखबारों और टीवी कार्यक्रमों से ही वसंत के आने की सूचना पाते हैं।

बचपन में कुछ मां की आम के बौर देखकर जाने जैसी ताकि दिया और कुछ स्वविवेक से पता चल जाता था कि वसंत आ गया पूर्णविराम वीरों का कैसा हो वसंत मां मेरा रंग दे वसंती चोला जैसी पंक्तियों ने वसंत

ऋतु और वसंती रंगों से सैद्धांतिक रूप से परिचित कराया। कई वसंतों का भरपूर आनंद लिया। कोयल के साथ टूटने की प्रतिस्पर्धा की - अधिकांश में विजय भी हासिल की भवनों का गुलजार देखा। तितलियां पकड़ी। इन्हीं तितलियों को इस लुकाछिपी में विकलांग बनाने का पाप सिर पर लादा पूर्णविराम रंग बिरंगे फूलों के सुभाष को नजरों में बसाया। पीपल के पत्तों की चपलता देखी। इन्हें पृष्ठ वृक्षों को दूसरों की क्यारियों से चोरी से उखाड़ कर अपनी क्यारियों में रोपित किया। माली का काम अच्छा कर लेता था। कुछ लोगों ने इस बात के लिए मजबूर कर दिया था कि मेरे हाथ के रूप में पौधे सूखने नहीं।

याद आता है वसंत पर कुछ लोगों का विशेष रूप से आधारित होना पूर्णविराम इसलिए नहीं कि इन्हें वसंत से या इसकी मस्ती से विशेष लगाव था। इन के हालात का कारण होता था - जाड़े की विदाई (यह स्थिति आज भी हर जगह देखने को मिल जाएगी)।

यह कार्य मार्क्स के वर्किंग क्लास का दर्द है। यह लोग सामाजिक ढांचे की नींव होते हुए भी उपेक्षित दरकिनार और त्याज्य है। है दृष्टि से देखे जाते हैं। इनके सामाजिक योगदान को हमेशा अनदेखा किया जाता है ठीक नीव की इंद्रो के योगदान की तरह। इनके हिस्से में शरद का घोर कष्ट और वसंत की प्रतीक्षा जैसे उत्पादक कार्य ही हैं। यह सांसारिक नहीं बन पाए हैं इसलिए अपने अमूल्य वसंतों को वसंत की प्रतीक्षा जैसे और वर्क कार्य में बर्बाद करते हैं। समय का अभाव है करना कोई इनसे सीखे। इसके विपरीत एक-एक मिनट के हिसाब के अनुसार खर्च करने वाले सांसारिक लोग या तो बहुत कुछ पा चुके हैं या पानी की तरफ तीव्र मंथर गति से अग्रसर है। ऐसे में यदि इन्हें वसंत के आने की दस्तक नहीं सुनाई पड़ती यह प्रस्थान की जानकारी नहीं हो पाती तो इसमें अचंभे की क्या बात है? इसलिए वसंत के जाने के बाद यदि इन से पूछिए क्या आपने वसंत को देखा? तो यह 'फुल कॉन्फिडेंस' के साथ कोई उत्तर नहीं दे सकते।

ऊपर कहा गया है कि महानगरों के कितने लोगों को प्रकृति का शौचालय प्राप्त होता है इस पर शोध किया जाना चाहिए। यदि कोई इस कार्य को करने का बीड़ा उठाया तो उसकी हाइपोथिसिस पहले से साफ होनी चाहिए। यदि वह पहले से साफ और शुद्ध निष्कर्षों के नजदीक रहेगी तो यही होगी कि अब महानगर वासियों को प्रकृति से निकट का संपर्क 36 के रिश्ते वाले मुहावरे को चरितार्थ कर रहा है। अब पेड़ पौधों से संबंधित लोक मान्यताएं इनके अंतर्भूत में घर नहीं किए हैं। पहले हर वृक्षों और पौधों का अपना महत्व था। चाहे वह पीपल, बेलगाम, पाकर और अमलतास जैसे बड़े वृक्ष हो चाहे काश जैसी वनस्पतियां सभी का अपना अपना महत्व। कोई भी अनुपयोगी नहीं! सबके देवताओं से अमूर्त संबंध थे। पीपल का शनि से, बांस का हनुमान से और बिल का संबंध भगवान शिव से जोड़ा जाता था। कोई भी पूजा आम के पल्लव के बिना नहीं होती थी। अब यह सब बीते जमाने की बातें हो हुई लगती हैं। प्रसंग वश एक घटना का जिक्र विषय अंतर ना होगा कि एक महानगरी है मित्र के घर उनकी गांव से आई दादी जी ने सत्यनारायण की पूजा कराई। पूजा कराने के लिए एक प्रोफेशनल पंडित जी को तो मित्र ने अखबार के एक पुराने विज्ञापन में दिए गए पते पर ढूंढ निकाला लेकिन पंडित जी द्वारा बताई गई पूजा सामग्रियों में से घास और आम के पल्लव नहीं मिले। मित्र जिस जिस जगह या विहार नामक कॉलोनिनों में रहते हैं उनमें दूब का कहीं नामोनिशान ना था। आम का कोई वृक्ष भी नहीं मिला। अंततः दूब का काम लॉन में उगाई गई विदेशी घास और पल्लव का काम पड़ोसी की बगीचे में लगी आम के लघु संस्करण आम्रपाली के पल्लो से चलाना पड़ा। मित्र के परिवार के कई शहरी सदस्यों का यह प्रकृति के करीबी साहचर्य था।

प्रकृति से उपयुक्त कटाव लोग जीवन से हमारी अलगाव को बड़ी खूबसूरती के साथ रेखांकित करता है। लोग जीवन रूपी स्रोत से हम जीवन शक्ति ग्रहण करते हैं वह



अब सूख गया है। यदि कुछ बचा है तो वह है कृत्रिम ता के लुभावने आवरण में लिपटा स्वार्थ बाद जिस पर हम समय-समय पर जरूरत मुताबिक कलाई चढ़ाया करते हैं और ग्राम ऊपर से चाहे जो तात्कालिक या दुर्गा में उद्देश्य परिलक्षित हो असली उद्देश्य अपना हित साध ना ही होता है और इस हित साधन में भी तात्कालिक ता का जबरदस्त पुट कितनी जल्दी इसे यूज कर लिया जाए ?की होड़। इसमें यदि कहीं माइक्रो क्वालिटी में ही सही मानवीयता रहती भी है तो वह जल बिन मछली की तरह तड़प कर मर जाती है। ऐसे बचे स्रोत से जीवन शक्ति ग्रहण करने के बाद पागलपन की श्रेणी में ही रखी जाएगी।

इसलिए प्रकृति से साहचर्य के विषय पर

काम करने वाले अग्रिम रूप से आश्वस्त हो लें कि उन्हें निष्कर्ष में कुछ मिलने वाला नहीं। जो मिलेगा वह पहले से रेडीमेड लगेगा। ज्यादा अच्छा होगा कि वह एक धुआंधार अभियान चलाएं और इस अभियान में महानगर वासियों के पास जाएं और उनसे एक ही सवाल- 'क्या आपने वसंत को देखा'? पूछें। वसंत को देखने महसूस करने के लिए प्रेरित करें। कोई जरूरी नहीं किया महा नगर वासी मत्स्येंद्र के काम वालों से ही घायल हो या कालिदास और निराला को याद करें। हम तो मात्र इतना ही चाहते हैं कि यह वसंत को देखें वातावरण से विक्रय उसके सुभाष को अपनी ज्ञानेंद्रिय के जरिए महसूस करें इनका नजला दूर हो बस बोला काका को भी कुछ सक्रिय होना चाहिए।



# धरा के प्रति हमारा दायित्व

गोवर्धन दास बिन्नाणी  
'राजा बाबू'

बीकानेर, राजस्थान

हम जो अन्धाधुंध पेड़ों की कटाई कर रहे हैं वह किसी भी दृष्टि से उचित नहीं माना जा सकता।

नीम, कुरकुमालौंगा, लहसुन, अदरक, अंगूर, मेथी, करेला, अनार, शतावरी, मुंगना (सहजन), उलटकंबल, श्योनाक, पीपल, बेलपत्र/फल, बरगद/बड़, आंवला एवं अशोक इत्यादि अनेक ऐसे पौधे हैं जिनमें प्रचुर औषधीय गुण मौजूद हैं। दुनियाभर में इन औषधीय पौधों से ही दवायें विकसित की जा रही हैं। इसलिये आवश्यकता यही है कि इस तरह के सभी औषधीय पौधों को संरक्षण प्रदान किया जाय।



मैंने अपने पिछले आलेख में बता दिया था कि अगर धरा न होती तो हमारा अस्तित्व ही नहीं होता। अब जब इस पर गहनता से विचारें तो सबसे पहले यह मानना ही पड़ेगा कि जीवन के लिये आवश्यक ऑक्सीजन, पानी व अन्य सभी सामग्रियां यहां सहजता से उपलब्ध है अर्थात् इस धरा पर सभी आधारभूत संसाधन सहज उपलब्ध हैं जबकि अभी तक अन्य ग्रहों पर जीवन की

पुष्टि तक हुयी नहीं है। इसलिये ही धरा को ब्रह्माण्ड में अनमोल माना गया है।

याद रखें प्रकृति और मनुष्य का सम्बंध आदि काल से परस्पर निर्भर रहा है। इसलिये अब यह हमारा दायित्व बनता है कि पृथ्वी को बचाने के लिये हमें हमारे बीच पनपे गलत प्रचलनों से मुक्ति पाने की पूरी पूरी चेष्टा करते रहना है। और इसके लिये जागरूकता अभियान चलाकर सभी को समझाना होगा। सभी को यह बताना होगा कि



हम मानवों द्वारा किये जा रहे गलत कार्यों के कारण प्राकृतिक संसाधन दिन प्रति दिन बिगड़ रहे हैं। इसके साथ-साथ यह भी समझाना होगा कि हमारे अलावा कई तरह के जानवर, वनस्पतियाँ वगैरह भी इस पृथ्वी पर निर्भर हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि धरा की प्राकृतिक पर्यावरण को बनाये रखने में हमारे साथ साथ इन जानवरों, वनस्पतियों वगैरह का भी महत्वपूर्ण योगदान है। अतः यह आवश्यक है कि हमारा व्यवहार संयमित व ऐसा संतुलित हो जिससे पर्यावरण को नुकसान न पहुँचे।

अब गलत प्रचलनों पर विचार करें तो सबसे पहले धरती के वातावरण के तापमान में लगातार हो रही विश्वव्यापी बढ़ोतरी को रोकने में हम भारतवासी पहल कर विश्व के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं। इसके अलावा खेती में अधिक कीटनाशक [पेस्टीसाइड] डालकर व आवश्यकता से अधिक पानी डालकर जमीन का स्वास्थ्य खराब कर रहे हैं और इससे वांछित उपज भी नहीं मिल रही है और पर्यावरण असंतुलित हो रहा है। इसलिये हमें अपनी खेतीबाड़ी में संयम बरतना चाहिये और उचित तो यही रहेगा कि हमसब अब जैविक खेती पर ध्यान देना प्रारम्भ कर दें। जैसा आप सभी जानते हैं

कि आजकल अपनी सरकार भी अपनी तरफ से जैविक खेती को प्रोत्साहित कर रही है।

एक अन्य तथ्य आप सभी के ध्यान में ला रहा हूँ जिसके अनुसार प्रदूषण बढ़ाने में उद्योगों की भी एक बहुत बड़ी भूमिका है। उद्योग वाले तो सोचते ही नहीं हैं और सारा कचरा कारखानों व औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले अवशिष्ट पदार्थों के निष्पादन की समुचित व्यवस्था न कर, जमीन में गाड़ देते हैं। जबकि इन अवशिष्ट पदार्थों को निष्पादन से पूर्व दोषरहित किया जाना चाहिए और सरकार को इस तरह के अवशिष्ट पदार्थों को जमीन में गाड़ना या नदी / तालाब में बहाने को गैरकानूनी घोषित कर प्रभावी कानून बना उचित कदम उठाने चाहिए।

इसी कड़ी में अब आप सभी के ध्याननार्थ, हम जो अन्धाधुंध पेड़ों की कटाई कर रहे हैं वह किसी भी दृष्टि से उचित नहीं माना जा सकता। नीम, कुरकुमालौंगा, लहसुन, अदरक, अंगूर, मेथी, करेला, अनार, शतावरी, मुंगना (सहजन), उलटकंबल, श्योनाक, पीपल, बेलपत्र/फल, बरगद/बड़, आंवला एवं अशोक इत्यादि अनेक ऐसे पौधे हैं जिनमें प्रचुर औषधीय गुण मौजूद हैं। दुनियाभर में इन औषधीय पौधों से ही दवायें

विकसित की जा रही हैं। इसलिये आवश्यकता यही है कि इस तरह के सभी औषधीय पौधों को संरक्षण प्रदान किया जाय। इन पौधों को विकसित करने से जमीन मालिक न केवल पर्यावरण संरक्षण को मजबूती प्रदान करेंगे बल्कि अपनी आमदनी में भी बढ़ोतरी कर पायेंगे।

उपरोक्त के अलावा भी अनेकों छोटे छोटे पर्यावरणीय मुद्दे हैं जिन पर आसानी से संतुलित एवं संयमित व्यवहार अपना कर सुधार किया जा सकता है अन्यथा पर्यावरणीय मुद्दों की दर जो दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है उस पर काबू कर पाना एक चूनीती बन जायेगा।

अन्त में सभी प्रबुद्ध पाठकों के ध्याननार्थ - धरा के संरक्षण की जिम्मेदारी केवल मनुष्य के जिम्मे है, केवल और केवल मनुष्य के जिम्मे। इसलिए हम सभी को प्रण लेकर इस तरह की बर्बादी को रोककर अपने जीवन व प्रकृति को हरा-भरा तथा खुशहाल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में चूकना नहीं है क्योंकि इसी में ही हम सभी की भलाई है। इसी संदर्भ में सुमित्रानंदनजी पंत की दो पंक्तियाँ आप सभी को याद दिलाने के उद्देश्य से यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ -

जौ गेहूँ की स्वर्णिम बाली,  
भू का अंचल वैभवशाली।  
इस अंचल से चिर अनादि से,  
अंतरंग मानव का नाता॥

संक्षेप में पर्यावरण के मुख्य विन्दुओं को आपके सामने रखने की चेष्टा की है और आशा करता हूँ कि आप सभी प्रबुद्ध पाठक उपरोक्त बताये कारणों व निदान से ज्यादा, बहुत कुछ स्वयं भी समझ गये होंगे साथ ही आप सभी इस तथ्य से भी सहमत होंगे कि पर्यावरण संरक्षण की जिम्मेदारी हम मनुष्यों पर पूरी तरह निर्भर है इसलिये आशा करता हूँ कि तुरन्त प्रभाव से आत्मावलोकन प्रारम्भ कर सुधरात्मक कदम उठाना शुरू कर देंगे।



# आत्मघाती है पर संपदा अथवा प्रकृति का विनाश करना

सीताराम गुप्ता

दिल्ली

बात आज के बिगड़ते हुए भौतिक परिवेश अथवा पर्यावरण प्रदूषण की हो अथवा हमारी जीवन शैली अथवा उदात्त जीवन मूल्यों की हम आत्मघाती होते जा रहे हैं। हम जिस डाल पर बैठे हैं उसी को काट रहे हैं। अपने लाभ के लिए ही नहीं दूसरों को हानि पहुँचाने के लिए भी हम दूसरों का अहित करने में कम आनंद नहीं लेते लेकिन वास्तविकता ये है कि हमारा इस प्रकार का आचरण दूसरों के साथ-साथ हमारा भी उतना ही अहित कर रहा है जितना दूसरों का। दूसरों का अहित करने या होने देने के प्रयास में कई बार तो हम अपना सर्वनाश ही कर बैठते हैं।



मानस के उत्तरकांड में गोस्वामी तुलसीदास एक स्थान पर लिखते हैं कि पर संपदा बिनासि नसाहीं, जिमि ससि हति हिम उपल बिलाहीं। अर्थात् दूसरों की संपत्ति को नष्ट करने वाले स्वयं नष्ट हो जाते हैं जैसे खेती का नाश करने के बाद ओला स्वयं भी नष्ट हो जाता है। आज के संदर्भ में तुलसीदास की ये पंक्ति अत्यंत प्रासंगिक व विचारणीय है। बात आज के बिगड़ते हुए भौतिक परिवेश अथवा पर्यावरण प्रदूषण की हो अथवा हमारी जीवन शैली अथवा उदात्त जीवन मूल्यों की हम आत्मघाती होते जा रहे हैं। हम जिस डाल पर बैठे हैं उसी को काट रहे हैं। अपने लाभ के लिए ही नहीं दूसरों को हानि पहुँचाने के लिए भी हम दूसरों का अहित करने में कम आनंद नहीं लेते लेकिन वास्तविकता ये है कि हमारा इस प्रकार का आचरण दूसरों के साथ-साथ हमारा भी उतना ही अहित कर रहा है जितना दूसरों का। दूसरों का अहित करने या होने देने के प्रयास में कई बार तो हम अपना सर्वनाश ही कर बैठते हैं।

एक कहानी याद आ रही है। एक माली और कुम्हार पास-पास रहते थे। माली सब्जियाँ उगाता था तो कुम्हार मिट्टी के बरतन बनाता था। उन दोनों के पास एक ऊँट था जिस पर वे दोनों ही अपना सामान लादकर पास के कसबे में ले जाकर बेच देते। एक बार दोनों ऊँट पर सामान लादकर कसबे की ओर जा रहे थे। ऊँट की पीठ पर एक ओर माली की सब्जियाँ लदी हुई थीं तो दूसरी ओर कुम्हार के बरतन लदे हुए थे। माली ऊँट की रस्सी को पकड़े हुए आगे-आगे चल रहा था तो कुम्हार ऊँट के पीछे-पीछे। तभी अचानक ऊँट ने अपनी लंबी गरदन पीछे की ओर घुमाई और सब्जियाँ खाने लगा। कुम्हार ने ऊँट को सब्जियाँ खाते हुए देखा पर रोका नहीं। उसने अपने मन में कहा कि ऊँट माली की सब्जियाँ खा रहा है तो इससे मुझे तो कोई नुकसान नहीं होगा। ऊँट मेरे बरतन तो खाने से रहा फिर मैं क्यों इसे सब्जियाँ खाने से रोकूँ।

कुछ ही देर में ऊँट काफी सब्जियाँ खा गया जिससे ऊँट पर लदे हुए सामान का

संतुलन बिगड़ गया और सारा सामान नीचे गिर गया। गिरने से शेष सब्जियाँ तो बच गईं पर कुम्हार के सारे बरतन चकनाचूर हो गए। बरतन टूटने के बाद कुम्हार को भान हुआ कि यदि वो ऊँट को सब्जियाँ नहीं खाने देता तो उसके बरतन भी नहीं टूटते लेकिन अब पछताना बेकार था। आज यही स्थिति हम सबकी हो चुकी है। हम दूसरों का या सामूहिक नुकसान रोकने के लिए बिलकुल आगे नहीं आते और इसके परिणामस्वरूप हमारा जो प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष नुकसान होता है उसे वहन करने को अभिशप्त हैं। ये संपूर्ण विश्व हमारी सामूहिक संपत्ति ही तो है। इस पृथ्वी पर उपलब्ध सभी प्रकृतिक संसाधनों को बचाना हमारा ही दायित्व है। जो लोग इन्हें नष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं उन्हें रोकना भी हमारा ही दायित्व है।

आज हालात इतने बिगड़ चुके हैं कि कुछ लोग देश छोड़कर स्थायी रूप से विदेशों में बसने के लिए जा रहे हैं। लेकिन सब लोग ऐसा नहीं कर सकते। यदि हालात और बिगड़े तो क्या होगा? हम क्या करेंगे? वास्तव में हम कुछ नहीं कर पाएँगे और घुट-घुटकर मर जाएँगे। प्रश्न उठता है कि हम इसमें क्या कर सकते हैं। आज हमारे जीवन का एक मात्र उद्देश्य खूब कमाना और खूब खर्च करना हो गया है। हमें अपने इस उद्देश्य को बदलना होगा। यदि हमने स्वयं को नहीं बदला तो हमारा नहीं तो हमारी अगली पीढ़ियों का घुट-घुटकर मरना निश्चित है। आज भी प्रति वर्ष असंख्य व्यक्ति प्रदूषणजन्य व्याधियों के कारण अकाल मृत्यु का शिकार हो रहे हैं। बीमारियाँ बढ़ती ही जा रही हैं। हवा हो या पानी सब प्रदूषित हैं। खाद्य पदार्थ विषाक्त होते जा रहे हैं। यदि कहीं कुछ बचा भी है तो वो मिलावट की भेंट चढ़ जाता है। साँस लेना मुश्किल होता जा रहा है।

एक शेर की एक पंक्ति याद आ रही है कि मर्ज़ बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की। आज हमारी स्थिति ठीक वैसी ही हो चुकी है। समस्या का स्थायी उपचार संसाधनों से संभव



नहीं। हमें प्रकृति को नष्ट करने के दुष्क्रम को तोड़ना होगा। ये तभी संभव है जब हम अपनी जीवन शैली को परिवर्तित करें। हमें प्रकृति की ओर लौटना होगा। अपनी जीवनशैली को प्राकृतिक बनाना होगा। हमें वाहनों के प्रयोग में कमी लानी होगी। हमें कुछ दूरी के लिए बिना किसी वाहन की मदद के पैदल चलने की आदत डालनी होगी। इससे न केवल पर्यावरण सुधरेगा अपितु हमारा स्वास्थ्य भी अच्छा होगा। हमें अपनी उत्सवधर्मिता पर भी रोक लगानी होगी। हर पर्व को सादगीपूर्ण ढंग से मनाने की आदत विकसित करनी होगी। आज हालात इतने बदतर हो चुके हैं कि एक अबरबत्ती अथवा धूपबत्ती का जलाना भी निरापद नहीं। कोई त्योहार कब मातम में बदल जाए कुछ नहीं कहा जा सकता।

आज कुछ भी सुरक्षित नहीं बचा है। खाद्य पदार्थ हों अथवा दवाएँ हर चीज में मिलावट की जा रही है। नकली घी-तेल तैयार करके बेचे जा रहे हैं। साबुत मसाले हों या दालें अथवा फल-सब्जियाँ सब पर हानिकारक रसायनों से पॉलिश की जाती है जिसका कोई औचित्य नहीं। हम नकली चीज़ें बेचकर दूसरों के जीवन के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं लेकिन साथ ही दूसरों के द्वारा तैयार की गई अन्य नकली चीज़ों का उपभोग करके स्वयं भी इस दुष्क्रम का शिकार हो रहे हैं। हम गलत तरीकों से पैसा कमाकर खुश तो हो रहे हैं लेकिन इस

प्रक्रिया में स्वयं का विनाश भी सुनिश्चित कर रहे हैं। हमें गलत तरीकों से खूब पैसा कमाने और खर्च करने की प्रवृत्ति का त्याग करना ही होगा। हमें अपने हर प्रकार के निरंकुश उपभोग पर अंकुश लगाना होगा। हमें अनिवार्यतः अपरिग्रह का पालन करना होगा।

पिछले ढाई हजार साल से अपरिग्रह पर जोर दिया जा रहा है। उस समय पर्यावरण प्रदूषण जैसी कोई समस्या नहीं थी तो भी अपरिग्रह पर जोर दिया जाता रहा। जिस सुंदर परिवेश अथवा प्रकृति का विकास लाखों वर्षों में हुआ है उसे अक्षुण्ण रखना अनिवार्य था अतः अपरिग्रह अर्थात् आवश्यकता से अधिक वस्तुओं के उपभोग व संग्रह के निषेध को धर्म से जोड़ दिया गया। हमारी परिग्रह वृत्ति के कारण ही आज संपूर्ण विश्व अशांत है। हम एक दूसरे का शोषण करके व प्रकृति को नष्ट करके अथवा इसे नष्ट होने से रोकने का प्रयास न करके सबसे अधिक स्वयं की ही हानि कर रहे हैं इसलिए औरों के लिए न सही अपने स्वयं के अस्तित्व को बचाए रखने के लिए ही सही हमें सचेत होना होगा और आज ही होना होगा। अन्यथा ये असंभव नहीं कि किसी दिन हवा में इतना जहर बढ़ जाए कि कोरोना की तरह तबाही मचा दे और ये सिलसिला रुकने का नाम ही ले।

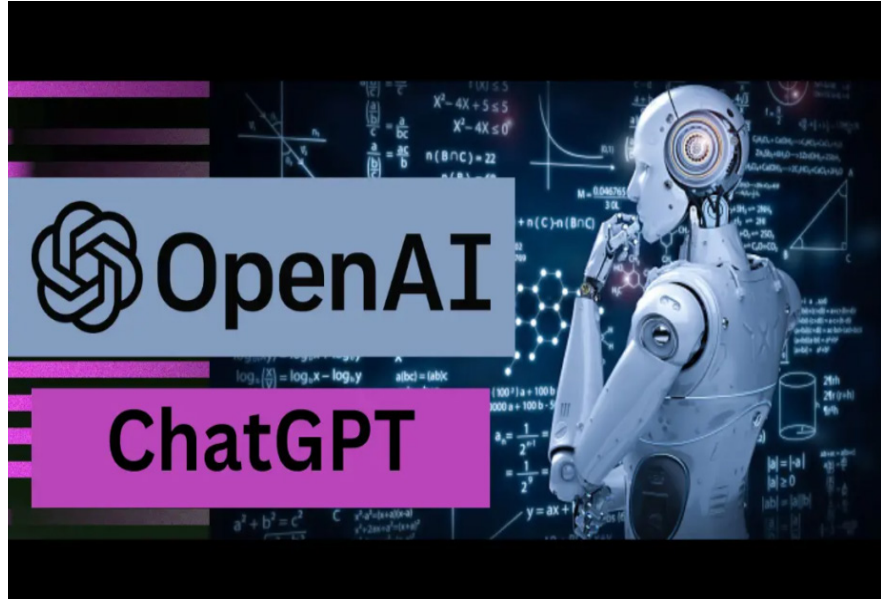


अजय मिश्रा

आप इंटरनेट की मदद से अपने काम को चुटकियों में कर सकते हैं, ये टेक्नोलॉजी दिन पर दिन और भी एडवांस होती जा रही है। इस आधुनिक युग में आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस पे काफी जोर दिया जा रहा है, वैज्ञानिकों के अनुसार तो आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस ही हमारा भविष्य है। भविष्य में अधिकतर कार्य आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस के जरिये हो जाएंगे। उदाहरण के तौर हम चैट-जीपीटी को ही ले लेते हैं ये एक चैटबॉट है जिसे ओपन ए.आई. कंपनी द्वारा बनाया गया है। ये एक खास तरह का चैटबॉट है जो हमारे सवाल का जवाब बिलकुल एक इंसान की तरह ही देने में सक्षम हैं, और इसकी प्रतिभा को देख कर आप ये अंदाजा लगा सकते हैं की आज ए.आई. (आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस) कितना विकसित हो गया है।

## परिचय

चैट-जी.पी.टी. ओपन ए.आई. कंपनी द्वारा विकसित किया गया एक भाषा मॉडल (चैटबॉट) है जो की जी.पी.टी. 3.5 आर्किटेक्चर पर आधारित है। सैम अल्टमैन चैट-जी.पी.टी. की मूल कंपनी ओपन ए.आई. के सीईओ हैं। चैट-जी.पी.टी. एक प्रकार का भाषा मॉडल है जो की ट्रांसफॉर्मर आर्किटेक्चर पर आधारित है। ट्रांसफॉर्मर आर्किटेक्चर को सबसे पहली बार 2017 में वासवानी एट.अल. द्वारा पेश किया गया था, और तब से ही यह भाषा मॉडल के लिए एक मानक की तरह बन गया है। ट्रांसफॉर्मर आर्किटेक्चर को पिछले भाषा मॉडल की तुलना में अधिक कुशल और प्रभावी बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है, इसकी इसी प्रतिभा के कारण यह अपेक्षाकृत कम समय में बड़ी मात्रा में टेक्स्ट डेटा को प्रोसेस कर पाता है। चैट-जी.पी.टी. मॉडल को टेक्स्ट डेटा के एक बड़े कॉर्पस (समूह) पर प्रशिक्षित किया गया है,



# चैट-जी.पी.टी.

जो इसे टेक्स्ट उत्पन्न करने की इजाजत देता है और जो अक्सर मानव द्वारा लिखे गए टेक्स्ट से भिन्न नहीं होता है, लगभग सामान ही होता है।

चैट-जी.पी.टी. यूजर (उपयोगकर्ता) के इनपुट के आउटपुट के लिए मानव जैसा उत्तर उत्पन्न करने के लिए चैट-जी.पी.टी. मॉडल को टेक्स्ट डेटा के एक बड़े संग्रह (कॉर्पस) का उपयोग करके प्रशिक्षित किया गया है। चैट-जी.पी.टी. को विभिन्न प्रकार के अनुप्रयोगों में उपयोग करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिसमें चैटबॉट और ग्राहक सेवा इत्यादि शामिल हैं। चैटजीपीटी में कई विशेषताएं हैं जो इसे अन्य चैटबॉट (भाषा मॉडल) से अलग बनाता है। इसकी सबसे प्रभावशाली विशेषताओं में से एक इसकी प्रतिक्रिया के ऊपर (आउटपुट) उत्पन्न करने की क्षमता है जो की बिलकुल मानव के समान ही हैं। चैट-जी.पी.टी. हमारी बातचीत के संदर्भ को समझने और उसपर उचित रूप से प्रतिक्रिया देने में सक्षम है।

## अनुप्रयोग

चैट-जी.पी.टी. की एक और विशेषता है जो इसे दूसरे चैटबॉटो से अलग करती है और वो

है इसकी विविध (डाइवर्स) और रचनात्मक प्रतिक्रियाओं को उत्पन्न करने की क्षमता। और यह 'नमूनाकरण' (सैंपलिंग) तकनीक के माध्यम से संभव है इस ताज्जिक की साहयता से चैट-जी.पी.टी. को ऐसी प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करने की अनुमति देता है जिनकी अक्सर सबसे अधिक संभावना नहीं होती हैं, लेकिन फिर भी वह प्रशंसनीय होती हैं, और यह सुविधा चैटबॉट अनुप्रयोगों में विशेष रूप से उपयोगी है, जहां उपयोगकर्ता विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछ सकते हैं या विभिन्न प्रकार के अनुरोध कर सकते हैं और चैट-जी.पी.टी. अपनी तकनीक से उन सवाल का जवाब दे सके। चैट-जी.पी.टी. की दूसरी विशेषता यह है की ये जो प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करता है वो लगभग उस विशिष्ट डोमेन या विषयों के अनुरूप होती है जिस विशिष्ट डोमेन से जुड़ा सवाल पूछा जाता है। यह खूबी 'फाइन-ट्यूनिंग' नामक एक प्रक्रिया के माध्यम से प्राप्त किया जाता है, जहां चैटबॉट को टेक्स्ट डेटा के छोटे डेटासेट पर प्रशिक्षित किया जाता है जो किसी विशेष डोमेन के लिए विशिष्ट होता है। यह चैट-जी.पी.टी. को ऐसी प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करने की अनुमति

देता है जो विशिष्ट डोमेन या विषय के हिसाब से अधिक मेल खाती हो और एकदम सटीक हो।

## चैटबोट्स

चैट-जी.पी.टी. के सबसे आम उपयोगों में से एक चैटबोट्स में है। चैटबोट एक तरह का कंप्यूटर प्रोग्राम होता है जो की मानव यूजर (उपयोगकर्ताओं) के साथ बातचीत को अनुकरण करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। सरल भाषा में इसका मतलब है की जैसे हमें किसी वेबसाइट पर किसी व्यक्ति से बात करते हैं बस उसी प्रकार ये भी कार्य करता है बस फ़र्क इतना है की सामने कोई इंसान नहीं बल्कि ए.आई. (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) यानी चैट-जी.पी.टी. होती है हमारे सवालो के जवाब देने के लिए। उदाहरण के तौर पर इसका उपयोग ग्राहक सेवा, ई-कॉमर्स और स्वास्थ्य सेवा सहित विभिन्न प्रकार के उद्योगों में चैटबोट्स का उपयोग किया जाता है। चैट-जी.पी.टी. का उपयोग करके हम चैटबोट्स में यूजर (उपयोगकर्ताओं) के साथ स्वाभाविक (नेचुरल) और आकर्षक बातचीत प्रदान करने के सन्दर्भ में किया जा सकता है।

चैटजीपीटी जैसे भाषा मॉडल का उपयोग करके, चैटबोट ऐसी प्रतिक्रियाएँ (ऑउटपुट) उत्पन्न कर सकता है जो अधिक मानवीय और व्यक्तिगत लगे, जो यूजर (उपयोगकर्ता) के प्रतिधारण और संतुष्टि में सुधार कर सकती हैं। यूजर के प्रश्नों के लिए अधिक सटीक और प्रासंगिक प्रतिक्रिया प्रदान करने के लिए चैटबोट्स को विशिष्ट डोमेन, जैसे की स्वास्थ्य सेवा या वित्त के लिए भी ठीक किया जा सकता है।

## ग्राहक सेवा

चैट-जी.पी.टी. का उपयोग हम ग्राहक सेवा अनुप्रयोगों में भी कर सकते हैं। ग्राहक सेवा एप्लिकेशन तकनीकी सहायता या उत्पाद की जानकारी जैसे मुद्दों में ग्राहकों की मदद करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। ग्राहक सेवा अनुप्रयोगों में चैट-जी.पी.टी. का उपयोग करके, कंपनियां ग्राहकों के साथ

अधिक स्वाभाविक और व्यक्तिगत बातचीत प्रदान कर सकती हैं। चैट-जी.पी.टी. को ग्राहकों के प्रश्नों के अधिक सटीक और प्रासंगिक उत्तर प्रदान करने के लिए तकनीकी सहायता या उत्पाद की जानकारी जैसे विशिष्ट डोमेन के लिए बेहतर बनाया जा सकता है। चैट-जी.पी.टी. ग्राहकों की संतुष्टि में सुधार कर सकता है और ग्राहक सेवा एजेंटों के कार्यभार को भी कम कर सकता है।

## व्यक्तिगत सहायक (पर्सनल अस्सिस्टेंट)

चैट-जी.पी.टी. का एक अन्य उपयोग निजी सहायकों (पर्सनल अस्सिस्टेंट) के रूप में भी किया जा सकता है। व्यक्तिगत सहायक (पर्सनल अस्सिस्टेंट) एक तरह का सॉफ़्टवेयर एप्लिकेशन है जो उपयोगकर्ताओं को अपॉइंटमेंट्स, रिमाइंडर सेट करने और उनके सवालियों के जवाब देने जैसे कार्यों में सहायता करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। यूजर (उपयोगकर्ताओं) के साथ अधिक स्वाभाविक और संवादात्मक बातचीत प्रदान करने के लिए व्यक्तिगत सहायकों (पर्सनल अस्सिस्टेंट) में चैटजीपीटी का उपयोग किया जा सकता है। चैटजीपीटी जैसे भाषा मॉडल का उपयोग करके, हम निजी सहायक (पर्सनल अस्सिस्टेंट) ऐसी प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न कर सकते हैं जो अधिक मानवीय और आकर्षक लगे, जो उपयोगकर्ता की संतुष्टि और प्रतिधारण में सुधार कर सकती हैं।

## सीमाएँ

चैट-जी.पी.टी. एक बहुत प्रतिभाशाली भाषा मॉडल है जो की ए.आई. (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) की मदद से डिज़ाइन किया गया है। लेकिन आज तो कोई भी वस्तु पूर्णतः सटीक नहीं बन पायी है जिसमें कोई-न-कोई खामि ना हो। आपने वो कहावत तो सुनी ही होगी 'नो वन इस परफेक्ट इन डिंस वर्ल्ड' और ये कहावत पूर्णतः सत्य भी है। चैट-जी.पी.टी. में कई प्रभावशाली विशेषताएँ जरूर हैं लेकिन चैट-जी.पी.टी. की भी कुछ सीमाय है इसमें भी कुछ

खामियाँ हैं, आखिर इसे एक मनुष्य ने ही बनाया है। चैट-जी.पी.टी. की सबसे बड़ी खामि में से एक यह है की चैट-जी.पी.टी. आपको बायस्टड लग सकता है और इसकी वजह कुछ और नहीं बल्कि इसको डाटा के बड़े संग्रह (कार्पस) पर प्रशिक्षित किया है और जैसे की सब जानते हैं की डेटा में पक्षपात या रूढ़िवादिता हो सकती है और उसकी झलक मॉडल द्वारा उत्पन्न प्रतिक्रियाओं में भी देखने को मिलती है। परिणाम स्वरूप चैट-जी.पी.टी. अनजाने में गलत जवाब भी दे सकता है जो की पूरी तरह बायस्टड और रूढ़िवादित भी हो सकता है।

चैट-जी.पी.टी. की एक और सबसे बड़ी समस्या ये है की यह यूजर (उपयोगकर्ता) के द्वार पूछे गए सवालो के जवाब को तो देने में सक्षम है लेकिन यह यूजर के उस सवाल पूछने के सन्दर्भ को समझने में असमर्थ है। अर्थात् यूजर के सवाल पूछने का क्या सन्दर्भ, सवाल किस रूप में पूछा गया है उसका आशय क्या है यह चैट-जी.पी.टी. अभी समझने में असमर्थ है, इसकी वजह भी पानी की तरह साफ है चैट-जी.पी.टी. भी एक जटिल सॉफ्टवेयर है पर यह अभी इतना भी समझदार नहीं है की मानव मष्तिष्क की जटिलता को समझ सके और शायद आगे भी मानव मष्तिष्क को पूरी तरह न समझ सके।

## निष्कर्ष

एक शक्तिशाली और अभिनव भाषा मॉडल (ए.आई. पॉवर्ड चैटबोट) है जो हमारे टेक्स्ट के साथ बातचीत करने के तरीके में क्रांति लाने की क्षमता रखता है। जैसे-जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का क्षेत्र विकसित और बेहतर होता जा रहा है, संभावना है कि चैट जीपीटी और इसी तरह के दूसरे भाषा मॉडल प्रौद्योगिकी और समाज के भविष्य को आकार देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। संभावनाएं अनंत हैं, और यह देखना रोमांचक होगा कि चैट जीपीटी कैसे विकसित होगा और आने वाले वर्षों में इसका उपयोग कहाँ-कहाँ किया जाएगा।



# करसोग : प्राकृतिक सौंदर्य, आस्था और रहस्यों की घाटी

पवन चौहान

मण्डी (हि०प्र०)

हिमाचल का चप्पा-चप्पा प्राकृतिक सौंदर्य से लबरेज है और इन्हें निहारने के लिए कोई भी पर्यटक लालायित रहता है। प्राकृतिक सौंदर्य के इन्हीं हिस्सों में से एक है जिला मण्डी की 'करसोग घाटी' जिसका सम्मोहन देखते ही बनता है। चारों ओर से पहाड़ की चोटियों से घिरा और बीच में एक छोटा-सा समतल क्षेत्र जो प्रकृति की खूबसूरती का वह नजारा प्रस्तुत करता है कि देखने वाला इसके सौंदर्य को अवाक-सा देखता ही रह जाता है। समुद्रतल से 1404 मी० की ऊंचाई पर स्थित यह क्षेत्र हिमालय की पीरपंजाल पर्वत श्रृंखला का एक हिस्सा है। यह घाटी जहां अपने समृद्ध पारंपरिक रीति-रिवाजों प्राचीन मंदिरों व अनुठी संस्कृति और अन्य हैरान कर देने वाले तथ्य लिए जानी जाती है वहीं यह सेब की घाटी के रूप में भी जानी जाती है। यहां के देवदार, चील, खुबानी, अखरोट, बादाम आदि के पेड़ इस क्षेत्र के सौंदर्य में चार चांद लगाते हैं।



## प्रमुख दर्शनीय स्थल

### ममलेश्वर महादेव

करसोग से 2 कि०मी० की दमरी पर स्थित यह मंदिर बहुत ही प्राचीन है। इसे पांडव काल से भी पुराना माना जाता है। इस मंदिर के दो खास आकर्षण हैं जो सबको अचंभित करते हैं। एक यहां रखा बड़ा-सा भेखल की झाड़ी (यह झाड़ी आमतौर पर 15-20 से०मी० तक परिधि और 9-10 फुट ऊंची होती है) से बना लगभग डेढ़ फुट व्यास का ढोल तथा दूसरी एक बड़ा लगभग 150 ग्राम वजन (आकार में इतना कि आपकी पूरी हथेली भर जाए) का कनक का दाना जिसे सतयुग के समय का माना जाता है। करसोग के माहुंनाग के मंदिर तथा सुन्दरनगर के महादेव गांव के शिव मंदिर में भी इस भेखल की झाड़ी के शेष भाग के ढोल विद्यमान हैं। बुजुर्गों के अनुसार, इस मंदिर परिसर तथा इसके आस पास 100 से ज्यादा शिवलिंग दबे हैं जो इस स्थान की महता और लोगों की आस्था को बयां करते हैं। इस मंदिर के साथ लगता ही एक प्राचीन मंदिर है जिसे नहीं खोला जाता। लेकिन यहां के बुजुर्गों के अनुसार इस मंदिर में पांडवकाल से जुड़ी वस्तुएं संग्रहित हैं।



### कामाक्षा देवी

कामाक्षा देवी यहां ही प्रमुख पुजनीय देवी है। इसे स्थानीय लोग 'कामाख्या' या 'काओ' माता कहकर भी पुकारते हैं। यह मंदिर माता पार्वती को समर्पित है। ऐसा माना जाता है कि इस स्थान पर माता की जीभ गिरी थी। इस पूरे वर्षभर और शिवरात्रि के दौरान हजारों की संख्या में श्रद्धालु शीश नवाते हैं।



## माहुंनाग



माहुंनाग का मंदिर यहां के बखारी गांव में स्थित है। माहुंनाग को महाभारत के कर्ण का रूप माना जाता है। माहुंनाग सुकेत रियासत के लोगों का पुजनीय देवता है। सुन्दरनगर (पहले सुकेत पुकारते थे) में चैत्र नवरात्रि में लगने वाला देवता मेला में माहुंनाग मुख्य देवता होता है। इस देव की उपस्थिति ही मेले को पूर्ण करती है। माहुंनाग लोगों की सांप, बिच्छू, कीड़े-मकौड़े आदि जहरीले कीटों से रक्षा करता है। माहुंनाग का मंदिर शिमला मार्ग पर करसोग से लगभग 40 कि०मी० की दूरी पर स्थित है।

## चिण्डी

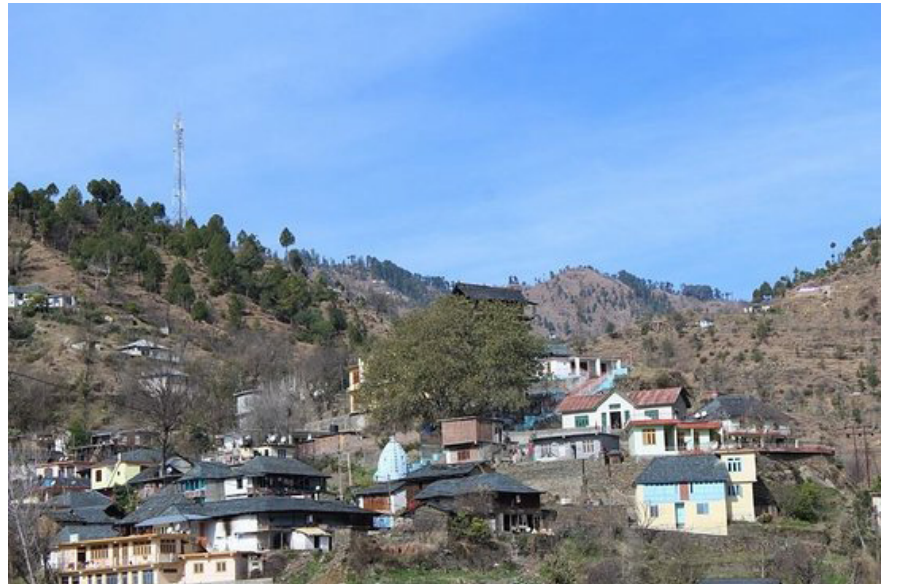
चिण्डी करसोग का एक बेहद ही रमणीय स्थल है। करसोग से लगभग 10 कि०मी० पीछे मण्डी की ओर बसा यह पूरा इलाका प्राकृतिक सौंदर्य से लदकद बहुत ही खूबसूरत जगह है। यहां का चिण्डी रेस्ट हाऊस जहां पर्यटकों के ठहरने का पूरा प्रबंध करता है वहीं यहां से दिखने वाले इस घाटी के दिलकश नजारों से भी अभिभूत करवाता है।

## पांगणा

करसोग से लगभग 25 कि०मी० दूर (मण्डी की ओर) पांगणा एक दर्शनीय गांव है। पांगणा किसी समय सुकेत रियासत की राजधानी थी। आज भी इसके प्रमाण यहां पर मौजूद हैं। यहां स्थित देवी महामाया (देवी कोट) का लकड़ी और पत्थर के मिश्रण से बना लगभग 50 फुट ऊंचा मंदिर एक ऐतिहासिक और पुजनीय स्थल है। इस मंदिर का निर्माण लगभग 1240 वर्ष पहले हुआ माना जाता है। देवी महामाया सुकेत के शासकों तथा लोगों की पुजनीय देवी है। सेब, खुमानी, पलम, अखरोट, बादाम के पेड़ों से सजे पांगणा की खूबसूरती देखते ही बनती है।

## तत्तापानी

तत्तापानी सल्फरयुक्त गरम पारनी के चश्मों के रूप में जाना जाता है। इन चश्मों में बैसाखी के दिन लगने वाले मेले, बीस भादो तथा अन्य पर्वों पर यहां पवित्र स्नान किया जाता है। करसोग से शिमला मार्ग पर जाते हुए हमें इस इलाके के दर्शन सुलभ होते हैं। यहां आपको एक बात हैरान करती है। वह यह कि एक तरफ ठंडे पानी से साथ बहती ठंडा पानी लिए सतलुज नदी है और इसी नदी के बगल में ये गर्म पानी के चश्में फूट रहे होते हैं। यह किसी अजूबे से कम नहीं है। लेकिन अब सतलुज नदी पर सलापड़ के पास हरनोड़ा में कोल डैम के बनने से गरम पानी के ये चश्में डैम के पानी में ही समा गए हैं। इनका अस्तित्व सदा के लिए मिट गया है। अब वह धार्मिक स्नान का स्थान सिर्फ लोगों की जुबां और चित्रों तक ही सीमित रह गया है। हालांकि इन चश्मों को नई जगह पर पाइप द्वारा स्थानांतरित कर दिया गया है लेकिन उसमें वह बात कहां!





## करसोग बाजार

करसोग बाजार आपकी हर जरूरत को पूरा करता है। यहां से आप ठेठ हिमाचली चीजें, वस्त्र आदि की खरीददारी के साथ बादाम, सेब, खुबानी आदि फलों की खरीददारी के साथ साथ यहां के ढाबों, होटलों में मण्डी के पारंपरिक व्यंजनों का आनंद ले सकते हैं।

## ट्रैकिंग

करसोग घाटी आपको ट्रैकिंग का मौका भी प्रदान करती है। करसोग से वाया कंडावाई होते हुए जंजैहली घाटी में स्थित माता शिकारी देवी के मंदिर तक का यह ट्रैकिंग रूट बेहद ही अच्छा है। यह रूट जहां हमें रोमांच से सराबोर करता है वहीं हमें प्रकृति के बहुत ही करीब ले जाता है।

## कब जाएं

करसोग आप पूरे वर्ष कभी भी दस्तक दे सकते हैं। लेकिन मार्च से नवंबर तक का समय यात्रा के लिए सबसे उपयुक्त है। बाकी महीनों में बर्फ के कारण रास्ते बंद होने का खतरा बना रहता है।

## कैसे पहुंचें

पक्की सड़क सुविधा के चलते आप किसी भी वाहन द्वारा यहां पहुंच सकते हैं। वैसे इस इलाके के लिए शिमला, सुन्दरनगर से नियमित बसें भी चलती हैं। सुन्दरनगर (जो चण्डीगढ़-मनाली राष्ट्रीय उच्च मार्ग-21 के किनारे बसा है) से करसोग की दूरी 100 कि०मी०, शिमला से 105 कि०मी० तथा चण्डीगढ़ से 275 कि०मी० है। करसोग से नजदीक का रेलवे स्टेशन शिमला तथा न



# डायबिटीज (शुगर) का होम्योपैथिक इलाज



डॉ० अमलेन्दु त्रिपाठी

9795513223

**म**धुमेह (Diabetes) किसी भी उम्र के व्यक्ति को प्रभावित कर सकती है। यह एक ज़िन्दगी भर चलने वाली बिमारी है जिसमें आपके रक्त शर्करा (blood sugar) का स्तर नार्मल से ऊंचा हो जाता है। इस बिमारी को प्रबंधित करना कठिन लग सकता है मगर हज़ारों मधुमेह से प्रभावित लोगों ने एक अच्छी जीवन शैली, व्यायम, सही डाइट प्लान को पालन कर के इस बीमारी से जीत हासिल की है। उन्होने अपने रक्त शर्करा के स्तर को सामान्य स्तर पर लाने के लिए कुछ दवाओं की भी आवश्यकता हो सकती है।

अधिकांश मधुमेह रोगी अक्सर एलोपैथिक दवा का विकल्प चुनते हैं। हालांकि होम्योपैथी मधुमेह के इलाज में भी

फायदेमंद हो सकती है। मधुमेह के उपचार के साथ होम्योपैथिक दवा के बारे में जानने के लिए इस ब्लॉग को पढ़ें।

## मधुमेह का संक्षिप्त विवरण

डायबिटीज मेलिटस (Diabetes Mellitus) या मधुमेह दुनिया भर में एक आम बीमारी है। यह एक मेटाबोलिक डिसऑर्डर (metabolic disorder) है जिसमें खून में मौजूद ग्लूकोस की मात्रा बढ़ जाती है। मधुमेह की देखभाल महत्वपूर्ण है क्योंकि रक्त शर्करा (blood sugar) के स्तर में वृद्धि आपके शरीर के विभिन्न अंगों के कामकाज को प्रभावित करती है। मधुमेह आपकी आंखों, हृदय, यकृत, पैरों और गुर्दे को प्रभावित कर सकती है। इसके साथ ही मधुमेह से अनिद्रा, तनाव, तंत्रा, रक्तचाप में उतार-चढ़ाव आदि जैसी समस्याएं भी हो सकती हैं।

हमारे शरीर में मौजूद इन्सुलिन ब्लड ग्लूकोस को शरीर के कोशिकाओं को तक पहुँचता है जिससे शरीर में ऊर्जा पैदा होती है इन्सुलिन की कमी या इन्सुलिन रेजिस्टेंस के कारण ब्लड ग्लूकोस की मात्रा अधिक हो जाती है। अतः शरीर में इंसुलिन का अपर्याप्त या उत्पादन नहीं होने के कारण व्यक्ति को मधुमेह (diabetes) हो जाता है।

मधुमेह के इलाज में मदद करने वाले प्राथमिक दृष्टिकोण में जीवनशैली में बदलाव और दवाएं (एलोपैथिक, होम्योपैथिक, या हर्बल) शामिल हैं। डायबिटीज रिवर्सल मेथडमधुमेह के हजारों रोगियों के लिए फायदेमंद साबित हुई है। यह ब्लॉग मधुमेह के लिए शीर्ष 10 होम्योपैथिक दवाओं के बारे में बताएगा।

## मधुमेह के लक्षण

मधुमेह (Diabetes) के कई मामलों में,

शुरुआत में कोई लक्षण नहीं होते हैं। हालांकि, ऐसे मधुमेह रोगी धीरे-धीरे जटिलताओं का अनुभव करने लगते हैं। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि आप नियमित रूप से अपने ब्लड शुगर (blood sugar) की जांच कराएं। मधुमेह के सामान्य लक्षणों में शामिल हैं:- थकान, मतली, बार-बार पेशाब आना, प्यास और भूख में वृद्धि, वजन घटना, धुंधली दृष्टि (निगाह कमजोर होना)

### मधुमेह का होम्योपैथिक इलाज।

मधुमेह में शरीर के विभिन्न अंगों में गंभीर जटिलताएं पैदा करने की प्रवृत्ति होती है। मधुमेह के लिए होम्योपैथिक उपचार एक समग्र दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है। यह मधुमेह के इलाज के लिए एक गैर-पारंपरिक चिकित्सा है। आम तौर पर, रोगी का एक लंबा और गहन शारीरिक और मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन उपयुक्त दवा लिखने में मदद करता है। हालांकि, मधुमेह का शायद ही कोई अन्य उपचार इन मूल्यांकनों पर विचार करता हो। होम्योपैथी का उपचार रोगी के स्वस्थ की जानकारी पर निर्भर करता है।

### मधुमेह के इलाज में होम्योपैथी के कार्य

होमियोपैथी अनुसार हमारे शरीर में मौजूद ऊर्जा एक बल पैदा करती है जो हमें सवस्त रखता है। यह बल आपके शरीर की ताकत को बनाये रखता है और जीवन को सही ढंग से जीने में मदद करता है। यह बीमार को बिमारी से लड़ने में मदद करता है। जब इस बल में संतुलन बिगाड़ जाता है तो शरीर की बीमारी से लड़ने की क्षमता कमजोर होती है और इंसान बीमार पड़ता है और मरीज़

दिन बा दिन कमजोर होता जाता है। होम्योपैथी के अनुसार, एक रोग जीवन शक्ति में व्यवधान का प्रतिबिंब है। होम्योपैथी पद्धति में रोगी की व्यक्तिवादी विशेषताओं को समझ कर उपचार किया जाता है।

मधुमेह में शरीर में मौजूद इंसुलिन की

मात्रा कम हो जाती है जिसके कारण ब्लड ग्लूकोस की मात्रा बढ़ जाती है। मधुमेह आनुवंशिक कारकों या परिवर्तित प्रतिरक्षा जैसी समस्याओं का परिणाम है। इसे उपचार के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

### होम्योपैथी : मधुमेह रोगियों के लिए यह तुरंत का माध्यम नहीं

यदि आप तत्काल चिकित्सा की तलाश में हैं या अपने रक्त शर्करा (blood sugar) के स्तर को तुरंत नियंत्रित करना चाहते हैं, तो होम्योपैथी उपचार चुनना एक अच्छा विचार नहीं है। होम्योपैथी उपचार को आपकी स्वास्थ्य स्थिति पर प्रभाव दिखाने के लिए कुछ समय चाहिए।

मधुमेह को पूरी तरह से ठीक होने में लंबा समय लग सकता है। ऐसे मामलों में होम्योपैथी उपचार मधुमेह की जटिलताओं को रोकने में मदद करता है। आप कुछ हफ्तों से लेकर कुछ महीनों में परिणाम देखने की उम्मीद कर सकते हैं। यदि आप त्वरित परिणामों की अपेक्षा कर रहे हैं, तो आप पारंपरिक दवाओं के पूरक के रूप में होम्योपैथी दवाओं का उपयोग कर सकते हैं या होम्योपैथी दवाओं और मधुमेह उत्क्रमण कार्यक्रम को एक साथ जोड़ सकते हैं ताकि मधुमेह उत्क्रमण चिकित्सा में तेजी लाई जा सके।

### मधुमेह के लिए होम्योपैथिक उपचार

होम्योपैथी उपचार प्राकृतिक हैं क्योंकि इस पद्धति में खनिजों, पौधों और जानवरों के अर्क का इस्तेमाल करके दवायेबनती हैं। होम्योपैथी सिद्धांत के अनुसार, किसी पदार्थ के तनु रूप में उसकी अधिकांश चिकित्सीय शक्ति होती है। इसलिए, डॉक्टर मधुमेह के रोगियों को अधिकांश होम्योपैथी दवाओं को को घुलने के बाद इस्तेमाल करने की सलाह देते हैं। होम्योपैथी उपचार के लिए प्राकृतिक पदार्थ घुलने की प्रक्रिया से गुजरता है जब

तक कि इसमें मूल प्राकृतिक पदार्थ का केवल एक अंश न हो। उसके बाद, आपको विभिन्न पदार्थों के सांद्रण से निम्नलिखित प्राप्त होते हैं:

- टैबलेट (Tablet)
- तेल (Oil)
- मलहम (Ointment)
- शुगर पैलेट (Sugar Pallets)
- बूँदें (Drops)
- क्रीम (Creams)

### सारांश

होम्योपैथी में मधुमेह के लक्षणों के उपचार के लिए कई दवाएं उपलब्ध हैं। इसलिए, ऐसी दवाएं लेने से आप स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं और मधुमेह के कारण होने वाली जटिलताओं से छुटकारा पा सकते हैं। हालांकि, मधुमेह के रोगियों को इन दवाओं का सेवन करने से पहले अपने होम्योपैथिक डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए। ऐसी दवाएं सुरक्षित हैं लेकिन, आपको उन्हें सही खुराक में ही लेनी चाहिए।

होम्योपैथी दवाएं मधुमेह टाइप-1 और टाइप-2 के लिए सहायक हैं। हालांकि, होम्योपैथी में इंसुलिन का कोई विकल्प नहीं है। लेकिन, होम्योपैथिक उपचार मधुमेह रोगियों के चयापचय पहलू को पोषण और चिकित्सीय दोनों उपायों के साथ प्रबंधित करने में मदद करता है। होम्योपैथी उपचार में इस बात का ध्यान रखा जाता है कि किसी भी दो मधुमेह रोगियों को एक जैसी दवाई ना दी जाये क्योंकि प्रत्येक रोगी की एक अलग तरह की समस्या होती है, इसलिए सभी दवाएं सभी मधुमेह रोगियों के लिए उपयुक्त नहीं होती हैं। होम्योपैथिक इलाज कई कारण ऐसे लोग हैं जो डायबिटीज रिवर्सल मेथड को चुनने के बाद इंसुलिन का सेवन बंद कर देते हैं। बड़ी संख्या में रोगियों को अब दवा की आवश्यकता नहीं है, जबकि अन्य अपनी दवाओं को 70% या अधिक तक कम करने में सक्षम थे।



# बढ़ती बीमारियों से बचने के लिए संतुलित आहार ले नियमित योग प्राणायाम अपनाये स्वस्थ रहें



**मुकेश कुमार सिंह**  
योगगुरु

आज बढ़ती उम्र में हो रही बीमारिया आधुनिक जीवनशैली की देन है कि हर इंसान परेशान है। आज अपने लिये कोई समय नहीं है बस हर समय काम चाहे आफिस हो या घर का। इस व्यस्तता भरी जिंदगी में उसके जागने और सोने का भी कोई समय नहीं होता है और न ही खाने पीने का कोई सही समय। घर के खाने को छोड़कर लोग ज्यादातर जंक फूड/ फास्ट फूड खाना ज्यादा पसंद करते हैं। जिसके कारण अनेक प्रकार के रोगों से ग्रस्त हो रहे हैं जैसे मोटापा, तनाव, हृदय रोग, जोड़ों के दर्द और कमर दर्द की भी समस्या हो रही है। आहार नियमों के विपरीत भोजन करने वाले लोग भी अक्सर परेशान रहते हैं, ज्यादातर जंक फूड/फास्ट फूड जैसे- समोसा, पिज्जा, चाउमीन, बर्गर, रोल, चाउमीन, पैटीज, मोमोज, इन सभी ने आज के खान-पान

पर अपना कब्जा कर लिया है। जंक फूड अक्सर खाने से हमारा शरीर शिथिल हो जाता है और हमारा शरीर हमेशा थका हुआ महसूस होता है ज्यादा खाने से दिल की बीमारी एवं तनाव भी बहुत बढ़ जाता है तनाव एक बहुत ही छोटा शब्द है दिखाई नहीं देता है लेकिन अंदर ही अंदर इंसान को तोड़ देता है व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक दोनों तरह से बीमार होता चला जाता है इसी तरह मोटापा और कमर दर्द भी इंसान की जिंदगी में अनेक रोगों का कारण बनता है जैसे डायबिटीज, कैंसर, हृदय रोग, डिप्रेसन की समस्याओं एवं अनेक प्रकार के रोग होने लगते हैं। आज दवा की दुकान की संख्या प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और हर दवा की दुकान पर भीड़ लगी रहती है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि कितने ज्यादा लोग बीमार हो रहे हैं। इससे बचने के लिए फास्ट फूड और जंक फूड को कम करें या खाने से बचें और घर का भोजन और मौसमी फल और मौसमी साग-सब्जी जरूर खाएँ कुछ

समय प्रकृति के साथ जरूर बिताये यह जीवन जीने की एक अलग खुशी देता है सुबह सूरज निकले से पहले उठे उगता सूरज एक नई ऊर्जा और नई प्रेरणा और एक सकारात्मक ऊर्जा और आत्मविश्वास देता है जिससे हमारा शरीर मजबूत होता है। कई सारे रोगों से लड़ने की शक्ति मिलती है। सुबह सूरज की किरणों से विटामिन डी मिलता है जिससे हमारी हड्डिया और मजबूत होती है और हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है जिससे बढ़ती उम्र में स्वस्थ और निरोगी रहे। उत्तम स्वास्थ्य के लिए संतुलित आहार और नियमित योग एवं प्राणायाम, करें और शारीरिक श्रम करें, नियमित सुबह टहले और थोड़ी दूरी जाने के लिए वाहन न निकलें जितना हो सके पैदल चले साथ ही कुछ योग प्राणायाम जरूर करें जिससे हमेशा शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रहें। बीमारियों से बचने के लिए कुछ सरल योग एवं प्राणायाम इस प्रकार है।

## ताड़ासन

ताड़ शब्द का अर्थ है ताड़ या खजूर का पेड़। इस आसन के अभ्यास से स्थायित्व व शारीरिक दृढ़ता प्राप्त होती है यह खड़े होकर किये जाने वाले सभी आसनों का आधार है। इसलिए ताड़ासन को नियमित करना चाहिए।



### अभ्यास की विधि

- सर्वप्रथम पैरों के बल खड़े हो जाएं तथा दोनों पैरों के बीच दो इंच की दूरी रखें।
- सांस अंदर ले हाथों को सामने की ओर कंधों के स्तर से तक उठाएं।
- दोनों हाथों की अंगुलियों को आपस में एक-दूसरे में फसाएं तथा हथेलियों को बाहर की ओर श्वास भरते हुए दोनों भुजाओं को सिर से ऊपर उठाएं।
- भुजाओं को ऊपर ले जाने के साथ-साथ पैर की एड़ियों को जमीन से ऊपर उठाएं और पैर की अंगुलियों पर अपना संतुलन बनाएं। इस स्थिति में अपनी क्षमतानुसार रूके रहें।
- एड़ियों को वापस जमीन पर ले आएं।
- श्वास को छोड़ते हुए हाथ की अंगुलियों को अलग-अलग करें, भुजाओं को वापस लाएं, इसके बाद प्रारंभिक स्थिति में वापस आ जाएं।

### लाभ

- इस आसन के नियमित अभ्यास से शरीर में स्थिरता आती है। यह मेरूदण्ड से सम्बन्धित नाड़ियों के रक्त संचय को ठीक करने में भी सहायक है। किशोरों के शरीर की ऊँचाई बढ़ती है।
- व्यक्ति तनाव रहित होता है उसकी एकाग्रता बढ़ती है। मानसिक शांति मिलती है।

### सावधानियां एवं सीमाएं

- जिन व्यक्तियों को आर्थराइटिस तथा चक्कर आने जैसी समस्याएं हो उन्हें एड़ियों पर उठने पर प्रयास नहीं करना चाहिए। अन्तिम स्थिति में रूकने की समय सीमा अपने सामर्थ्यानुसार रखनी चाहिए।

## वृक्षासन

वृक्ष शब्द का अर्थ है पेड़। इस आसन की अंतिम अवस्था में शारीरिक स्थिति एक पेड़ के आकार में बनती है इसलिए इस आसन का नाम वृक्षासन है।

- वृक्षासन का अभ्यास करते समय सीधे खड़े हो जाए दोनों पैरों के बीच में 2 इंच का अंतर बनाये।
- सांस को शरीर के बाहर छोड़ते हुए दाएं पैर को ऊपर रखें एड़ी मूलाधार क्षेत्र से मिली होनी चाहिए।
- बिल्कुल समाने की तरफ देखें सीधी नजर सही संतुलन बनाने में अत्यन्त सहायक है।
- सांस को अंदर लेते हुए दोनों हाथों को ऊपर की ओर ले जाकर नमस्कार मुद्रा में जोड़े। और शरीर में किसी प्रकार का तनाव न महसूस करें।
- इस स्थिति में 10 से 30 सेकेंड या अपनी क्षमतानुसार रूके रहें।
- सांसो को बाहर छोड़ते हुए दोनो हाथों को नीचे लाये।

- शरीर को शिथिल करते हुए इस आसन को दूसरे पैर से करें।
- इस आसन का अभ्यास कम से कम तीन बार दोनों पैरों पर करें या अपनी क्षमतानुसार करें।

### वृक्षासन के लाभ

- यह आसन तंत्रिका से संबंधित स्नायुओं के समन्वय और पैरों को मजबूती प्रदान करता है एवं संतुलन बनाने में सहायक है।
- एकाग्रता बढ़ाने में सहायक है।
- यह आसन मस्तिष्क में स्थिरता और संतुलन लाता है।

### सावधानियां

- आर्थराइटिस, माइग्रेन, उच्च रक्त चाप से पीडित है या चक्कर आने पर इस आसन को न करें।



## सेतुबंधासन

- सेतुबंधासन शब्द का अर्थ सेतु का निर्माण है। इस आसन में शरीर की आकृति एक सेतु की अवस्था में रहती है इसलिए इसका नाम सेतुबंधासन नाम दिया गया है।

### अभ्यास विधि

- दोनों पैरों को घुटनों से मोड़ते हुए एड़ियों को नितंबों के पास लाएं।
- हाथों से पैर के टखनों को मजबूती से पकड़े और घुटने एवं पैरों को एक सीध में रखें।
- श्वास को अंदर खींचते हुए धीरे-धीरे अपने नितंब एवं धड को ऊपर की ओर उठाएं और पुलनुमा आकृति बनाएं।
- अपनी क्षमतानुसार रूकें और सांस लेते रहें। स्वास छोड़ते हुए धीरे-धीरे अपनी मूल अवस्था में आएँ और श्वासन में लेटकर शरीर को शिथिल छोड़ दें। कम से कम यह अभ्यास तीन बार करें।

### लाभ

- अवसाद एवं चिंता से मुक्त करता है कमर के निचले हिस्से की मांसपेशियों को मजबूत बनाता है।
- इसके नियमित अभ्यास से पाचन क्षमता बढ़ती है। पाचन तंत्र में सुधार होने से शरीर स्वस्थ रहता है घुटनों के लिए भी यह अच्छा



होता है।

- उदर के अंगों में कसावट लाता है तथा उदर के समस्त रोगों में हितकारी है। जठराग्नि को तीव्र बनाता है।
- पेट में गैस बनने की शिकायत दूर कर शरीर को स्फूर्तिवान् तथा आकर्षक बनाता है।

### सावधानियां

- अल्सर और हार्निया से ग्रसित व्यक्तियों को इस आसन का अभ्यास नहीं करना चाहिए।

## त्रिकोणासन

त्रिकोणासन शब्द का अर्थ त्रि अर्थात् तीन कोणों वाला आसन है चूंकि आसन के अभ्यास के समय धड़, बाहुओं एवं पैरों से बनी आकृति त्रिभुज के सदृश्य दिखाई देती है, इसलिए इस अभ्यास को त्रिकोणासन कहते हैं।

### अभ्यास विधि

- त्रिकोणासन के अभ्यास के समय दोनों पैरों को 3 फुट तक फैलाकर आराम से खड़ा होना चाहिए।
- दोनों हाथों को बगल से कंधों के स्तर तक धीरे-धीरे उठाना चाहिए।
- श्वास को शरीर से बाहर छोड़ते हुए धीरे-धीरे दाईं तरफ झुकना चाहिए। झुकने के बाद दाएं हाथ की उंगलियों को पीछे की ओर रखना चाहिए।
- बायें हाथ को सीधे ऊपर की ओर रखते हुए दायें हाथ की सीध में लाना चाहिए। तत्पश्चात् बाईं हथेली को आगे की ओर लाना चाहिए।



- सिर को घुमाते हुए बाएं हाथ की बीच वाली अंगुली को देखना चाहिए।
- सामान्य श्वास लेते हुए इस आसन में अपनी क्षमतानुसार रूकना चाहिए।
- श्वास शरीर के अंदर लेते हुए प्रारंभिक अवस्था में वापस आ जाय।
- इस आसन को दूसरी ओर भी करना चाहिए।

### लाभ

- मेरूदण्ड को लचीला बनाता है, पिण्डली, जाघों और कटि भाग की मांसपेशियों को मजबूत बनाता है तथा फेफड़ों की कार्यक्षमता को बढ़ाता है।

### सावधानियां एवं सीमाएं

- स्लिप्ट डिस्क, साइटिका एवं उदर में किसी प्रकार की सर्जरी होने के बाद इस आसन का अभ्यास नहीं करना चाहिए।
- शरीर की क्षमता तथा सीमा से परे जाकर यह अभ्यास न करें तथा शरीर को सीमा से अधिक न खींचें।
- अभ्यास करते समय यदि आप जमीन को न छू सकें तो घुटनों को छूनों का प्रयास करें। कभी भी जबरजस्ती शरीर के साथ न करें। क्षमतानुसार ही नीचे झुकें।

## सर्वागासन

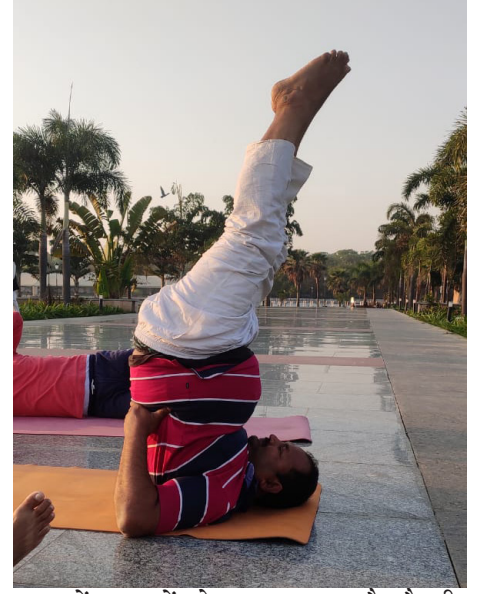
इस आसन को करने से शरीर के सभी अंगो को लाभ मिलता है इसलिए इस आसन को सर्वागासन कहा जाता है।

### अभ्यास की विधि-

- इस आसन को करने के लिए सबसे पहले पीठ के बल लेट जाएं। एक साथ अपने पैरों कूल्हे और फिर कमर को उठाएं। शरीर का पूरा भार आपके कन्धों पर आ जाये। अपनी पीठ से अपने हाथों से सहारा दें।
- अपनी दोनों कोहनियों को पास में लें आर्ये और हाथों को पीठ के साथ रखें, कन्धों को सहारा देते रहें। कोहनियों को जमीन पर दबाते हुए और दोनों हाथों को कमर पर रखते हुए अपनी कमर और पैरों को सीधा रखें। शरीर को सीधा करें शरीर का पूरा भार आपके दोनों कन्धों व हाथों के ऊपरी हिस्से पर होना चाहिए न कि आपके सिर और गर्दन पर। अपनी क्षमतानुसार इस आसन में रूके रहें।
- अपने दोनों पैरों को सीधा व मजबूत रखें। अपने पैरों कि उँगलियों को नाक की सीध में लें आर्ये। अपनी गर्दन पर ध्यान दें उसको जमीन पर न दबाएं गर्दन को मजबूत रखें और मासपेशियों को सिकोड लें अपनी छाती को ठोडी से लगा लें। गर्दन में दर्द महसूस हो रहा है तो आसन से धीरे-धीरे बाहर आ जाय।
- लंबी गहरी सांस लें जितनी देर इस आसन में रह सकते है अपनी क्षमतानुसार बने रहे।

### लाभ

- इस आसन को नियमित करने से रक्त-संचार की दिशा परिवर्तित होकर रक्त आसानी से हृदय की ओर दौडने लगता है। इस आसन से हृदय रोगियों को विशेष लाभ व आराम मिलता है।



- हाथों व कन्धों को मजबूत बनाता है और पीठ को अधिक लचीला बनाता है।
- कब्ज से राहत देता है और पाचन क्रिया को सक्रिय बनाता है।
- महिलाओं और पुरुषों के प्रजनन अंगों को स्वस्थ,सबल व विकसित करता है।
- मोटापा,बंध्यापन, प्रदर आदि रोगों को दूर कर महिलाओं को स्वस्थ व सुडौल बनाता है।

## भुजंगासन

भुजंग का अर्थ सांप अथवा नाग है। इस आसन में शरीर की आकृति सांप के फन की तरह ऊपर उठती है जिसके कारण इस आसन को भुजंगासन कहते है।

### अभ्यास विधि

- सर्वप्रथम पेट के बल लेट जाएं और अपने दोनों हाथों पर सिर टिकाते हुए शिथिल रखें। अब अपने दोनों पैरों को आपस में मिला लें।
- हाथों को शरीर के ठीक बगल में ऐसा रखें कि हथेलियां और कोहनियां जमीन पर टिके रहें।
- श्वास को धीरे-धीरे अंदर खींचते हुए टुडडी और नाभि क्षेत्र तक शरीर को ऊपर उठाएं। अपनी क्षमतानुसार होल्ड करें। पुनः वापस लौटते हुए ललाट को जमीन पर टिकाएं।
- यह सरल भुजंगासन कहा जाता है
- हथेलियों को वक्ष के बगल में रखें और कोहनियां ऊपर की ओर उठी हुई होनी चाहिए।
- धीरे-धीरे श्वास को भरते हुए टुडडी एवं नाभि क्षेत्र तक के शरीर को ऊपर उठाएं रखें।
- पुनः श्वास को बाहर छोड़ते हुए ललाट को जमीन पर शिथिल होने

दें और हथेलियों के ऊपर सिर तथा पैर को फैलाकर शरीर को शिथिल करें।

### लाभ

- तनाव प्रबंधन के लिए सर्वश्रेष्ठ आसन है।
- पीठ दर्द और श्वास नली से संबंधित समस्याओं को दूर करता है।
- यकृत (लीवर) के सभी रोगों को दूर कर रक्त बनाने की प्रक्रिया तेज करता है।
- भोजन के बाद गैस का ऊपर चढ़ना, डकार आने पर राहत मिलना उदराध्यान तथा पाचन की कमियां आदि रोगों को दूर कर उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करता है।

### सावधानियां

- जो लोग हर्निया, अल्सर से पीडित हो उन्हें इस आसन का अभ्यास नहीं करना चाहिए।



# कंपनी क्वार्टर मास्टर परमवीर चक्र हवलदार अब्दुल हमीद

तारादत्त भट्ट

21 वर्ष की आयु में अब्दुल हमीद जीवन यापन के लिए रेलवे में भर्ती होने के लिए गए परंतु उनके संस्कार उन्हें सेना में भर्ती होकर देश सेवा के लिए प्रेरित कर रहे थे 1954 में उन्होंने एक सैनिक के रूप में अपना कार्य प्रारंभ किया 27 दिसंबर 1954 को ग्रेनेडियर्स इन्फैंट्री रेजीमेंट में शामिल किए गए। जम्मू-कश्मीर में तैनात अब्दुल हमीद पाकिस्तान से आने वाले घुसपैठियों की खबर लेते हुए उन्हें मजा चखाते रहते थे ऐसे ही एक आतंकी इनायत अली को जब उन्होंने पकड़वाया तो प्रोत्साहन स्वरूप उनको पदोन्नति देकर सेना में लांस नायक बना दिया गया।



चित्रकार तू चित्र बना दे इन सैनिक मतवालों का  
मातृ भूमि हित बलिवेदी पर शीश चढ़ाने वालों का ॥

जौहर की ज्वाला को जगा दे आग लगा दे प्राणों में  
नूतन शक्ति जोश जगा दे भारत के दीवानों में  
दुश्मन के पैटन टैंक और जैट जलाने वालों का  
मातृ भूमि हित बलिवेदी पर शीश चढ़ाने वालों का ॥

**वीर** अब्दुल हमीद का जन्म उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले में मकई नदी के किनारे बसे छोटे गांव धामपुर के निर्धन कायमखानी मुस्लिम दर्जी परिवार में हुआ था। आजीविका के लिए कपड़ों की सिलाई का काम करने वाले मोहम्मद उस्मान के पुत्र अब्दुल हमीद की रूचि अपने इस पारिवारिक कार्य में बिल्कुल नहीं थी कुश्ती के दांव पेंच ओ में रुचि रखने वाले पिता का प्रभाव उस पर था। लाठी चलाने कुश्ती लड़ने पानी से उस नाती नदी को पार करने गुलेल से निशाना लगाने में हमीद पारंगत थे। हमीद का एक बड़ा गुण था सबकी यथासंभव सहायता करने को तत्पर रहना। किसी अन्याय को सहना उनको नहीं आता था। एक बार जब किसी गरीब किसान की फसल जमींदार के लगभग 50 घंटे बलपूर्वक काट कर ले जाने के लिए किसान के खेत पर पहुंचते तो हमीद ने उनको ललकार कर उनको बिना अपना मंतव्य पूरा किया जैसे ही लौटने के लिए मजबूर कर दिया। इसी प्रकार बाढ़ प्रभावित गांव की नदी में डुबकी दो युवतियों के प्राण बचाकर अपने अदम्य साहस का परिचय दिया।

21 वर्ष की आयु में अब्दुल हमीद जीवन यापन के लिए रेलवे में भर्ती होने के लिए गए परंतु उनके संस्कार उन्हें सेना में भर्ती होकर देश सेवा के लिए प्रेरित कर रहे थे 1954 में उन्होंने एक सैनिक के रूप में अपना कार्य प्रारंभ किया 27 दिसंबर 1954 को ग्रेनेडियर्स इन्फैंट्री रेजीमेंट में शामिल किए गए। जम्मू-कश्मीर में तैनात अब्दुल हमीद पाकिस्तान से आने वाले घुसपैठियों की खबर लेते हुए उन्हें मजा चखाते रहते थे ऐसे ही एक आतंकी इनायत अली को जब उन्होंने पकड़वाया तो प्रोत्साहन स्वरूप उनको पदोन्नति देकर सेना में लांस नायक बना दिया गया। 1962 में चीन ने भारत पीठ में छुरा घोंपा तो अब्दुल हमीद उसमें सेना में तैनात थे। उनको अपने अरमान पूरे करने का विशेष अवसर नहीं मिला उनका अरमान

था कोई विशेष पराक्रम दिखाते हुए शत्रु को मार गिराना। 1965 में पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया अब्दुल हमीद को पुनः अपनी जन्म भूमि के प्रति अपना कर्तव्य निभाने का अवसर प्राप्त हुआ। मोर्चे पर जाने से पूर्व उन्होंने अपने भाई को कहा कि पलटन में उनकी बहुत इज्जत होती है जिसके पास कोई चक्र होता है मुमकिन हो हम जंग में लड़कर कोई ना कोई चक्कर लेकर जरूर लौटेंगे।

10 सितंबर 1965 को भारत पाकिस्तान युद्ध निर्णायक मोड़ पर था पर पाकिस्तान का नापाक इरादा अमृतसर पर अपना अधिकार कर लेना था। अमृतसर से पश्चिम की ओर वीर अब्दुल हमीद कुसूर क्षेत्र में तैनात थे। यहीं से पाकिस्तानी कमांडर ने आगे बढ़कर अमृतसर को घेरने की योजना बनाई थी। योजना अनुसार पैटर्न टैंक के फौलादी लाव लश्कर के साथ फौलादी गोले बरसाते हुए दुश्मन फौज भारतीय सेना पर टूट पड़ी पर स्थिति की गंभीरता को समझने में हमीद को देर न लगी उन्होंने देखा कि दुश्मन मुल्क की तैयारी बहुत अधिक है वहीं टैंकों की भीषण आक्रमण को रोकने में मृत्यु निश्चित है लेकिन हमीद को अपनी जान से ज्यादा देश प्यारा था सच्चे सिपाही के रूप में मातृभूमि के प्रति अपने कर्तव्य को निभाना चाहते थे।

उन्होंने मन ही मन में संकल्प लिया कि वह दुश्मन को एक इंच भी आगे नहीं बढ़ने देंगे। वीर अब्दुल हमीद बिना समय गुजारे ही अपनी जीप को एक टीले के सहारे रोककर पाकिस्तानी पैटन टैंकों पर भीषण गोलाबारी करने लगे। देखते ही देखते अब्दुल हमीद ने मिट्टी के घर की तरह तीन पाकिस्तानी टैंकों को ध्वस्त कर दिया। अजेय समझे जाने वाले पाकिस्तानी टैंक के ऊपर वीर अब्दुल हमीद के गोले इतने सधे हुए थे कि गोले पडते ही उनमें आग लग जाती थी अपने वीर अब्दुल हमीद की बहादुरी देख भारतीय जवान जोश में भर गये और दुश्मन पर टूट पड़े। अपने

पेटेंट टैंक ध्वस्त होते देख पाकिस्तानी कमांडर गुस्से से पागल हो गया।

अपने टैंकों पर गोले बरसाने वाले भारतीय को उसकी निगाहें तलाश में लगी आखिरकार उनकी निगाहों ने वीर अब्दुल हमीद को टीले के पीछे देख लिया फिर क्या था पूरी पाकिस्तानी सेना के टैंकों का मुंह अब्दुल हमीद की तरफ मुड़ गया और देखते ही देखते दुश्मन की गोली अब्दुल हमीद की जीप के आगे-पीछे, दाएं-बाएं सभी ओर गिरने लगे। दरअसल वह और उनकी जीप ही अब दुश्मन का निशाना बन चुकी थी लेकिन वीर अब्दुल हमीद तो देश पर मर मिटने के लिए सेना में भर्ती हुए थे और मौत का डर कभी था ही नहीं। आतः वह साहस के साथ मोर्चे पर डटे रहे। आग और गोले के बीच देश का यह बहादुर सिपाही अपनी तोप जीप से पाकिस्तान के चौथे टैंक पर गोला फेंक रहा था कि दुश्मन के गोले का एक भीषण प्रहार उन पर हुआ और भारत मां का लाडला सिपाही मातृभूमि की रक्षा करते हुए देश पर शहीद हो गया।

उनके बलिदान ने भारतीय सेना में जोश भरा जिससे दुश्मन का दिल दहल उठा। वीर अब्दुल हमीद ने अपनी शहादत को साबित किया कि जंग हथियारों से नहीं बल्कि हौसलों से लड़ी जाती है। इस वीर को मरणोपरांत 'वीर अब्दुल हमीद' नाम मिला और सेना का सर्वोच्च सम्मान 'परमवीर चक्र' मिला। चौथी ग्रेनेडियर्स द्वारा कुसूर क्षेत्र में बनाई वीर अब्दुल हमीद की समाधि आज भी देश पर मर मिटने की प्रेरणा देती है।

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे  
हर बरस मेले,  
वतन पर मिटने वालों का  
यही बाकी निशां होगा ॥



# सामाजिक बदलाव में शिक्षा की भूमिका



सुषमा त्रिपाठी

हमारे समाज में शिक्षा सामाजिक परिवर्तन और विकास का एक बहुत ही महत्वपूर्ण माध्यम है जो कि स्वयं विकास प्रक्रिया में एक आवश्यक उत्पादक सामग्री का गठन करती है। जिसे आधुनिक समाज में व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है।

जब भी मनुष्य को परिवर्तन की आवश्यकता हो तभी सामाजिक परिवर्तन हो सकता है। कोई भी समाज हो वह शिक्षा के माध्यम से ही अच्छा परिवर्तन ला सकता है। सामाजिक आर्थिक प्रगति हासिल करने, आए वितरण में सुधार रोजगार के नए अवसर लाकर गरीबी उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जानी चाहिए। यह ग्रह के बदलते सामाजिक आर्थिक मुद्दों पर ज्ञान जागरूकता सूचना कौशल और मूल्यों का प्रसार करके उस प्रक्रिया को तेज करने और काम करने में मदद कर सकता है। इस प्रकार शिक्षा सामाजिक विकास सुधार की मूल पद्धति है

सामाजिक बदलाव में शिक्षा की भूमिका में एक शिक्षक ही होता है जो विद्यार्थी के जीवन में रंग भरता है और अंत तक मार्गदर्शक की भूमिका अदा करता है। और पूरे समाज को रास्ता दिखाने का काम करता रहता है। तभी तो शिक्षक को यानी स्कूल में पढ़ाने वाले मास्टर साहब को हमारे समाज में उच्च स्थान की प्राप्ति हुई है। समाज में उच्च दर्जा दिया गया है। क्योंकि जब बच्चा थोड़ा सा बड़ा होता है और स्कूल भेजा जाता है तो उसे ज्ञान का पहला पाठ एक शिक्षक ही देता है

जो व्यक्ति की स्वयं और दुनिया की समाज समाज को समृद्ध करती है। मनुष्य के जीवन में हर तरह से देखा जाए तो शिक्षा को लेकर एक अभूतपूर्व परिवर्तन देखने को मिला है शिक्षा ने समाज की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए युवा पीढ़ी के समाजीकरण के एजेंडे के रूप में कार्य करती है यह बच्चों को नए-नए निर्देशन देने का कार्य करती है। और बुद्धि के विकास में सहायता करता है। और समाज में स्वयं की क्षमता को आगे की ओर बढ़ाने में भी मदद करता है। सामाजिक बदलाव में शिक्षा की भूमिका में एक शिक्षक ही होता है जो कि विद्यार्थी के जीवन में रंग भरता है और अंत तक मार्गदर्शक की भूमिका अदा करता रहता है। और पूरे समाज को रास्ता दिखाने

का काम करता रहता है। तभी तो शिक्षक को यानी स्कूल में पढ़ाने वाले मास्टर साहब को हमारे समाज में उच्च स्थान की प्राप्ति हुई है। समाज में उच्च दर्जा दिया गया है। क्योंकि जब बच्चा थोड़ा सा बड़ा होता है और स्कूल भेजा जाता है तो उसे ज्ञान का पहला पाठ एक शिक्षक ही देता है

शिक्षा की भूमिका में शिक्षा का उपयोग व्यक्ति को सशक्त बनाने के लिए एक उपकरण के रूप में किया जा सकता है। शिक्षा एक ऐसा मजबूत हथियार है जो व्यक्ति और समुदाय दोनों में बड़े परिवर्तन लाता है। यह व्यक्तियों के दृष्टिकोण महत्वाकांक्षाओं को काफी हद तक अध्ययन करता है और जाति व्यवस्था अस्पृश्यता दहेज प्रथा और

कन्या भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक समस्याओं के उन्मूलन मदद करता है। लोगों को जन जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षित करके समाज से भेदभाव मिटा दिया जाता है। शिक्षा ने पुरुषों के जीवन में हर पहलू पर अभूतपूर्व परिवर्तन लाए हैं शिक्षा कैसी प्रक्रिया है जो कि सामाजिक व्यवहारिक जीवन में बहुत ज्यादा परिवर्तन लाता है। या एक ऐसी प्रक्रिया है जो प्रत्येक व्यक्ति को समाज की गतिविधियों में काफी परिवर्तन देखने को मिला है और ग्राम जैसे-जैसे शिक्षा का प्रसार होता गया का मांस नेम समाज में व्यक्तियों की परिस्थिति दृष्टिकोण रहन-सहन खानपान और सामाजिक रीति-रिवाजों पर काफी असर देखने को मिलता है। और इससे संपूर्ण समाज का स्वरूप ही बदल गया है।

**शिक्षा सामाजिक सुधार एवं प्रगति-** शिक्षा समाज के व्यक्तियों को इस योग्य बनाती है कि वह समाज में व्याप्त समस्याओं कुरीतियां गलत परंपराओं के प्रति सचेत होकर उसकी आलोचना करते हैं कामा और धीरे-धीरे समाज में परिवर्तन होता जाता है। शिक्षा समाज के प्रति लोगों को जागरूक बनाते हुए उसमें प्रगति का आधार बनाती है जिस प्रकार शिक्षा से पहले वर्ग विशेष का अधिकार था जिससे समाज का रूप स्तर अलग तरीके का ही था जब से अत्याधिक धार्मिक कट्टरता रूढ़िवादिता एवं भेदभाव या कालांतर में शिक्षा समाज के सभी वर्गों के लिए अनिवार्य बनाई गई जिससे की स्वतंत्रता के पश्चात सामाजिक प्रगति एवं सुधार स्पष्ट दिखाई दे रहा है। शिक्षित होने की वजह से समाज में कुरीतियों की प्रस्तुति दृष्टिकोण रहन-सहन खानपान रीति रिवाजों पर काफी असर पड़ा और संपूर्ण समाज का स्वरूप भी बदल गया।

समाज शिक्षा के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करता है तो ठीक उसी प्रकार शिक्षा भी समाज को प्रत्येक पक्ष पर प्रभावित करती है चाहे आर्थिक राजनीतिक सांस्कृतिक स्वरूप

हो वह स्पष्ट ही दिखाई देता है। शिक्षा और सामाजिक नियंत्रण - शिक्षा समाज का स्वरूप बदल कर उस पर नियंत्रण रखती है। अर्थात् व्यक्ति के देखने का नजरिया और उसका क्रियाकलापों में परिवर्तन समाज को गतिशील बनाते हैं। शिक्षा व्यक्ति के दृष्टिकोण में परिवर्तन करके उसके क्रियाकलापों परिवर्तन करके समूह मन का निर्माण करती है। और इससे अर्थव्यवस्था दूर करके उपयुक्त सामाजिक अर्थव्यवस्था का निर्माण करती है।

**शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन -** समाज की संरचना को मनुष्य ने ही किया है और ग्राम और समाज का आधार मानव क्रिया है अंतः क्रिया सदा चलती रहेगी और शिक्षा की क्रिया के अंतर्गत आती रहेगी इसलिए शिक्षा व्यवस्था जहां पर समाज प्रभावित होता है और वही संपन्न को परिवर्तित भी करती है जिस प्रकार स्वतंत्रता के बाद सबके लिए शिक्षा एवं समानता के लिए शिक्षा हमारे समाज के लिए मुख्य लक्ष्य रहे हैं इससे शिक्षा का प्रचार प्रसार हुआ और समाज का पूरा विभाग परिवर्तित होने लग गया। आध्यात्मिक मूल्यों के स्थान पर भौतिक मूल्य अधिक लोकप्रिय हुआ सादा जीवन उच्च विचार से अब हर वर्ग अपनी इच्छाओं के अनुसार जीना चाहता है। शिक्षा के जातिगत लैंगिक असमानता को कभी हद तक दूर करने का प्रयास किया गया। और ग्रामीण समाज अब तो शहरी समाजों में बदलने लगे और सामूहिक परिवारों का चलन कम हो रहा है शिक्षा के द्वारा सामाजिक परिवर्तन और उसके द्वारा शिक्षा पर प्रभाव दोनों ही तथ्य अपने स्थान पर स्पष्ट हैं। शिक्षा समाज के बालकों के समाजीकरण करके उनको उनकी सेवा करती है इसका उद्देश्य युवकों को सामाजिक मूल्यों विश्वासों समाज के प्रति भाव को आत्मसात करने के लिए तैयार करना और उनको समाज की क्रियाओं में भाग लेने के लिए उत्साहित करना और तैयार करने बनाना है शिक्षा व्यक्ति व समाज

के लिए यह कार्य करती है।

**शिक्षा व्यक्ति व समाज की प्रक्रिया का आधार -** शिक्षा को चाहे व्यक्तित्व का विकास कहें या सामाजिक प्रक्रिया यह दोनों एक ही प्रकार के एक समान कहे जाते हैं। वह व्यक्ति व समाज से संबंध स्थापित करती है और विराम शिक्षा समाज के गतिशील बनाती है उनके नाम और विकास का आधार प्रदान करती है। समाज के व्यक्तियों का व्यक्तित्व विकास - शिक्षा द्वारा व्यक्तित्व का विकास होता है। व्यक्तित्व के विकास का मतलब शारीरिक चारित्रिक नैतिक और बौद्धिक गुणों के विकास के साथ-साथ सामाजिक गुणों का विकास होना। विकसित व्यक्तित्व व मूल्य समाज की प्रगति का आधार बनता है।

**सांस्कृतिक व सभ्यता के हस्तांतरण की प्रक्रिया -** शिक्षा समाज के सांस्कृतिक एवं सभ्यता के हस्तांतरण का आधार बनती है। शिक्षा के इस कार्य के विषय में शिक्षा का कार्य समाज के सांस्कृतिक मूल्यों और व्यवहार के प्रति मानव को अपने तरुण और शक्तिशाली सदस्यों के रूप में समाज में प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार शिक्षा सभी सामाजिक परिवर्तन का निर्माता और निर्देशक है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के लिए एक शक्ति को मजबूत करने स्थापित करने और मनाने के लिए एक मजबूत और टिकाऊ कदम उठाना चाहती है। जो समाज में स्थिरता और निरंतरता प्रदान करती है। शिक्षा समाज में बदलाव का संचार होता है। लोगों का आत्मनिर्भर होना तय होता है। जो आने वाले किसी भी बदलाव के लिए तैयार होते हैं शिक्षा एवं विचारधारा संस्कृति और अंतः क्रिया में परिवर्तन को प्रभावित करना शिक्षा का उद्देश्य है और यही समाज को गतिशील जीवंत और समृद्ध बनाती है। इस प्रकार सामाजिक बदलाव में शिक्षा की भूमिका सर्वोपरि और महत्वपूर्ण साबित हुई है।



## समय-चक्र

मैं समय चक्र हूँ सदियों से, इतिहास बदलते देखा है,  
मैंने उगता सूरज देखा, सूरज को ढलते देखा है।

मैंने देखे हैं सिंहासन,  
मैंने देखे हैं सजे मुकुट।  
मैंने देखे हैं रक्त-क्षुधित,  
मैंने देखे हैं सुभट लकुट।

मैंने सोहर मंगल गाये, यम को हँसते भी देखा है।  
मैं समय चक्र हूँ सदियों से, इतिहास बदलते देखा है।

अंकुर को बरगद में ढलते,  
बरगद को अंकुर को छलते।  
निर्धन को ठग कर इठलाते,  
निर्बल को खुद पर झुंझलाते।

मैंने गंगा की पावनता, के साथ प्रलय भी देखा है।  
मैं समय चक्र हूँ सदियों से, इतिहास बदलते देखा है।

थे अजर उन्हें देखा झरते,  
नवकोपल को देखा मरते।  
भाई को भाई से डरते,  
छल अपनों से अपने करते।

मैंने बेटों की अर्थी को, बाबा के कंधे देखा है।  
मैं समय चक्र हूँ सदियों से, इतिहास बदलते देखा है।

खिलते देखे हैं कुसुमागर,  
छल-छल करते देखे सागर।  
द्रुम कोटर में पलता जीवन,  
देखा सागर तट करुण रुदन।

मैंने ऋषि अंजुरि में भरकर, सागर को पीते देखा है।  
मैं समय चक्र हूँ सदियों से, इतिहास बदलते देखा है।

जो चले साथ तो साथ रहूँ  
मैं पकड़ हाथ में हाथ रहूँ।  
मैं कर्म देखकर न्याय करूँ,  
न भूल कभी अन्याय करूँ।

मैंने कितनों को मद में भर, खुद को ही छलते देखा है।  
मैं समय चक्र हूँ सदियों से, इतिहास बदलते देखा है।

हेमराज सिंह 'हेम'

कोटा राजस्थान

## बचाएँ नीर

जल उतना ही व्यय करें, जितने से हो काम।  
मुफ्त समझते आज यदि, कल देने हैं दाम।  
सँभल - सँभल कर कीजिए, पानी का उपयोग।  
लापरवाही एक दिन, बने भयंकर रोग।  
कल की चिंता हित उचित, आज बचाएँ नीर।  
जल न मिलेगा बूँद भर, मिले प्यास की पीर।  
खोल सबमर्सीबिल धो रहे, घंटों अपनी कार।  
सोचें, कितना शुद्ध जल, बहा दिया बेकार।  
सीमित जल से कीजिए, साफ-सफाई, स्नान।  
जल बचाव की बात सुन, करें नहीं मुख म्लान।  
नल को खुला न छोड़िए, पानी बहे न व्यर्थ।  
छोटी - सी इस बात का, बहुत बड़ा है अर्थ।  
जल आवश्यक जीव हित, जाग्रत करें विवेक।  
जल व्यय पर अंकुश रखें, परामर्श है नेक।  
भूजल स्तर गिर रहा, स्थिति है अति गंभीर।  
सहसा हुआ समाप्त यदि, कहाँ मिलेगा नीर।  
वर्षा - जल की चार्जिंग, घर - घर हो अनिवार्य।  
भूजल स्तर वृद्धि हित, आवश्यक सद्कार्य।  
नदी और जलक्षेत्र को, मिले 'धरोहर' मान।  
जल संकट से मुक्ति का, एक सफल अवधान।  
जीवन हेतु अमूल्य है, वर्षा - जल की बूँद।  
आओ! इसे सहेज लें, आँखें रखें न मूँद।  
जल से हरियाली बढ़े, धरती करे शृंगार।  
होती जलाभिषेक से, चहुँदिस जय - जयकार।

गौरीशंकर वैश्य विनम्र

विकासनगर लखनऊ

## बाल जगत

दिमागी कसरत  
सुनील कुमार माथुर जोधपुर राजस्थान  
मेरे नाम का पहला अक्षर  
प्रकाश में हैं पर अंधकार में नहीं  
मेरे नाम का दूसरा अक्षर  
कृष्ण में है पर राधा में नहीं  
मेरे नाम का तीसरा अक्षर  
तितली में है पर भंकरे में नहीं  
मेरे नाम का चौथा अक्षर  
मेले में है पर बाजार में नहीं  
मेरे नाम का पांचवा अक्षर  
लड्डू में है पर पेडे में नहीं  
मेरे नाम का छठा अक्षर  
माटी में है पर बजरी में नहीं  
मेरे नाम का सातवां अक्षर  
सिनेमा में है पर दर्शक में नहीं  
मेरे नाम का अंतिम अक्षर  
कलाकंद में है पर हलवे में नहीं  
बताओं तो बताओं, मैं कौन हूँ ?  
उतर ----- प्रकृति मेल मासिक  
सुनील कुमार माथुर



## मैं अपनी ही राह चला हूँ,

मैं अपनी ही राह चला हूँ  
मैं अपनी ही राह चलूँगा॥  
निर्मित पथ की नियत नीति प्रिय नहीं मुझे है,  
मुझे अनिश्चयता को जीने की आदत है।  
भावी और विगत का चिंतन नहीं किया है,  
जो है अभी इसी क्षण जीने की आदत है॥

मैं अतीत की, और अनागत-  
की ज्वाला में नहीं जलूँगा।  
मैं अपनी ही राह चला हूँ,  
मैं अपनी ही राह चलूँगा॥

आगे हो जाने को पागल कभी नहीं था।  
पीछे रह जाऊँ तो कोई व्यथा न होगी॥  
मुझे मुक्त पंछी के गीतों में सुन लेना।  
कागज के ढेरों में मेरी कथा न होगी॥

वक्त मुझे जैसे ढालेगा  
मैं वैसे ही सहज ढलूँगा।  
मैं अपनी ही राह चला हूँ,  
मैं अपनी ही राह चलूँगा॥

लाभ हानि यश अपयश में भी हूँ तटस्थ मैं,  
आत्मवंचना की धारा में बहा नहीं हूँ।  
अपने में आनन्दित था, आनन्दित हूँ मैं,  
मैं अपने से अलग कभी भी रहा नहीं हूँ॥

मैं इतना भी मूढ़ नहीं जो  
खुद को अपने आप छलूँगा।  
मैं अपनी ही राह चला हूँ  
मैं अपनी ही राह चलूँगा॥

©वेद प्रकाश भट्ट 'सत्यकाम'

## 'सत्य क्या है?'

सत्य क्या है? और झूठ क्या!  
तय काल ही करेगा यह भी  
'मैं' सत्य था कभी और....  
आज 'हम' सत्य है।  
यह भी काल का ही फैसला।

जो उद्गार भावों के  
बैठ चुके पैदों में  
जंग लगे लोहे के टुकड़े  
और मुझमें अन्तर न था।  
ज्ञात था यह लोहा है  
पर न हथियार बन सके  
और न मानव सुखद उपकरण।

कोई हमें तलाशें...!  
ऐसी खूबी भी कहाँ थी?  
जंगी लोहा भला कब काम लेता  
लोहार के हथौड़े की चोट  
भला कैसे सहता।

परिचय की गाँठ  
क्रोध की ओट में  
पाल रही थी स्नेह का अंकुर  
किस्में बुन रहे थे पटकथा  
किसी सुनहरे भविष्य की।

जो श्रृंगार था निराकार  
क्रोध और शंका  
स्थिर नहीं।  
आज उभर गया निभाकर  
अपनी सारी मर्यादा को।

अरे! ओ दयामयी मानवी मेरी  
कैसे तूने त्यागमय हो अपनाया  
कितना वैभवशाली धैर्य तेरा  
अकिंचन जग में तुमने दिया सहारा  
ओ विराट साम्राज्ञी मेरी  
जड़ जीवन में भी चेतन भर दे।

निर्निमेष हो तुमने पल भर में  
समर्पित किया आहुति सा जीवन  
जीवन यज्ञ का यह आयोजन  
करके, ओ सृष्टि की कल्याणी!  
पा लिया तुमने श्रद्धा का सामीप्य।  
न मैं मनु हूँ न ही मनुज  
एक विकार ग्रस्त उद्भ्रान्त चेतना  
तुमने ही उचित लक्ष्य ठहराया।

प्रकृतिमेल डेस्क

हम सब चाहते हैं कि हमारी बगियां हमेशा फूलों से रोशन रहे। हमारी इसी इच्छा को पूरा करता है सदाबहार का पौधा। सदाबहार आसानी से उगाया जा सकने वाला पौधा है। जो हर मौसम फूलों से भरा रहता है। मार्च से अप्रैल के समय लगाया जा सकने वाला यह पौधा धूप में रहना पसंद करता है। पानी सीमित ताकि पानी कर ठहराव न हो। सदाबहार औषधिय गुणों से भरपूर पौधा है। सदाबहार में हमारे शरीर की कई गंभीर समस्याओं को खत्म करने के लिए गुण मौजूद होते हैं। हमारे शरीर में वात और कफ को सदाबहार पत्तियां दूर करती हैं। सदाबहार गले के संक्रमण में बहुत लाभकारी होता है। इसकी पत्तियां गले की खराश मिटाने में लाभकारी है।

- शरीर की इम्युनिटी बढ़ाने में भी सदाबहार की पत्तियों में पाया जाने वाला रासायन बहुत लाभकारी होता है। ब्लड प्रेशर में भी सदाबहार की पत्तियां बहुत लाभकारी होती हैं। इसकी जड़ भी रक्तचाप के नियंत्रण के लिए प्रयोग में लाई जाती है।
- सदाबहार डायबिटीज में अपने गुणकारी और जादुई असर के लिए भी जाना जाता है। इनकी पत्तियों में मौजूद एल्कलॉइड नामक तत्व

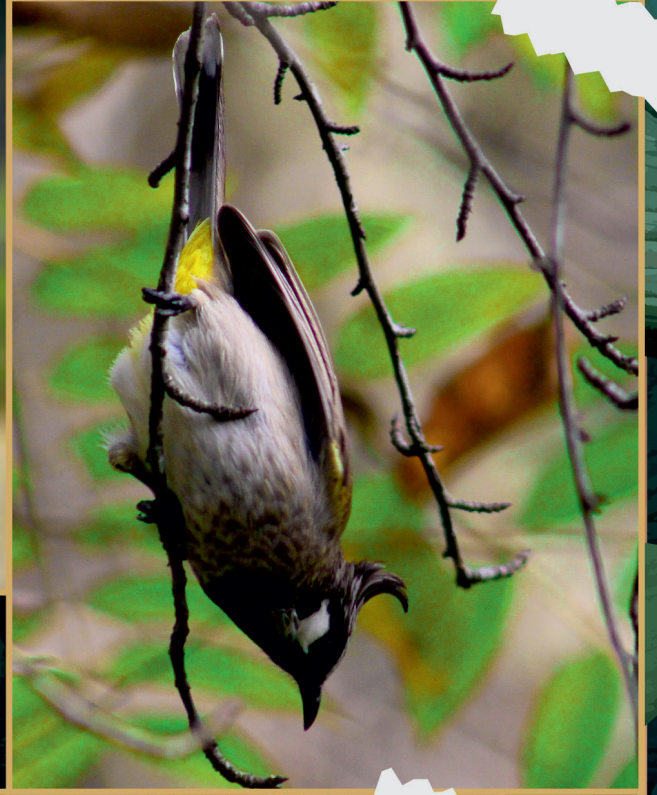


## हरदम बहार सदाबहार

- शरीर में इंसुलिन के निर्माण में सहयोगी होता है। इसकी पत्तियों का रस डायबिटीज के मरीजों के लिए लाभकारी है। इसकी पत्तियों में मौजूद रस शरीर में इंसुलिन निर्माण को बढ़ाता है।
- कैंसर को नियंत्रित करने का गुण भी इसमें पाया जाता है।
- सदाबहार त्वचा से जुड़ी समस्याओं में भी लाभप्रद है।
- खुजली, इन्फेक्शन आदि में सदाबहार की पत्तियां पीसकर लेप लगाने से बहुत लाभ मिलता है।
- किडनी स्टोन में भी सदाबहार की पत्तियों का पानी उबाल कर पीने से लाभ मिलता है।
- सदाबहार एक परफेक्ट पौधा है हर किसी के घर की शोभा बढ़ाने के लिए।



## प्रकृति के रंग



नाम: सृजन

पता : नौलखा, जिला मण्डी, हिमाचल प्रदेश



' ज्ञान स्व रसायन  
मण्डल को अपनी  
पूर्णता का होता है  
उसी के अनुसार वह  
अपनी स्वाभाविक यात्रा  
करता है, बाह्य जगत  
से समाज द्वारा बनाये  
गए वसूलों को जाना  
जा सकता है स्वप्रकृति  
ज्ञान को नहीं। '

'अशोक मानव '



स्थापित 1948

74 वर्षों का विश्वास

# लाला जुगल किशोर गोटे वाले

परिधान वही जो  
व्यक्तित्व को निखार दे



55 अमीनाबाद पार्क, लखनऊ। सम्पर्क: 9935329775

# दुर्गा आटो सेल्स

सेवा ऐसी जो पसीना न बहने दे

Aurhorised Dealer for Mahindra Tractors, Farm Equipments & Spare Parts

Mahindra  
Rise.

MAHINDRA TRACTORS  
Technology se tarakki

नई महिंद्रा XP PLUS सीरीज़

श्रेणी में पहली बार

माइलेज शानदार

पावर दमदार



✉ durgaautosale2000@gmail.com ☎ 9919528830 ☎ 0545-4242216

📍 इलाहाबाद-जौनपुर रोड, मदली शहर, जौनपुर, उ. प्र. ।